अलादीन का
जादुई चिराग



अलादीन का जादुई चिराग

('द थाउजेंड नाइट्स' का हिन्दी रूपांतर)

रूपांतरकार एवं संपादन

सजल शर्मा

चित्रांकन

शंकर नायक

प्रकाशक

जगदम्बा बुक हाउस

6/49, गली नं॰ 5, नाले के पास

विश्वास नगर, दिल्ली-110032

प्रकाशक : जगदम्बा बुक हाउस
6/49, गली नं॰ 5, नाले के पास
विश्वास नगर, दिल्ली-110032

मूल्य : 175.00 रुपये

संस्करण : सन् 2002

आवरण : एस॰ के॰ ग्राफिक्स, दिल्ली-110032

शब्द-संयोजन : एस॰ के॰ कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110032

मुद्रक : एस॰ एन॰ प्रिंटर्स, दिल्ली-110032

अनुक्रम

पहला भाग

अलादीन का जादुई चिराग

बहुत पुरानी बात है। किसी समय अफगानिस्तान के एक छोटे से गांव में, मुस्तफा नाम का एक गरीब आदमी रहता था। धन के अभाव में उसका जीवन बड़ी कठिनाई से व्यतीत हो रहा था। उसका परिवार तीन सदस्यों का था। स्वयं मुस्तफा, उसकी पत्नी तथा उनका एकमात्र बेटा। जिसका नाम उन्होंने बड़े प्यार से 'अलादीन' रखा था।

मुस्तफा बहुत गरीब था। जैसे-तैसे वह लोगों के कपड़े सी-सी कर अपना तथा अपने परिवार का पेट पालता, क्योंकि लोगों के कपड़े सीना ही उसका एकमात्र रोजगार था।

मुस्तफा का चूंकि एक ही बेटा था, अतः वह अपने बेटे को पढ़ा-लिखाकर एक बड़ा आदमी बनाना चाहता था। उसकी इच्छा यही थी कि उसका बेटा पढ़-लिखकर बड़ा आदमी बने और उसका नाम रोशन करे, परंतु अलादीन की पढ़ाई-लिखाई में कोई रुचि नहीं थी। किताबों से तो उसे सख्त नफरत थी। वह मनमौजी था। उसे न तो अपने पिता की भावनाओं की चिंता थी और न ही अपने भविष्य की। उसका सारा दिन खेल-कूद में ही व्यतीत होता था।

मुस्तफा को हर समय अलादीन की ही चिंता बनी रहती। मुस्तफा तरह-तरह से अलादीन को समझाने की कोशिश करता, परंतु अलादीन तो मानो चिकना घड़ा था। मुस्तफा की किसी भी बात का उस पर कोई असर नहीं होता। अलादीन को समझाने का अपना हर संभव प्रयास करने के बाद मुस्तफा बहुत निराश हो गया। चूंकि वह लोगों के कपड़े सी-सी कर अपना गुजारा करता था, अतः हारकर मुस्तफा ने अलादीन को भी दर्जी का कार्य सिखाने का निश्चय किया। उसने अलादीन से इस बारे मे बात की, परतु अलादीन ने दर्जी का काम सीखने से साफ इनकार कर दिया।

अलादीन का इनकार सुनकर मुस्तफा और भी हताश हो गया। वह बेचारा यह सोचकर दिन-रात इसी चिंता में घुला जा रहा था कि उसकी मौत के बाद

अलादीन का क्या होगा? यह बात-मुस्तफा को अंदर-ही-अंदर खाए जा रही थी।

अलादीन की चिंता में घुलता हुआ मुस्तफा एक दिन बीमार पड़ गया। काफी इलाज कराने के बाद भी उसकी हालत में कोई सुधार न हुआ। उसकी बीमारी दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही चली गई और एक दिन मुस्तफा अपने बेटे का गम सीने में दबाए हुए ही इस दुनिया से कूच कर गया। अब अलादीन अपनी मां के साथ इस दुनिया में अकेला रह गया था।

समय गुजरता रहा और समय गुजरने के साथ-साथ अलादीन की उम्र भी बढ़ती रही। इन्हीं हालातों में कुछ समय बाद अलादीन जवान हो गया, परंतु जवान होने के बाद भी उसके स्वभाव में कोई फर्क नहीं आया। अपनी जिम्मेदारियों की परवाह किए बिना, वह अब भी बच्चों के साथ खेल-कूद में ही व्यस्त रहता। अलादीन के लापरवाही भरे स्वभाव पर उसकी मां बहुत कुढ़ा करती थी, परंतु एकमात्र बेटे की ममता और स्नेह से बंधी होने के कारण वह कभी अलादीन पर दबाव नहीं डाल पाती थी।

एक दिन अलादीन बस्ती के बाहर, अपने कुछ दोस्तों के साथ कंचे खेल रहा था। वह इस खेल में निरंतर हार रहा था, इसलिए वह नाराज था और अपने दोस्तों से कह रहा था—"मेरे ऊपर हंसो मत, मैं आखिर में जरूर जीतूंगा।"

अचानक वहां पर एक सौदागर के समान लगने वाला व्यक्ति आया। उसने सिर पर लाल पगड़ी बांधी हुई थी तथा हाथ में एक थैला लटका रखा था। पास आकर वह अलादीन से बोला—"क्या तुम्हारा ही नाम अलादीन है?"

एक अजनबी के मुख से अपना नाम सुनकर अलादीन पहले तो चौंका, फिर बोला—"जी हां! मेरा ही नाम अलादीन है, परंतु आप कौन हैं? मैंने तो आपको पहले कभी नहीं देखा और न ही मैं आपको जानता हूं। फिर आप मेरा नाम कैसे जानते हैं?"

"तुम मुझे नहीं जानते बेटे, मगर मैं तुम्हें अच्छी तरह से जानता हूं।" सौदागर के समान लगने वाला वह व्यक्ति बड़े प्यार से बोला—"क्योंकि मैं तुमसे उसी समय से दूर हूं, जब तुम छोटे बच्चे थे। तुम्हारा पिता मुस्तफा भी तब जीवित था।"

अलादीन को बहुत आश्चर्य हुआ।

"परंतु आप हैं कौन? आपका नाम क्या है?"

"मैं तुम्हारा चाचा हूं बेटे।" वह व्यक्ति बोला।



"बाहर देश में रहता हूं। तुम्हारे पिता की मौत की खबर सुनकर मुझे बहुत दुःख पहुंचा है, इसलिए तुमसे मिलने मैं यहां चला आया हूं।"

उसके बाद वह व्यक्ति अलादीन को गले से लगाकर फूट-फूटकर रोने लगा और रोते-रोते एक ही बात कह रहा था—"हाय! मेरे भाई, तुम कितने अच्छे थे। मैं बदनसीब अंतिम समय में तुम्हारा मुंह भी न देख सका और न ही तुम्हारी कोई मदद कर सका। मुझे माफ कर देना भाई।"

फिर उसने अलादीन का माथा चूमते हुए कहा—"बेटे, अब तो तुम्हीं मेरे भाई की अंतिम निशानी हो। मेरे भाई मुस्तफा की जीती-जागती तस्वीर हो। आज से तुम्हीं मेरे एकमात्र बेटे हो।"

अलादीन उस सौदागर का प्यार और स्नेह पाकर, एक पल के लिए कहीं खो-सा गया। उसे विश्वास हो चला था कि यह सौदागर वास्तव में उसका चाचा ही है। वह भी उसके साथ रोकर अपने पिता की मौत का दुःख हल्का करने लगा।

सौदागर कुछ क्षण चुप रहा, फिर बोला—"अब मैं जा रहा हूं बेटे, मुझे एक बहुत जरूरी काम है। जिसके कारण मैं अब यहां और नहीं रुक सकता।"

यह कहकर सौदागर ने अपने थैले में से एक छोटी थैली निकाली और अलादीन को देता हुआ बोला—"ये कुछ अशर्फियां हैं, इन्हें तुम अपने पास रख लो। घर के खर्चे मे काम आएंगी और घर जाकर अपनी अम्मी से मेरा सलाम बोल देना। मैं तुम्हें कल इसी समय और इसी स्थान पर मिलूंगा, अब मैं जाता हूं।"

इतना कहकर वह सौदागर जिधर से आया था, उसी तरफ चला गया।

अलादीन आश्चर्य तथा खुशी से उसे जाता हुआ देखता रहा। फिर वह घर लौट गया।

घर में उसकी मां चरखा कात रही थी। वह मां के पास आया और बोला—"मां, आज मेरी मुलाकात चाचा जान से हुई थी। उन्होंने मुझे घर खर्च के लिए ये अशर्फियां भी दी हैं।"

"चाचा? कौन चाचा?" उसकी मां आश्चर्य से बोली—"तेरा तो कोई चाचा नहीं है बेटा। एक था भी तो वह तेरे पिता के कहे अनुसार बहुत पहले ही मर चुका है। फिर ये तेरा कौन-सा चाचा है?"

यह सुनकर अलादीन को आश्चर्य हुआ। उसने कथित चाचा के साथ हुई सभी बाते अपनी मां को बताई और बोला—"मां अगर वह सौदागर मेरा

चाचा न होता, तो भला मेरे पिताजी को याद करके इतना क्यों रोता? और मुझे इतनी अशर्फियां यूं ही मुफ्त में क्यों देता? वह जरूर मेरे पिता का भाई है।"

"हो सकता है कि तुम उसके विषय मे कुछ जानती न हों?"

"हां, यह हो सकता है, क्योकि तुम्हारे पिता ने मुझसे कभी तुम्हारे इस चाचा का जिक्र नहीं किया।" मां ने कहा।

"ऐसा ही हुआ होगा मां।" अलादीन ने अपनी मां को समझाया—"तुम्हारी और पिताजी की शादी से पहले पिताजी का कोई भाई रहा होगा तथा पिताजी के साथ कोई लड़ाई या झगड़ा होने के कारण वह घर छोड़कर चला गया होगा। पिताजी की मौत की खवर ने उन्हें वेचैन कर दिया और वे हमसे मिलने यहां चले आए।"

यह सुनकर अलादीन की मां ने कहा—"तुम्हारी बातें बिल्कुल सही लगती हैं बेटा। अगर ऐसा है तो तुम कल उनसे अवश्य मिलना और उन्हें घर ले आना।"

फिर उसकी मा चरखा कातने में लग गई।

उसके बाद अलादीन ने उन अशर्फियों में से कुछ अशर्फियां निकाली और घर का समान खरीदने के लिए बाजार चला गया। उस दिन अलादीन बहुत खुश था, क्योंकि मुफ्त की ढेरों अशर्फियां जो उसके हाथ लग गई थीं। वह उन अशर्फियों को देखकर खुशी से फूला नहीं समा रहा था।

नकली चाचा

अगले दिन सही समय पर अलादीन उस स्थान पर पहुंच गया, जहां कल उसे सौदागर मिला था। अलादीन उसका इंतजार करने लगा। कुछ देर बाद वह सौदागर भी वहां आ गया। आते ही उसने अपने थैले में से मिठाई निकालकर अलादीन को दी और बोला—"क्यों बेटे, कल अपनी अम्मी से मेरा सलाम कहा था न?"

"जी हां चाचा जान।" अलादीन मिठाई खाते हुए बोला—"मां ने आपको याद किया है और घर पर बुलाया है।"

सौदागर ने अपने थैले में से और मिठाई निकालकर अलादीन को खाने को दी तथा बोला—"बेटे, मैं तो कब से तुम्हारी अम्मी से मिलने की सोच रहा हूं। मैं आज शाम को भाभी जान से भेंट करने के लिए तुम्हारे घर आऊंगा। भाभी जान से कह देना कि वह मेरे लिए भी खाना बनाकर रखें। मैं शाम को ठीक समय पर तुम्हारे घर पहुंच जाऊंगा।"

इतना कहने के बाद वह सौदागर रुका नहीं तथा उसी क्षण वहां से चला गया। अलादीन भी अपने घर लौट आया। घर आकर उसने सारी बातें अपनी मां को बताई और कहा कि चाचा जान आज शाम को यहां आएंगे। उनके लिए भी खाना बनाना। अलादीन की मां खुशी-खुशी खाना बनाने में लग गई। उसने अलादीन के चाचा के लिए अच्छे खाने का इन्तजाम किया था।

शाम होते ही ठीक समय पर अलादीन का चाचा वहां आ पहुंचा। आते ही उसने अलादीन के पिता के विषय में बाते करनी शुरू कर दीं और अपने भाई मुस्तफा को याद करके रोने लगा। अलादीन की मां भी अपने पति को याद करके आंसू बहाने लगी। इस तरह बाते कहते-सुनते थोड़ी देर बाद खाने का समय हो गया।

अलादीन की मां ने बड़े प्रेम से खाना परोसा। खाना देखकर अलादीन का चाचा बोला—"अपने भाई की मौत की खबर से खाने का मन नहीं हो रहा।"

अलादीन और उसकी मां ने उसे खाना खाने को मनाया। फिर तीनों मिलकर खाना खाने बैठ गए। थोड़ी देर में तीनों खाने से निबट गए। खाना समाप्त करने के बाद इधर-उधर की बातें की जाने लगीं।

फिर रात होते ही तीनों आराम करने लगे। तब सौदागर ने अलादीन से कहा—"मैंने सुना है कि तुम कोई काम धंधा नहीं करते तथा पूरे दिन बच्चों के साथ खेल-कूद में व्यस्त रहते हो। पढ़ाई-लिखाई की तरफ भी तुम कोई ध्यान नहीं देते। मुझे ये जानकर बहुत दुःख पहुंचा है। तुम्हें कोई काम अवश्य करना चाहिए। तुम्हारी लापरवाही से मेरे भाई मुस्तफा की आत्मा बहुत दुःख महसूस करती होगी।"

"अगर आप इसे किसी काम-धंधे में लगा दें, तो ये आपकी हम पर बड़ी कृपा होगी।" अलादीन की मां दुःखी स्वर में बोली।

"मैं भी कुछ ऐसा ही सोच रहा हूं।" अलादीन का चाचा बोला—"मैं सोच रहा हूं कि इसी गांव में इसकी कहीं एक दुकान खुलवा दूं। दूसरे देशों में मेरा रेशम का व्यापार है। मैं इसे वहां से नए-नए रेशमी वस्त्र भेज दिया करूंगा, जिन्हें यह यहां बेचकर चौगुनी रकम कमाया करेगा। ये यहां पर दुकानदारी करता रहेगा, मैं समय-समय पर इसे रेशमी वस्त्र भेजता रहूंगा।"

यह सुनकर अलादीन की मां बहुत खुश हुई। वह सोचने लगी कि खुदा अब हम पर कृपा करने लगा है। अब अलादीन का भविष्य भी बन जाएगा तथा वह आवारगी से भी बच जाएगा।

उस रात सौदागर वहीं रहा। वह अलादीन तथा उसकी मां के दिल में इस प्रकार उतर गया कि वे दोनों उसे अपने घर के सदस्य जैसा ही समझने लगे थे। अगले दिन उस सौदागर ने उनके घर की रूप-रेखा ही बदल डाली। घर की जरूरत का हर सामान वह स्वयं बाजार से खरीद कर लाया तथा बड़े करीने के साथ उसे घर में सजा दिया। राशन इत्यादि भी वह बाजार से ले आया था।

अलादीन को एक स्कूल में भर्ती कराकर, उसी दिन स्कूल पढ़ने के लिए भेज दिया और अलादीन की मां से बोला—"बिना पढ़ाई-लिखाई के व्यापार नहीं किया जाता, अतः अलादीन का पढ़ना-लिखना बहुत आवश्यक है।"

अब सौदागर अलादीन का चाचा बनकर उन्हीं के घर में रहने लगा। अलादीन तथा उसकी मां सौदागर को अपने घर का सदस्य समझने लगे थे। अलादीन ने पढ़ाई करनी आरंभ कर दी थी। अब वह प्रतिदिन स्कूल जाया करता। अलादीन की मां उस सौदागर से बहुत खुश थी, क्योंकि वही घर का सारा खर्च वहन किया करता था। इसी प्रकार समय बीतता रहा और कुछ महीने गुजर गए। अलादीन सौदागर को अपने पिता समान समझने लगा था।

एक दिन उस सौदागर ने अलादीन को अपने पास बुलाया और

कहा—"बेटे, हम घर में रहते-रहते ऊब चुके हैं। क्यों न आज हम दोनों जंगल की सैर करने चलें?"

उस दिन अलादीन के स्कूल की छुट्टी थी। अलादीन को अपने चाचा का सुझाव अच्छा लगा। वह बोला—"हां-हां, क्यों नहीं चाचा जान?"

अलादीन अपने चाचा के साथ जंगल की सैर करने निकल पड़ा। चलते-चलते वे दोनों घने जंगल में पहुंच गए। वहां जंगल घना और डरावना था। तभी उस सौदागर ने अपनी जेब से एक कागज निकाला। उसे खोला और बहुत ध्यान से देखने लगा। अलादीन ने देखा कि उस कागज पर कुछ आड़ी-तिरछी लकीरें खिंची हुई थीं। सौदागर बड़े ध्यान से उन लकीरों को देख रहा था। अलादीन चुपचाप खड़ा रहा। कुछ क्षणों तक सौदागर कागज का निरीक्षण करता रहा, फिर अचानक खुशी से चिल्लाने लगा।

"मिल गया...मिल गया...।"

अलादीन अपने चाचा की इस हरकत से आश्चर्यचकित रह गया। कदाचित वह समझ न पाया था कि वह कागज कैसा है तथा उसके चाचा को क्या मिल गया है? आश्चर्यचकित अलादीन ने अपने चाचा से पूछा—"क्या हुआ चाचा जान! आपको यहां क्या मिल गया?"

यह सुनकर सौदागर खुशी से उछलता हुआ बोला—"बेटे, आज हमें एक ऐसी वस्तु मिल गई है, जिसके बल पर हम सारी दुनिया में सबसे बड़े आदमी बन सकते है। समूची दुनिया हमारे चरणों में झुक जाएगी।"

अलादीन अभी तक कुछ न समझ पाया था। उसे अपने चाचा की हरकत रहस्यमय लग रही थी। असमंजस में फंसे हुए उसने पूछा—"हम दुनिया के सबसे बड़े आदमी बन जाएंगे? परंतु कैसे?"

"बस बेटा, अब तुम मेरा चमत्कार देखते जाओ।"

यह कहकर सौदागर ने अपनी जेब से कागज की एक पुड़िया निकाली और उसे खोला। पुडिया में लाल रंग का पाउडर था। उसने वह लाल पाउडर हवा में उछाल दिया। लाल रंग के पाउडर के हवा में उछलते ही एक भीषण धमाका हुआ और उनके सामने की जमीन एक घरघराहट के साथ दो भागों में फट गई। अब जमीन के अदर एक छोटा-सा लोहे का दरवाजा स्पष्ट नजर आ रहा था। अलादीन हैरत भरे अंदाज में अपने चाचा का अजीबो-गरीब चमत्कार देख रहा था। वह अभी यह समझ न पाया था कि ये क्या हो रहा है?

सौदागर ने पुनः अपनी जेब में हाथ डाला और जेब से एक अंगूठी

निकाली। अंगूठी अलादीन को देता हुआ वह बोला—"लो बेटे, यह अंगूठी पहन लो और खुदा को याद करके, इस द्वार में उतर जाओ। यह द्वार पार करने के बाद तुम्हें एक खूबसूरत बाग मिलेगा, उस बाग में एक विशाल मंदिर हैं, तुम उस मंदिर में बेहिचक प्रवेश कर जाना। अंदर तुम्हें एक चिराग जलता हुआ नजर आएगा। तुम उस चिराग को बुझा देना तथा उसे अपनी जेब में रखकर तुरंत वापस आ जाना। यह अंगूठी तुम्हारी रक्षा करेगी।"

उस सुरंग के अंदर जाने की बात सुनकर अलादीन घबरा गया। उसने सौदागर से मना कर दिया, परंतु सौदागर के अधिक दबाव डालने पर आखिर उसे तैयार होना पड़ा। उसने सौदागर द्वारा दी अंगूठी पहनी और हिम्मत बांधकर जमीन में बनी सुरंग में प्रवेश कर गया। सुरंग बहुत अंधेरी थी। अलादीन अंधेरे में आगे बढ़ने से घबरा रहा था, परंतु सौदागर की अंगूठी अंधेरे में प्रकाश फैला रही थी। जिससे अलादीन को आगे बढ़ने में सहूलियत हो रही थी। अलादीन सुरंग में बढ़ता गया, बढ़ता ही गया। सुरंग पार करने के बाद अलादीन ने स्वयं को एक शानदार एवं खूबसूरत बाग में खड़ा पाया। उस बाग में नाना प्रकार के वृक्ष लगे थे, जो फल-फूलों से लदे हुए थे। वहां पर चारों ओर रंगीन पत्थर बिखरे पड़े थे जो चमक रहे थे। कुल मिलाकर उसके आस-पास का दृश्य बहुत सुंदर था। अलादीन कुछ पलों तक बाग की सुंदरता निहारता रहा। बाग में दिन जैसा प्रकाश फैला हुआ था।

अलादीन को वह विशाल मंदिर भी नजर आया, जो सौदागर ने बताया था। उसने बहुत से रंगीन पत्थर अपनी जेबों में भर लिए।

तत्पश्चात् वह भारी कदमों से मंदिर की ओर बढ़ा। मंदिर में प्रवेश करने के बाद उसने अंदर नजर घुमाई। अंदर उसे एक चिराग जलता हुआ नजर आ गया। जिसके प्रकाश में सारा कमरा प्रकाशमान हो रहा था। चिराग पर नजर पड़ते ही अलादीन के कानों में सौदागर के कहे वे शब्द गूंज उठे—"उस चिराग को बुझाकर अपनी जेब में रखना तथा तुरंत वहां से भाग आना। अगर तुम देर करोगे तो तुम वहीं दफन हो जाओगे।"

अलादीन ने तत्काल फुर्ती के साथ, जलते चिराग को फूंक मारकर बुझाया तथा उसे अपनी जेब के हवाले कर, बाहर की तरफ दौड़ पड़ा। कुछ ही क्षणोंपरांत वह मुख्य द्वार पर था।

सुरंग के बाहर उसका चाचा बना सौदागर बेचैनी से अलादीन की प्रतीक्षा कर रहा था। अलादीन को आता देखकर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा।

"शाबाश बेटा।" सौदागर खुशी से उछला—"लाओ, चिराग मुझे दे दो।"

"पहले मुझे बाहर तो निकालिए। मेरा यहां दम घुट रहा है।"

सुरंग में सचमुच अलादीन का दम घुटने लगा था। सांस लेने में वह बड़ी कठिनाई महसूस कर रहा था।

"अरे, पहले मुझे चिराग तो दो।" सौदागर बेचैनी से बोला—"मैं तुम्हें बाहर निकाल ही लूंगा।"

अपने चाचा का मकसद अलादीन की समझ में नहीं आया। वह समझ नहीं पा रहा था कि उसके चाचा उसे बाहर क्यों नहीं निकाल रहे हैं? अलादीन के मन में संदेह का कीड़ा कुलबुलाने लगा। वह समझ गया कि हो-न-हो इस चिराग में अवश्य ही कोई रहस्य है। वर्ना उसके चाचा अब तक उसे बाहर निकाल चुके होते। अलादीन ने पुनः सौदागर से अनुरोध किया, परंतु सौदागर ने वही रटा-रटाया जवाब दिया कि पहले मुझे चिराग दो, तभी मैं तुम्हें बाहर निकालूंगा। अब अलादीन का संदेह पक्का हो गया। वह समझ गया कि इस चिराग में कोई-न-कोई रहस्य अवश्य है। उसने निश्चय किया कि वह चिराग पहले नहीं देगा। उसे सौदागर की नीयत पर भी शक हो चुका था, अतः वह दो-टूक स्वर में बोला—"अब मैं आपको ये चिराग तभी दूंगा, जब आप मुझे सुरक्षित बाहर निकालेंगे, वर्ना मैं यह चिराग आपको कभी नहीं दूंगा।"

यह सुनकर सौदागर बुरी तरह झुंझला गया। क्रोध से उसकी आंखें लाल हो गईं। वह दांत पीसता हुआ बोला—"अरे मूर्ख, चिराग मुझे दे दे, वर्ना सुरंग ही तेरी कब्र बन जाएगी।"

"कभी नहीं।" अलादीन तेज एवं सपाट स्वर में बोला—"जब तक आप मुझे बाहर नहीं निकालेंगे, चिराग आपको नहीं मिलेगा।"

अब तो सौदागर और भी ज्यादा झुंझला गया था। क्रोध के कारण वह कांपने लगा और दांत पीसता हुआ बोला—"बस, बहुत हो गया। अब तू सदा के लिए इसी सुरंग में दफन हो जाएगा।"

इतना कहने के बाद सौदागर ने मंत्र फूंकना आरंभ कर दिया। मंत्र को फूंकना था कि सुरंग का द्वार बंद होने लगा। यह देखकर अलादीन बुरी तरह घबरा गया। वह चाचा जान, चाचा जान की आवाजें देकर सौदागर को पुकारने लगा, परंतु कोई लाभ न हुआ और सुरंग का द्वार पूरी तरह बंद हो गया। अलादीन अब सचमुच सुरंग में दफन हो चुका था। संपूर्ण सुरंग में अंधकार-ही-अंधकार विद्यमान था।

गुफा से मुक्ति

अंधेरी गुफा में कैद अलादीन अपने धोखेबाज चाचा के विषय में सोच रहा था। वह सोच रहा था कि हो-न-हो, उसका चाचा असल में उसका चाचा नहीं होगा। अगर वह सौदागर उसका सगा चाचा होता तो वह कदापि उसे इस गुफा में कैद न करता। उसने सोचा कि अब तो शायद यहीं घुट-घुटकर मरना पड़ेगा। ऐसे ही विचारों में गुम वह बाग में आ गया। बाग की सुंदरता पहले की तरह विद्यमान थी एवं उसमें लगे फल-फूल भी पहले की ही भांति अपनी सुंदरता बिखेर रहे थे।

अलादीन एक पेड़ के नीचे बैठ गया। वह बहुत दुःखी था। सोच रहा था कि यहां जाने कब मौत आ जाए। उसी अवस्था में बैठे-बैठे उसे काफी समय बीत गया। अब उसे भूख भी लगने लगी थी। अलादीन ने एक पेड़ से फल तोड़कर खाए एवं सामने बह रही नदी का ठंडा पानी पिया। मीठे फल खाकर तथा ठंडा पानी पीकर अलादीन ने थोड़ी राहत महसूस की।

अलादीन को गुफा में कैद हुए कई दिन बीत गए। वह पेड़ से फल तोड़कर खाता और ठंडा पानी पीता। उसी तरह वह अपना पेट भर रहा था, परंतु फल खा लेने से ही भला क्या होता है? अलादीन दिन-प्रतिदिन कमजोर होता चला गया। दिन भर पत्थरों पर बैठकर वह अपने भाग्य को रोता। उसे अपनी मां की बहुत याद सताती थी। वह सोचा करता कि उसके घर न पहुंचने पर उसकी मां कितनी परेशान होगी। यह सोचकर वह और भी परेशान हो उठता, परंतु वह बेचारा कर भी क्या सकता था? गुफा से बाहर निकलने का द्वार तो बंद हो चुका था।

अलादीन का चाचा बनकर, अलादीन को धोखे से गुफा में कैद करने वाला वह सौदागर कोई और नहीं, बल्कि अफ्रीका का एक खतरनाक जादूगर 'सेनसन' था। सेनसन ने अपने जादू के बल पर पता लगाया था कि अफगानिस्तान के जंगल में एक स्थान पर जमीन के अंदर, एक जादुई चिराग छुपा है। उस चिराग के जिन्न से दुनिया का हर असंभव कार्य चुटकियों में पूरा कराया जा सकता है, परंतु उस चिराग को अफगानिस्तान के उस गांव में रहने वाला कोई व्यक्ति ही निकाल सकता है। अतः सेनसन की नजर

अलादीन पर पड़ी और उसने भेष बदलकर अलादीन व उसकी मां को अपने जाल में फांस लिया। उसकी योजना यह थी कि चिराग निकलवाकर, उसे उसी गुफा में बंद कर, वहां से भाग निकलेगा, परंतु अलादीन की हठ के कारण उसकी योजना सफल न हो सकी। मजबूरन उसे अलादीन को चिराग सहित गुफा में बंद करना पड़ा एवं स्वयं वापस अफ्रीका भाग गया।

उधर अलादीन एक पेड़ के नीचे बैठा अपने जीवन के विषय में सोच रहा था। वह क्या था और क्या हो गया? उसने सोचा कि यूं घुट-घुटकर मरने से तो अच्छा है कि मैं यहां से बाहर निकलने का प्रयास करूं। हो सकता है कि उसे कोई द्वार या द्वार को खोलने का कोई रास्ता ही नजर आ जाए?

यह सोचकर अलादीन गुफा में इधर-उधर भटकने लगा। बाग के बाद की गुफा में उसे अंधकार-सा दिखाई दिया।

मन में आशा की किरण लिए अलादीन उस अंधकार में प्रवेश कर गया। उस गुफा में अंदर जाने के बाद वह भटक गया। गुफा में घनघोर अंधेरा था। अलादीन अंधेरे के कारण इधर-उधर गिर भी पड़ता था।

अचानक एक घटना घटी। हुआ यूं कि अलादीन एक स्थान पर ठोकर खाकर गिर पड़ा। सौदागर की अंगूठी, जो अलादीन ने अभी तक पहनी हुई थी, एक पत्थर से टकरा गई अंगूठी के पत्थर से टकराते ही एक धमाका हुआ तथा वहां एक भयानक शक्ल का जिन्न प्रकट हुआ। प्रकट होते ही उसने तेज स्वर में कहा—"मैं आपका गुलाम हूं मेरे आका। जिसके हाथ में यह अंगूठी रहती है, मैं उसका गुलाम बन जाता हूं। अब आप मेरे मालिक हैं और मैं आपका गुलाम। मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं आपके लिए क्या कर सकता हूं?"

अलादीन उसकी भयानक शक्ल एवं भयानक आवाज सुनकर बुरी तरह डर गया। डर के मारे उसने आंखें बंद कर लीं और थर-थर कांपने लगा, परंतु फिर भी उसने साहस से काम लिया और डरते-डरते जिन्न से बोला—"मुझे जल्दी से इस गुफा से बाहर निकालो, यहां मेरा दम घुट रहा है।"

अलादीन के कहने की देर थी, अगले ही पल उसने स्वयं को उसी स्थान पर पाया, जहां वह अपने धोखेबाज चाचा के साथ आया था। अब वहां किसी सुरंग या गुफा का आभास भी न था।

अलादीन हैरत भरे अंदाज में अपने आस-पास देखने लगा। उसे विश्वास ही नहीं हो पा रहा था कि वह गुफा की कैद से मुक्ति पा चुका है। वह जिन्न भी उसे कहीं नजर नहीं आया। शायद वह अपना काम करके जा चुका था।

यह सोचता अलादीन कुछ क्षणो तक यूं ही खड़ा रहा। जब उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि वह सचमुच गुफा की कैद से मुक्ति पा चुका है तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। उसने खुदा का लाख-लाख शुक्र अदा किया और तेजी से अपने घर की ओर चल पड़ा। वह रहस्यमय चिराग अब भी उसके जेब में पड़ा था।

अलादीन के घर पहुंचते ही उसकी मां ने उसे अपने अंक में समेट लिया। उसकी मां की रुलाई फूट पड़ी। सिसकते हुए मां ने पूछा—"इतने दिनों तक तू कहां था बेटा?"

अपनी मां से मिलकर अलादीन भी रोने लगा। उसने अपनी मां को सारी आप-बीती सुना दी। उसकी मां अलादीन के चाचा के विषय में सुनकर हैरान रह गई। अलादीन ने अपनी मां को वह चिराग और रंगीन पत्थर भी दिखाए। अलादीन को जोरों की भूख लगी थी। वह मां से बोला तो उसकी मां ने कहा—"बेटा, इतने दिनों में राशन का सभी समान समाप्त हो गया है?" अलादीन हौले-से मुस्कराया और चिराग अपनी मां को देता हुआ बोला—"लो मां, यह चिराग पीतल का लगता है। इसे बाजार में ले जाकर बेच दो और खाने को कुछ समान ले आओ। मुझे बड़े जोरों की भूख लगी है।"

उसकी मां चिराग लेकर बाहर जाने लगी। तभी अलादीन ने पुकारा—"जरा ठहरो मां, पहले मैं इस चिराग को अच्छी तरह साफ करके चमका दूं। इससे इसकी अच्छी कीमत मिल जाएगी।"

अलादीन पर पड़ी और उसने भेष बदलकर अलादीन व उसकी मां को अपने जाल में फांस लिया। उसकी योजना यह थी कि चिराग निकलवाकर, उसे उसी गुफा में बंद कर, वहां से भाग निकलेगा, परंतु अलादीन की हठ के कारण उसकी योजना सफल न हो सकी। मजबूरन उसे अलादीन को चिराग सहित गुफा में बंद करना पड़ा एवं स्वयं वापस अफ्रीका भाग गया।

उधर अलादीन एक पेड़ के नीचे बैठा अपने जीवन के विषय में सोच रहा था। वह क्या था और क्या हो गया? उसने सोचा कि यूं घुट-घुटकर मरने से तो अच्छा है कि मैं यहां से बाहर निकलने का प्रयास करूं। हो सकता है कि उसे कोई द्वार या द्वार को खोलने का कोई रास्ता ही नजर आ जाए?

यह सोचकर अलादीन गुफा में इधर-उधर भटकने लगा। बाग के बाद की गुफा में उसे अधकार-सा दिखाई दिया।

मन में आशा की किरण लिए अलादीन उस अंधकार में प्रवेश कर गया। उस गुफा में अंदर जाने के बाद वह भटक गया। गुफा में घनघोर अंधेरा था। अलादीन अंधेरे के कारण इधर-उधर गिर भी पड़ता था।

अचानक एक घटना घटी। हुआ यूं कि अलादीन एक स्थान पर ठोकर खाकर गिर पड़ा। सौदागर की अंगूठी, जो अलादीन ने अभी तक पहनी हुई थी, एक पत्थर से टकरा गई अंगूठी के पत्थर से टकराते ही एक धमाका हुआ तथा वहां एक भयानक शक्ल का जिन्न प्रकट हुआ। प्रकट होते ही उसने तेज स्वर में कहा—"मैं आपका गुलाम हूं मेरे आका। जिसके हाथ में यह अंगूठी रहती है, मैं उसका गुलाम बन जाता हूं। अब आप मेरे मालिक हैं और मैं आपका गुलाम। मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं आपके लिए क्या कर सकता हूं?"

अलादीन उसकी भयानक शक्ल एवं भयानक आवाज सुनकर बुरी तरह डर गया। डर के मारे उसने आंखें बंद कर लीं और थर-थर कांपने लगा, परंतु फिर भी उसने साहस से काम लिया और डरते-डरते जिन्न से बोला—"मुझे जल्दी से इस गुफा से बाहर निकालो, यहां मेरा दम घुट रहा है।"

अलादीन के कहने की देर थी, अगले ही पल उसने स्वयं को उसी स्थान पर पाया, जहां वह अपने धोखेबाज चाचा के साथ आया था। अब वहां किसी सुरंग या गुफा का आभास भी न था।

अलादीन हैरत भरे अंदाज में अपने आस-पास देखने लगा। उसे विश्वास ही नहीं हो पा रहा था कि वह गुफा की कैद से मुक्ति पा चुका है। वह जिन्न भी उसे कहीं नजर नहीं आया। शायद वह अपना काम करके जा चुका था।

यह सोचता अलादीन कुछ क्षणों तक यूं ही खड़ा रहा। जब उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि वह सचमुच गुफा की कैद से मुक्ति पा चुका है तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। उसने खुदा का लाख-लाख शुक्र अदा किया और तेजी से अपने घर की ओर चल पड़ा। वह रहस्यमय चिराग अब भी उसके जेब में पड़ा था।

अलादीन के घर पहुंचते ही उसकी मां ने उसे अपने अंक में समेट लिया। उसकी मां की रुलाई फूट पड़ी। सिसकते हुए मां ने पूछा—"इतने दिनों तक तू कहां था बेटा?"

अपनी मां से मिलकर अलादीन भी रोने लगा। उसने अपनी मां को सारी आप-बीती सुना दी। उसकी मां अलादीन के चाचा के विषय में सुनकर हैरान रह गई। अलादीन ने अपनी मां को वह चिराग और रंगीन पत्थर भी दिखाए। अलादीन को जोरों की भूख लगी थी। वह मां से बोला तो उसकी मां ने कहा—"बेटा, इतने दिनों में राशन का सभी समान समाप्त हो गया है?" अलादीन हौले-से मुस्कराया और चिराग अपनी मां को देता हुआ बोला—"लो मां, यह चिराग पीतल का लगता है। इसे बाजार में ले जाकर बेच दो और खाने को कुछ समान ले आओ। मुझे बड़े जोरों की भूख लगी है।"

उसकी मां चिराग लेकर बाहर जाने लगी। तभी अलादीन ने पुकारा—"जरा ठहरो मां, पहले मैं इस चिराग को अच्छी तरह साफ करके चमका दूं। इससे इसकी अच्छी कीमत मिल जाएगी।"

चिराग का कमाल

अलादीन ने अपनी मां के हाथों से चिराग लिया और उसे रगड़-रगड़कर साफ करने लगा। चिराग को एकदम से चमकाने के लिए अलादीन ने उसे जोरों से रगड़ना आरंभ कर दिया। तभी एक विचित्र घटना हुई।

अचानक एक तेज धमाका हुआ और एक भयानक शक्ल-सूरत का जिन्न अलादीन के सामने प्रकट हुआ। अलादीन की मां जिन्न की भयानक शक्ल देखकर डर के मारे बेहोश हो गई। डर तो अलादीन भी गया था, परंतु वह अपने होश संभाले था। अलादीन के सम्मुख प्रकट होते ही जिन्न ने कहा—"मैं आपका गुलाम हूं मेरे आका। जिसके पास यह चिराग रहता है, मैं उसका गुलाम बन जाता हूं। आप जो भी आज्ञा देंगे, मैं उसे पूरा करूंगा।"

अलादीन ने धैर्य से काम लिया और बोला—"मुझे बड़े जोर की भूख लगी है। मेरे लिए तुरंत अच्छे खाने-पीने का प्रबंध करो।"

यह सुनते ही जिन्न गायब हो गया और जब लौटा तो उसके हाथों में खाने की थालियां थीं। जिन्न सोने-चांदी की थालियों में खाना लाया था। खाना देकर जिन्न गायब हो गया तो अलादीन ने पेट भरकर खाना खाया। पेट-भर खाने के उपरांत वह बैठ गया। तब तक उसकी मां को भी होश आ गया। होश में आने के उपरांत जब उसने खाने-पीने का ऐसा समान देखा तो वह चकित रह गई। आश्चर्य भरे स्वर में उसने अलादीन से पूछा—"बेटा, इतनी जल्दी इतना खाना तू कहां से ले आया?"

"अब हमारी गरीबी के दिन लौट गए मां।" अलादीन खुश होते हुए बोला—"अब तो मात्र तुम्हारी आज्ञा देने की देर होगी। सारा सामान स्वयं आ जाया करेगा।"

अलादीन की मां ने भी डटकर खाना खाया। उसके बाद अलादीन उन थालियों को धोकर, बाजार में बेच आया। उसे उनकी अच्छी कीमत मिली। अलादीन के घर में अब किसी भी वस्तु की कमी न थी। जब भी कोई सामान खत्म होता, अलादीन चिराग घिसता और जिन्न चुटकियों में सारा सामान उपलब्ध करा देता। इस प्रकार उनके दिन बड़े मजे से कट रहे थे। अब उनके पास कोई कमी नहीं थी।



भयानक लड़ाई और शहजादी

अलादीन के पास अब किसी भी चीज की कमी नहीं थी, परंतु एक कमी उसे अवश्य खटकती थी और वह कमी थी एक दुल्हन की। अब वह शादी करना चाहता था, परंतु वह ये समझ नहीं पा रहा था कि वह शादी करे तो किससे करे? उसकी मां भी बहू के लिए तरसने लगी थी। एक दिन वह बोली—"बेटा, खुदा के शुक्र से अब हमारे पास किसी चीज की कमी नहीं रही, पंरतु अब एक बहू की कमी मुझे खटकने लगी है। अगर तू मुझे एक बहू ला दे, तो मुझे बड़ी खुशी होगी।"

"ठीक है मां, अब तू बिल्कुल भी चिंता मत कर।" अलादीन बोला—"वह कमी भी मैं अब अवश्य पूरी करूंगा।"

मां के जाने के बाद अलादीन ने चिराग घिसकर जिन्न को बुलाया, जिन्न तत्काल प्रकट होकर बोला—"क्या हुक्म है मेरे आका। सेवक आपकी सेवा में हाजिर है। आप मुझे हुक्म दे, यदि आप हुक्म देंगे तो मैं इस समूचे अफगानिस्तान को पलटकर रख दूगा।"

यह सुनकर अलादीन बोला—"नहीं सेवक, अफगानिस्तान को पलटने की बात नहीं है।"

"फिर क्या बात है आका?"

"बात यह है कि मेरी मां को अब एक बहू की आवश्यकता है, अतः अब मैं शादी करना चाहता हूं।"

"आप मुझे बताएं कि आप किससे शादी करना चाहते हैं?" जिन्न बोला—"आपकी आज्ञा हुई तो मैं उस लड़की को ही उठाकर आपके पास ले आऊंगा।"

"नहीं सेवक, तुम्हें कोई लडकी उठाकर नहीं लानी है।" अलादीन उसे समझाता हुआ बोला—"बल्कि मेरे लिए लड़की तलाश करनी है। तुम इसी समय जाओ और पता लगाकर आओ कि इस दुनिया में सबसे सुंदर लड़की कौन है! मैं उसी लड़की से शादी करूंगा।"

अलादीन की बात सुनकर जिन्न ने कहा—"ठीक है मेरे आका, मैं अभी पता लगाकर आता हूं।"

यह कहकर जिन्न हवा में अदृश्य हो गया। अलादीन वहीं बैठ कर बेचैनी से उसकी प्रतीक्षा करने लगा।

जिन्न ने अधिक समय तक अलादीन को प्रतीक्षा नहीं करने दी। वह कुछ देर पश्चात ही लौट आया और अलादीन से बोला—"मेरे आका, मैं समस्त विश्व का एक चक्कर लगाकर आया हूं। मैंने हरेक देश की राजकुमारियों और शहजादियों को बहुत ध्यान से देखा है, परंतु अपने देश अफगानिस्तान की शहजादी नूरमहल मुझे सबसे अधिक सुन्दर लगी। नूरमहल की सुन्दरता के सामने सारे विश्व की राजकुमारियों, शहजादियों की सुन्दरता तुच्छ है।"

जिन्न के मुंह से शहजादी नूरमहल की सुन्दरता का विवरण सुनकर अलादीन, उससे ही शादी करने के विषय में सोचने लगा, परंतु पहले वह शहजादी नूरमहल को देख लेना चाहता था।

शहजादी नूरमहल प्रतिदिन शाम को अपने सोने के रथ पर सवार होकर बाग की सैर करने के लिए निकलती थी। नूरमहल को उसी समय देखा जा सकता था। अलादीन उसी शाम शहजादी नूरमहल की एक झलक पाने के लिए चल पड़ा एवं उसी रास्ते पर जाकर खड़ा हो गया, जिस रास्ते से शहजादी नूरमहल अपने सोने के रथ पर सवार होकर निकलती थी। प्रतिदिन की भांति आज भी सही समय पर शहजादी नूरमहल की सवारी उधर से गुजरी। अलादीन ने शहजादी को बड़े ध्यान से देखा। उसे देखकर अलादीन को लगा कि मानो चांद की कोई परी आकाश से उतरकर जमीं पर आ गई हो। शहजादी नूरमहल की सुंदरता सचमुच में लाजवाब थी। उसे देखते ही अलादीन उस पर मर मिटा और उसने कहा—"वल्लाह, क्या सुंदरता है, अब तो मैं सिर्फ तुम्हीं से शादी करूंगा।"

शहजादी नूरमहल की सुंदरता का दीवाना बन चुका अलादीन, अपने घर लौटा, आते ही उसने अपनी मां से कहा—"मां, आज मुझे वो मिल गई, जिसकी मुझे तलाश थी, मुझे वो मिल ही गई मां।"

"अरे! कौन मिल गई?" मां ने पूछा

"तुम्हारी होने वाली बहू मां।" खुशी से झूमता हुआ अलादीन बोला। अलादीन की मां के चेहरे पर भी खुशी की लहर दौड़ गई। उसने पूछा—"परंतु ये तो बता बेटा कि वह है कौन?"

"वह अफगानिस्तान की शहजादी नूरमहल है।" अलादीन अपनी मां से

बोला। दीवाना-सा होकर बोला अलादीन—"मैं उसकी सुंदरता का कायल हो चुका हूं, मैंने उससे शादी करने का निश्चय किया है।"

"ये तू कैसी बातें कर रहा है बेटा?" मां घबराकर बोली—"शहजादी से तेरी शादी भला कैसे हो सकती है? उसे सपना समझकर भूल जा बेटा, उससे तेरी शादी संभव नहीं।"

"नहीं मां, अगर मेरी शादी होगी तो वह नूरमहल से ही होगी।" अलादीन बोला—"अगर शहजादी नूरमहल से मेरी शादी न हुई, तो मैं कभी शादी नहीं करूंगा।"

"परंतु तेरी और नूरमहल की शादी होगी कैसे बेटा?" हारकर अलादीन की मां बोली—"क्या बादशाह तैयार हो जाएगा?"

"मां, तुम जाकर बादशाह से बात करो कि मेरा बेटा अलादीन आपकी शहजादी से शादी करना चाहता हैं, मुझे आशा है बादशाह अवश्य तैयार हो जाएंगे।"

बादशाह के पास जाने की बात सुनकर मां बोली—"न बाबा न, मुझे तो बादशाह के पास जाते हुए बहुत डर लगेगा।"

"लेकिन अगर तुम नहीं गई तो मैं अपनी जान दे दूंगा।"

अलादीन ने अपनी मां को धमकाया।

अलादीन की धमकी सुनकर उसकी मां बादशाह के पास जाने को तैयार हो गई और बोली—"बादशाह के पास मैं खाली हाथ तो नहीं जा सकती, कुछ-न-कुछ तो अपने साथ लेकर जाना ही होगा न?"

अलादीन ने उन रंगीन पत्थरों को एक रेशम की पोटली में बांध दिया जो वास्तव में बड़े अनमोल हीरे थे।

"इन्हें ले जाओ मां और ले जाकर बादशाह को दे देना और बादशाह जो भी उत्तर दे, मुझे आकर बताना।"

अलादीन की मां रेशम की उस पोटली को लेकर बादशाह के दरबार में पहुंची। मगर उसे 'पागल' समझकर किसी ने भी बादशाह से मिलने नहीं दिया। बादशाह जब किसी कार्यवश बाहर निकले तो अलादीन की मां ने उनसे कहा—"मैं एकांत में आपसे कुछ बातें करना चाहती हूं।"

उस समय अफगानिस्तान और ईरान में भयानक युद्ध छिड़ा हुआ था। अफगानिस्तान के बादशाह इस युद्ध के कारण परेशान थे।

उन्होंने अलादीन की मां को अपने एकांत महल में बुलवाया, फिर

अलादीन की मां से पूछा—"अब कहो, तुम हमसे क्या बातें करना चाहती हो?"

"मेरा बेटा आपकी शहजादी नूरमहल से प्यार करता है।" अलादीन की मां बोली—"और वह नूरमहल से शादी करना चाहता है।"

यह सुनते ही बादशाह भड़क उठा। उसका पारा सातवें आसमान पर पहुंच गया। उसने क्रोधित होकर कहा—"अगर तू बूढ़ी अबला न होती तो मैं अभी तेरी गर्दन काट देता। मैं किसी भी ऐरे-गैरे से अपनी शहजादी की शादी नहीं कर सकता।"

"मेरा बेटा कोई ऐरा-गैरा नहीं है।" अलादीन की मां ने भी आवेश में आकर कहा और उसके सामने रंगीन पत्थरों की पोटली खोलकर बोली—"यह सब मेरे बेटे ने आपको उपहार में भेजे हैं।"

इतने अनमोल हीरों को देखकर बादशाह हैरान रह गया। सातवें आसमान पर चढ़ा हुआ उसका पारा, तुरंत नीचे आ गया। हीरों की अद्भुत चमक देखते ही बादशाह सामान्य हो गया। उसने कभी भी इतने बड़े एवं अनमोल हीरे नहीं देखे थे। उन हीरों का मूल्य करोड़ों रुपयों में था। हीरों को देखकर बादशाह ने सोचा कि अवश्य ही यह बूढ़ी औरत किसी बड़े और धनी आदमी की मां है। फिर कुछ सोचकर बादशाह ने अलादीन की मां से कहा—"यदि आपका बेटा हमारे पड़ोसी देश ईरान को युद्ध में हरा दे तो मैं अपनी शहजादी की शादी तुम्हारे बेटे के साथ कर दूंगा।"

बादशाह ने अलादीन द्वारा भेजे हीरे स्वीकार कर लिए और अपने पास रख लिए।

अलादीन की मां का चेहरा खुशी से चमक उठा। वह वापस घर लौट आई। अलादीन को उसने बादशाह की शर्त सुना दी, सुनकर अलादीन बोला—"बस, इतनी-सी बात है। मैं आज ही ईरान को युद्ध में हरा देता हूं।"

अलादीन ने चिराग घिसकर जिन्न को बुलाया।

जिन्न तुरंत प्रकट हुआ और तेज आवाज में बोला—"क्या हुक्म है मेरे आका? आपको क्या चाहिए?"

"मैं बहुत परेशान हूं जिन्न।" अलादीन ने कहना शुरु किया—"मेरी दुल्हन तो तुमने खोज ली, परंतु उसे पाने के लिए हमें एक समस्या का मुकाबला करना होगा।"

"कैसी समस्या है मेरे आका?"

"बादशाह की शर्त है कि अगर मैं उनके दुश्मन देश ईरान को युद्ध में हरा दूंगा, तो वह अपनी शहजादी की शादी मेरे साथ कर देगा, अतः अब तुम्हें ईरान को युद्ध में हराना होगा।"

"बस, इतनी-सी बात है आका।"

जिन्न मुस्कराकर बोला—"मैं अभी जाकर ईरान की सेना को तहस-नहस कर देता हूं।"

इतना कहने के बाद जिन्न गायब हो गया। कुछ समय बाद वह अपने साथ हजारों देवों की सेना लेकर आया। सभी देव सैनिक हथियारों से लैस थे। उन्हें लेकर जिन्न युद्ध के मैदान की ओर चल पड़ा। जिन्न ने और देव सैनिकों ने युद्ध के मैदान में हाहाकार मचाना आरंभ कर दिया। ईरानी सेना देवों का मुकाबला न कर सकी।

उनके बहुत से सैनिक मारे गए, जो बचे, वे युद्ध का मैदान छोड़कर जान बचाने के लिए भाग खड़े हुए। देवों की सेना ने युद्ध का मैदान ईरानी सैनिकों के शवों से पाट दिया था। इस प्रकार जिन्न ने एक पल में ईरान को हराकर, अफगानिस्तान के बादशाह को जिता दिया। अफगानिस्तान का बादशाह इस जीत से काफी प्रसन्न था। अलादीन की मां पुनः बादशाह के दरबार में पहुंची। बादशाह ने उसे सिर-आंखों पर बिठाया तथा भरपूर स्वागत किया।

बादशाह बोले—"इस युद्ध को जीतकर मैं अति प्रसन्न हूं। अब आप जो भी कहेंगी, मैं वही करूंगा।"

"मेरी तो बस इतनी ही इच्छा है कि मेरे बेटे की शादी आपकी शहजादी के साथ हो जाए।"

बादशाह बहुत प्रसन्न था, अतः तपाक से बोला—"अजी शहजादी तो अब आपकी बहू है। तीन दिन के बाद आप बारात लेकर आ जाएं, शादी उसी दिन हो जाएगी।"

बादशाह की बात सुनकर अलादीन की मां खुशी-खुशी अपने घर लौट आई और अलादीन को सभी बातें क़ह सुनाईं। शहजादी से अपनी शादी तय हो जाने की बात सुनकर अलादीन खुशी से झूम उठा। शहजादी नूरमहल अब उसे अपनी दुल्हन के रूप में दिखाई देने लगी थी।

शादी में अड़चन

बादशाह ईरान से युद्ध जीतकर बहुत प्रसन्न था। उसने अलादीन के साथ अपनी शहजादी की शादी पक्की कर दी, परंतु बादशाह का वजीर बहुत दुष्ट प्रवृत्ति का आदमी था। वह अपने बेटे रहमान के साथ शहजादी नूरमहल की शादी कराना चाहता था, ताकि बादशाह के बाद उसका सारा राजपाट उसके बेटे रहमान को ही मिले, परंतु जब उसने शहजादी की शादी तय हो जाने के विषय में सुना तो वह चिंतित हो गया।

तब उसने बादशाह को बहकाना-फुसलाना आरंभ कर दिया। वह कहता——"बादशाह सलामत, यदि आप शहजादी नूरमहल की शादी कहीं और कर देंगे तो एक-साथ दो जिंदगियां तबाह हो जाएंगी। आपकी शहजादी नूरमहल और मेरा बेटा रहमान एक-दूसरे से बेपनाह मोहब्बत करते हैं। अगर आप इन दोनों बच्चों की जिदंगी तबाह नहीं करना चाहते तो ये शादी रोक दीजिए और इन दोनों बच्चों की आपस में शादी करा दीजिए। वर्ना न जाने एक-दूसरे से बिछुड़ने के दुःख में दोनों क्या कर बैठें? कहीं दोनों बच्चे आत्महत्या ही न कर लें?"

बादशाह वजीर के बहकावे में आ गया। उसने सोचा कि अब तो रहमान और नूरमहल की शादी करनी ही पड़ेगी। यह सोचकर बादशाह ने शहजादी नूरमहल और वजीर के बेटे रहमान की शादी पक्की कर दी।

एक दिन सुबह अलादीन घूमने निकला। उसने देखा कि नगर की सफाई की जा रही है और सड़कों को धोया जा रहा है।

अलादीन के मन में उत्सुकता जाग उठी। उसने सड़क धोने वाले एक आदमी से पूछा——"भाई, ऐसी क्या बात है, जो आप लोग सारे नगर की सफाई कर रहे हैं तथा सड़कें भी धोई जा रही हैं?"

यह सुनकर वह व्यक्ति आश्चर्य से बोला——"आश्चर्य की बात है कि तुम नहीं जानते! अरे भाई, आज शहजादी नूरमहल की शादी वजीर के बेटे रहमान से होने वाली है। इसी वजह से सारे नगर की सफाई की जा रही है।"

यह सुनकर अलादीन आश्चर्यचकित रह गया। उसका दिमाग 'भक्क' से उड़ गया। उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि वह व्यक्ति सच बोल रहा है। उस

व्यक्ति द्वारा कही बात, अलादीन को तीर के समान चुभी थी। वह किसी तरह खुद को संभालता हुआ अपने घर पहुचा। घर पहुंचते ही उसने सारी बात अपनी मां को बताई। उसकी मां को भी अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। वह आश्चर्य भरे स्वर में बोली—"नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता। बादशाह ने मुझसे शादी का वादा किया था। तुम्हें अवश्य ही कोई गलतफहमी हुई होगी।"

"यह बात बिल्कुल सच है मां, परंतु तू घबरा मत।" अलादीन बोला—"मैं ऐसा खेल खेलूंगा कि सांप भी मर जाएगा और लाठी भी न टूटेगी, बस अब तू देखती जा।"

इतना कहकर अलादीन ने अपना जादुई चिराग निकाला और उसे लेकर एकांत स्थान पर पहुंचा। वहां उसने चिराग को घिसा। चिराग के घिसते ही चमत्कारी जिन्न प्रकट हुआ और बोला—"क्या हुक्म है मेरे आका?"

"आज मै बहुत चिंतित हूं जिन्न।"

"आपको किसने चिंता में डाला है? मुझे उसका नाम बताइए, मैं अभी उसे रसातल में मिलाकर आता हूं।"

"किसी को रसातल में मिलाने की कोई बात नहीं है जिन्न।" अलादीन बोला—"बल्कि बात यह है कि शहजादी नूरमहल की शादी किसी और से हो रही है। बादशाह अपने वचन को भूल गया है।"

"अगर ऐसी बात है आका तो आप मुझे हुक्म दीजिए।" जिन्न गरजदार आवाज में बोला—"मैं शहजादी नूरमहल को यहीं उठाकर ले आता हूं।"

"नहीं-नहीं, इससे तो नूरमहल की बदनामी हो जाएगी।"

"फिर क्या किया जाए?"

अलादीन सोचने लगा। कुछ क्षणोपरांत बोला—"सुनो, तुम एक काम करना, जब शहजादी नूरमहल की शादी वजीर के बेटे रहमान के साथ हो जाए तो तुम सुहागरात मनाने से पहले ही उन दोनों को पलंग समेत यहां उठा लाना।"

"जो हुक्म मेरे आका।"

यह कहकर जिन्न अदृश्य हो गया। अलादीन अब कुछ संतुष्ट हो चुका था, उसे विश्वास था कि शहजादी उसकी दुल्हन अवश्य बनेगी। उसके चेहरे पर मुस्कान थिरकने लगी, वह खुश था। उसे किसी भी प्रकार की चिंता नहीं थी।

कैदी और शहजादी

शहजादी नूरमहल और रहमान की शादी बड़ी धूम-धाम के साथ हुई। उनकी शादी में अफगानिस्तान के छोटे-बड़े सभी लोगों ने हिस्सा लिया। दूसरे देशों के लोग भी आए। उस दिन शहर की सजावट देखने लायक थी। शहर के चारों ओर घी के दिए जलाए गए थे। शहजादी नूरमहल अब रहमान की हो चुकी थी। रहमान भी नूरमहल को अपनी दुल्हन के रूप में पाकर बहुत प्रसन्न था। धीरे-धीरे रात बीतने लगी। अलादीन एक पेड़ के नीचे बैठा, बार-बार आकाश की ओर देख रहा था। जैसे-जैसे समय गुजरता जा रहा था, वैसे-वैसे उसकी बेचैनी बढ़ती जा रही थी। उसके दिल में बार-बार यही शंका उभर रही थी कि अगर जिन्न अपने काम में सफल न हो सका तो वह क्या होगा?

उसे पछतावा भी हो रहा था कि उसने शहजादी नूरमहल की शादी रहमान से होने ही क्यों दी? समय रहते शहजादी को उठवाकर यहां क्यों नहीं मंगवा लिया? शहजादी को अपने साथ लेकर वह उसी क्षण यहां से कहीं दूर चला जाता, फिर कभी लौटकर ही न आता।

उसे अपनी गलती का अहसास हो चुका था। वह टकटकी लगाए आकाश की ओर देख रहा था। उसे शहजादी नूरमहल के आने की प्रतीक्षा थी।

उधर शहजादी नूरमहल दुल्हन के वेश में एक कमरे में बैठी थी। उसकी सहेलियों ने उसे चारों ओर से घेर रखा था, जो उसके साथ अठखेलियां कर रही थीं, परंतु नूरमहल की आंखों से झर-झर आंसू बह रहे थे, क्योंकि वह रहमान को पसंद नहीं करती थी, परंतु अपने पिता के निर्णय के सामने वह कुछ न कह सकी थी। चुपचाप सिर झुकाकर रहमान से शादी कर ली, परंतु उसका दिल अंदर-ही-अंदर बुरी तरह रो रहा था।

सहेलियों ने नूरमहल के साथ हंसी-ठिठोली की। फिर उन सभी ने नूरमहल से दूल्हे के हथकंडे से सावधान रहने को कहा। तदुपरांत वे सभी बाहर निकल गईं।

बाहर जाकर उन्होंने रहमान से कहा—"अब आप अंदर जाइए, आपकी दुल्हन नूरमहल आपसे मिलने की आशा लिए बड़ी बेकरारी से आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं।"

यह सुनकर रहमान बहुत प्रसन्न हुआ। वह नूरमहल के कमरे में प्रवेश कर गया। नूरमहल एक ओर सिकुड़ी, सिमटी-सी बैठी आंसू बहा रही थी। उसे रहमान से सख्त घृणा थी। उसे लग रहा था कि अगर वह शादी से पहले ही मर जाती तो अच्छा होता। उसी समय रहमान ने कमरे में प्रवेश किया। इस समय वह पूरी तरह शराब के नशे में डूबा था।

वह नूरमहल को देखकर बोला——"वहां क्यों खड़ी हो जानेबहार? आज हमारी सुहागरात है। आओ और मेरी बाहों में समा जाओ।"

इतना कहकर वह जूतों सहित पलंग पर चढ़ गया। जूते उतारने का भी उसे होश नहीं था। उसने शहजादी को पास बुलाया। जब वह नहीं आई तो उसने शहजादी को खींचकर अपने सीने से लगा लिया और बोला——"मेरी बाहों में आकर जवानी की बहार लूटो जानेमन।"

यह कहकर उसने शहजादी को अपनी बाहों में भींच लिया। उधर वह जिन्न वहीं पर खड़ा था और इससे पहले कि रहमान शहजादी के हुस्न की बहार लूटता, जिन्न दोनों को पलंग सहित ले उड़ा। पलंग को अचानक उड़ता देख, दोनों चौंक पड़े। शहजादी भय की अधिकता के कारण तुरंत बेहोश हो गई। रहमान का भी डर के मारे बुरा हाल था। वह पलंग पर बैठा, आकाश में उड़ रहा था। रहमान हड़बड़ाया-सा चांद-तारों को देख रहा था। जो उसे वहां से बहुत निकट दिखाई दे रहे थे। आकाश में विचरते बादल पलंग से टकरा रहे थे। चांद के तेज प्रकाश में पूरा पलंग तथा रहमान भीगे हुए थे। मुंह बाए, फटी-फटी आंखों से रहमान यह दृश्य देख रहा था। डर के मारे उसका कंठ सूख चुका था। उसके बगल में शहजादी नूरमहल बेहोशी की हालत में पड़ी थी।

उधर उस पेड़ के नीचे, एक दरी पर लेटा हुआ अलादीन आकाश की ओर ही देख रहा था। उसकी आशाओं के दीप अब एक-एक करके बुझने लगे थे। आधी रात का समय हो चुका था। अलादीन को लग रहा था कि शायद अब जिन्न नूरमहल को नहीं ला सकेगा।

उसी समय अलादीन को आकाश में उड़ता हुआ एक पलंग दिखाई दिया। खुशी के मारे वह उछलकर खड़ा हो गया।

पलंग ठीक उसके सामने आकर उतरा और साथ ही जिन्न की आवाज आई——"आपकी अमानत हाजिर है मेरे आका, मैं जा रहा हूं, सुबह होते ही आपकी सेवा में हाजिर हो जाऊंगा।"

इतना कहकर जिन्न वहां से अदृश्य हो गया।

अलादीन ने रहमान को पकड़कर पेड़ से बांध दिया।

रहमान को कैद करने के बाद अलादीन शहजादी नूरमहल को होश में लाने का प्रयास करने लगा। होश में आने के बाद जब नूरमहल ने रहमान को पेड़ से बंधा देखा, तो वह खिल-खिलाकर हंसने लगी। नूरमहल को हंसता देखकर रहमान अपमान की आग में झुलसने लगा, परंतु बंधा होने के कारण वह विवश था।

चांदनी रात में शहजादी का सौंदर्य फूल की मानिंद दमक रहा था। उधर जब शहजादी ने अलादीन को देखा तो वह देखती रह गई। पहली ही नजर में अलादीन शहजादी के दिल में उतर गया।

वह प्रसन्नता के साथ बोली—"मैं यहां आकर बहुत खुशी महसूस कर रही हूं।"

शहजादी की प्रसन्नता देख, अलादीन ने उससे बड़े अदब के साथ कहा—"मैं कोई चोर या उच्चका नहीं हूं शहजादी। मैं एक भला आदमी हूं।"

"तुम जो कोई भी हो, बहुत सुंदर हो।" शहजादी बोली—"मुझे तो ऐसा लगता है कि तुम इस दुनिया के प्राणी ही नहीं हो। तुम तो देवलोक के प्राणी लगते हो, परंतु यह तो बताओ कि तुमने मुझे इस प्रकार मेरे महल से उठवाकर यहां क्यों मंगवाया है?"

"तुम्हारे पिता ने मेरे साथ धोखेबाजी की है शहजादी।" अलादीन बोला—"उन्होंने चार-सौ-बीसी की है।"

"क्या चार-सौ-बीसी की है मेरे पिताजी ने तुम्हारे साथ?" शहजादी ने कुछ आश्चर्य भरे स्वर में पूछा।

"दरअसल तुम्हारी शादी रहमान के साथ नहीं, मेरे साथ होनी थी, परंतु तुम्हारे पिता ने मेरी मां को दिया वचन तोड़कर, तुम्हारी शादी इससे कर दी। मुझे तुमसे बेपनाह मोहब्बत है, मैं तुम्हारे बिना एक पल के लिए भी नहीं रह सकता, अतः मैंने तुम्हें पलंग सहित यहां मंगवा लिया। अब तुम्ही बताओ क्या मैंने कुछ बुरा किया?"

"आपने यह अच्छा ही किया।" शहजादी बोली—"मैं भी पहली ही नजर में आपको पसंद कर चुकी हूं, परंतु इससे आपको मिलेगा क्या?"

"आपका प्यार, आपकी मोहब्बत मिलेगी।"

"प्यार-मोहब्बत के लिए तो मैं कब से बेकरार हूं।"

यह कहकर शहजादी अलादीन से लिपट गई। अलादीन की बाहों में समाते हुए शहजादी बोली—"मुझे तुमसे प्यार हो गया है, अगर मैं जीऊंगी तो तुम्हारे साथ, मरूंगी तो तुम्हारे साथ। मैं तुम्हारे चरणों की दासी बनकर रहूंगी।"

उसके बाद दोनों प्रेम के सागर में डूब गए। अलादीन ने शहजादी के साथ प्रेमालाप किया और सुहागरात मनाई।

अब सुबह होने वाली थी। दोनों प्रेमी अलग हो गए।

शहजादी ने अपने कपड़े दुरुस्त किए तथा कायदे के साथ पलंग पर बैठ गई।

अलादीन ने रहमान के बंधन खोल दिए तथा उसे भी पलंग पर लिटाते हुए बोला—"तुम चुपचाप इसी तरह पलंग पर पड़े रहना, अगर जरा भी चालाकी दिखाई तो मैं तुम्हें जिन्न से उठवाकर किसी पहाड़ी पर से नीचे फिकवा दूंगा।"

रहमान तो पहले से ही डरा हुआ था। अलादीन की बात सुनकर वह और भी डर गया। अलादीन जिन्न की प्रतीक्षा करने लगा।

तभी उसके पास से ही आवाज आई—"अब मैं इस पलंग को उठाकर ले जाऊं आका?"

अलादीन आश्चर्य के साथ बोला—"अरे, तुम कहां थे?"

"मैं तो रात-भर यहीं था आका।" फिर आवाज आई।

"तुम रात-भर यहां क्यों ठहरे?" अलादीन ने पूछा।

"मैं देखना चाहता था कि इंसान आपस में कैसे प्यार करते हैं?" जिन्न ने कहा—"अच्छा मेरे आका, अब मैं इन्हें ले जाता हूं।"

"ठीक है, ले जाओ।" मन में इच्छा न होते हुए भी अलादीन को कहना ही पड़ा।

जिन्न शहजादी तथा रहमान को पलंग सहित ले उड़ा।

रहमान के चेहरे पर अब भी घबराहट हावी थी। वह पलंग पर बिल्कुल सिमटकर बैठा था। शहजादी के जाते ही अलादीन के चेहरे पर छाई रौनक उदासी में बदल गई। आंखों में वीरानियां-सी छा गईं। भारी कदमों के साथ वह अपने घर की तरफ चल पड़ा।

लौट गया। कुछ देर बाद वह अपने कमरे से बाहर निकला तथा अपने घोड़े पर सवार होकर सदा-सदा के लिए देश छोड़कर चला गया।

उधर जब उसके दोस्तों ने रहमान द्वारा दिया वह लिफाफा खोला तो उसमें एक कागज पर साफ-साफ लिखा था—'मैं रहमान हूं और शहजादी नूरमहल को तलाक दे रहा हूं। तलाक देने का कारण यह है कि मैं शहजादी नूरमहल को बिल्कुल भी पसंद नहीं करता, साथ ही शहजादी का संबंध आकाश के देवों के साथ है, अतः मेरा शहजादी के साथ निर्वाह नहीं हो सकता, इसलिए मैं शहजादी को तलाक देकर सदा-सदा के लिए यह देश छोड़कर जा रहा हूं।'

पत्र पढ़ते ही समूचे राजमहल में हाहाकार मच गया। जो भी यह खबर सुनता, वही हक्का-बक्का होकर खड़ा रह जाता।

जहां कुछ समय पहले शहनाइयां बज रही थीं। वहां अब मातम छा गया। हर कोई ये सोचकर आश्चर्यचकित था कि आखिर इस भले-चंगे रहमान को ऐसा क्या हो गया कि वह एक ही दिन में शहजादी को तलाक दे गया तथा देश भी छोड़कर चला गया।

जिन्न ने यह समाचार अलादीन को सुनाया। सुनकर अलादीन खुशी से झूम उठा और बोला—"खुदा का शुक्र है देव कि जिस काम में अभी कई दिन लगने की संभावना थी, वह एक ही दिन में हो गया। दरअसल रहमान की किस्मत ही खराब थी, जो उसने दुनिया की सबसे खूबसूरत शहजादी से शादी की। वह शहजादी की कद्र न कर सका और डरकर देश ही छोड़कर भाग गया और साथ ही शहजादी पर इल्जाम भी लगा गया।"

"यह सब तो आपके दिमाग का कमाल था आका।" जिन्न बोला—"रहमान के सामने न तो आप शहजादी से प्रेमालाप करते और न ही रहमान शरमाकर देश छोड़कर भागता।"

"तुम्हारा कहना सही है, परंतु इसमें तुम्हारी मदद मेरे बहुत काम आई। तुम्हारी मदद के बिना यह काम संभव न था।"

उधर बादशाह का भी बहुत बुरा हाल था। उसने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि रहमान उसकी बेटी के साथ ऐसा बर्ताव करेगा। वजीर की बातों में आकर बादशाह ने गलत निर्णय लिया था, अब उन्हें उस निर्णय पर बेहद अफसोस हो रहा था। मात्र एक ही दिन में रहमान शहजादी को तलाक दे गया। बादशाह को अपनी बदनामी का बड़ा खतरा था, वह सोचने लगे कि ऐसे हालातों में उन्हें क्या करना चाहिए?

फिर बादशाह ने कुछ सोचकर यह ऐलान करवा दिया कि रहमान पागल हो गया था, अतः वह शहजादी को तलाक देकर, देश छोड़कर भाग गया। अब शहजादी की शादी कहीं और की जाएगी।

इस ऐलान को सुनकर समूची प्रजा काफी खुश हुई तथा संतुष्ट हो गई। लोगों ने यही समझा कि रहमान वाकई पागल हो गया होगा, वर्ना वह ऐसी हरकत कदापि नहीं करता।

अब बादशाह को अलादीन की मां की रह-रहकर याद आ रही थी। वह सोच रहा था कि यदि वह बुढ़िया की बात मान लेता, तो आज उसे यह दिन न देखना पड़ता। बादशाह हमेशा यही सोचता कि इतना अमीर लड़का क्या अब शहजादी से शादी कर सकेगा, जबकि शहजादी अब तलाकशुदा है। अमीर लड़कों के लिए विश्व में सुदर लड़कियों की कोई कमी नहीं है। ऐसे में उस लड़के का शहजादी के साथ शादी करना नामुकिन-सा है।

इसी प्रकार तीन-चार महीने बीत गए। बादशाह को अपनी शहजादी की शादी की चिंता सताने लगी।

उधर अलादीन काफी खुश था। एक दिन उसने अपनी मां से कहा—"मां, रहमान शहजादी को तलाक दे चुका है। अब तुम बादशाह के पास जाकर उससे मेरी शादी के विषय में बात करो। मुझे आशा है कि बादशाह जरूर मान जाएगा।"

सुनते ही उसकी मां भड़क उठी और अलादीन को डांटते हुए बोली—"नहीं, शहजादी से तेरी शादी हरगिज नहीं हो सकती। इस दुनिया में कुंवारी लड़कियों की कमी है क्या? जो तू एक तलाकशुदा शहजादी से शादी करना चाहता है। मैं ऐसा हरगिज-हरगिज नहीं होने दूंगी।"

"मां, शहजादी एकदम पवित्र है।" अलादीन अपनी मां को समझाता हुआ बोला—"वह अभी तक कुंवारी ही है।"

"यह तू कैसे कह सकता है?" मां ने आश्चर्य से पूछा।

तब अलादीन ने मां को सारी कहानी सुना डाली।

उसकी बात सुनकर मां बोली—"तू तो बड़ा ही नटखट निकला रे, तूने तो कमाल कर दिया।"

"मैंने क्या किया है मां, सब ऊपर वाले की मेहरबानी है। अब तुम बादशाह के पास जाने की तैयारी करो।"

"बड़ा उतावला हो रहा है रे तू।"



डरपोक रहमान

अलादीन ने रात-भर रहमान को पेड़ से बांधकर रखा था। रहमान अलादीन तथा उसके जिन्न से बुरी तरह भयभीत था। सुबह होने पर जब जिन्न ने उन्हें राजमहल में छोड़ा तो शहजादी नूरमहल से भी उसे भय लगने लगा। वह सोच रहा था कि अवश्य ही शहजादी का संबंध आकाश के देवों के साथ होगा। रहमान देवों से बहुत डरता था। उसका दिल भी बड़ा कमजोर था।

शहजादी बड़े आराम की नींद सो रही थी। जब वह जागी, तो रहमान सिर पर पैर रखकर अपने घर की तरफ भागा। घर जाकर वह तुरंत सो गया। उसकी इतनी हिम्मत नहीं हो रही थी कि वह शहजादी या किसी अन्य से नजरें मिलाए। अलादीन के सामने शहजादी ने उसे बहुत बेइज्जत किया था, साथ ही बड़ी बेशर्मी के साथ अलादीन के गले में बाहें डालकर उसके साथ सुहागरात भी मनाई थी।

उधर सभी लोग यह सोच रहे थे कि रात-भर जागने के कारण दूल्हे मियां आराम कर रहे हैं। रहमान के दोस्त इस प्रतीक्षा में थे कि कब रहमान बाहर निकले और वह उसका हाल-चाल पूछें, परंतु जब काफी समय बीत गया और रहमान नहीं आया तो उसके दोस्तों ने वजीर साहब से अनुरोध किया कि वे रहमान को बाहर भेजें। वे रहमान से मिलने के लिए बेताब हैं। वजीर साहब ने दोस्तों के अनुरोध पर रहमान को जगाया और मेहमानखाने में बैठे दोस्तों के पास भेजा।

रहमान की हालत देखकर उसके दोस्त आश्चर्यचकित रह गए, क्योंकि रहमान महीनों का बीमार-सा लग रहा था। उसके चेहरे का रंग सफेद पड़ गया था, आंखें भी सूजी हुई थीं। रहमान का ऐसा हाल देखकर उसके दोस्त हतप्रभ रह गए।

उन्होंने पूछा—"ये क्या हो गया है तुम्हें? ये कैसी हालत बना रखी है तुमने? सूजी हुई आंखें और तुम्हें देखकर तो ऐसा लगता है जैसे तुम महीनों से बीमार पड़े हो! ऐसा क्या हो गया है तुम्हें?"

रहमान कुछ न बोला। चुपचाप जेब से कागज का एक लिफाफा निकालकर एक दोस्त के हाथ में थमा दिया तथा उल्टे पांव अपने कमरे में

"बस मां, अब जाओ न इससे पहले कि बादशाह शहजादी की शादी कहीं और तय कर दे, तुम शहजादी को अपनी बहू बना लो।"

"अच्छा ठीक है, मैं बादशाह के पास जाती हूं।"

यह कहकर अलादीन की मां बादशाह के पास जाने की तैयारी में जुट गई, इस बार वह सज-धजकर जाना चाहती थी। अलादीन प्रसन्न था। शहजादी अब उसे अपनी दुल्हन के रूप में नजर आने लगी थी।

अलादीन की शादी

अलादीन की मां के दरबार में पहुंचते ही बादशाह ने बड़े जोर-शोर से उसका स्वागत किया। बादशाह उसे एकांत भवन में ले गए। वहां बादशाह ने अलादीन की मां से अपने किए की माफी मांगी तथा अलादीन की मां से बोले—"मैं आपकी बात न मानकर बहुत पछता रहा हूं। मैंने बेकार में ही एक पागल से अपनी शहजादी की शादी कर दी, जिसकी वजह से मुझे ये दिन देखने पडे। अगर आप चाहें तो शहजादी को अपनी बहू बना सकती हैं।"

"मै तो आई ही इसीलिए हूं।" अलादीन की मां बोली—"मैं अब भी शहजादी को अपनी बहू बनाना चाहती हूं।"

उसी समय वजीर कमरे में आया और आकर वह चुपचाप एक कोने में खड़ा हो गया। बादशाह की बात सुनकर वह बोला—"यद्यपि मैं पहले गलती कर चुका हूं कि मैंने शहजादी की शादी अपने पागल बेटे के साथ करवा दी, परतु मुझे भी पता न था कि मेरा बेटा पागल निकलेगा। शहजादी से उसकी शादी करवाकर मैं भी बहुत पछता रहा हूं, परंतु मेरा विचार है कि यदि आप इनके बेटे को एक नजर देख लें तो अच्छा रहेगा।"

बादशाह ने एक क्षण के लिए सोचा। वजीर की बात उसे सही लगी।

वह बोला—"तुम ठीक कहते हो वजीर। हमें लड़के को एक नजर देख लेना चाहिए, कहीं कोई गड़बड़ न हो।"

फिर बादशाह ने अलादीन की मां से कहा—"हम आपके बेटे को एक नजर देखना चाहते हैं। यदि आप अपने बेटे को यहां भेज दें तो बहुत अच्छा रहेगा।"

"जैसी आपकी इच्छा बादशाह सलामत। आप मेरे बेटे को देखना चाहते हैं तो इसमें मुझे कोई ऐतराज नहीं है।" अलादीन की मां बोली—"वह अब आपका दामाद है! मैं उसे भेज दूंगी।"

अलादीन की मां वापस लौट आई। अलादीन बेचैनी से मां की प्रतीक्षा कर रहा था। आते ही उसने बादशाह का जवाब मांगा।

तब मां ने बताया—"बादशाह तुम्हें एक नजर देखना चाहता है। तुम्हें बादशाह के पास जाना होगा।"

"ठीक है, मैं अवश्य जाऊंगा।" यह कहकर अलादीन एकांत में पहुंचा, वहां पहुंचकर उसने चिराग को घिसकर जिन्न को बुलाया।

जिन्न आया तो उससे कहा—"मेरे लिए तुरंत एक शानदार घोड़ा, शाही कपड़े, हथियार और कीमती गहने लेकर आओ। जिन्हें पहनकर मैं चलूं तो ऐसा लगे जैसे कोई राजा कहीं जा रहा हो।"

"जो हुक्म मेरे आका।" कहकर जिन्न गायब हो गया।

जब वह लौटा तो अपने साथ शानदार घोड़ा, शाही लिबास, हीरे की तलवार तथा कीमती गहने लेकर आया।

शाही पोशाक पहनकर, घोड़े के ऊप्र स्वर्ण पुष्प रखकर तथा हीरे की तलवार लटकाकर अलादीन बादशाह के महल की ओर रवाना हो गया। उसके कपड़ों में बेशकीमती हीरे जड़े थे। जिनमें से रंगीन प्रकाश फूट रहा था। वह चलता जा रहा था, लोग उसे देखते जा रहे थे। लोगों ने समझा कि शायद कोई बादशाह अपनी सवारी पर निकला है।

अलादीन की सवारी जब राजमहल पहुंची तो बादशाह ने दौड़कर अलादीन को गले लगा लिया। उसकी बहुत आवभगत की गई। तमाम दरबारी अलादीन से प्रभावित थे, उन्होंने अलादीन की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अलादीन की प्रशंसा सुनकर वजीर जल-भुन गया। उसके दिल में ईर्ष्या की आग भड़कने लगी, परंतु अब वह जल-भुन कर भी कुछ नहीं कर सकता था।

बादशाह ने अलादीन को मखमल से सजे शानदार कमरे में बिठाया। बादशाह ने अलादीन तथा शहजादी की शादी अगले दिन ही कर देने की घोषणा कर दी। इस संदर्भ में अलादीन से भी पूछा गया, परंतु भला अलादीन को क्या एतराज हो सकता था, वह तुरंत बोला—"जैसी आपकी मर्जी।"

शादी तय हो जाने के बाद अलादीन वापस अपने घर लौट आया और चिराग के जिन्न को बुलाया और बोला—"कल मेरी शादी है, अतः कल के लिए एक शानदार बारात का प्रबंध करो। बारात ऐसी होनी चाहिए कि लोग देखकर दांतों तले उंगलियां दबा लें।"

जिन्न बारात का प्रबंध करने के लिए चला गया।

अगले दिन सुबह के समय वह लौटकर आया। उसके साथ पूरी-की-पूरी फौज थी, वह स्वयं भी एक आदमी के भेष में था। वह अपने साथ शहनाई बजाने वाले, बैंड-बाजा बजाने वाले, शानदार घोड़े, हाथी, जो कि हजारों की संख्या में थे एवं सभी हीरों-जवाहरातों से सजे थे, साथ लाया था। सबसे आगे

चलने वाला हाथी हीरे उगल रहा था। हीरे उगलने का उसका दृश्य देखने लायक था। पालकी वाले भी बारातियों के साथ थे, जो शानदार पोशाकों में सजे थे।

कहने का मतलब यह है कि अलादीन की बारात ऐसी थी, जैसी किसी महाराजा या बादशाह की होती है। सजी-धजी बारात बादशाह के महल की ओर रवाना हो गई।

हीरे उगलने वाले हाथी पर अलादीन बैठा था। अलादीन ने स्वर्ण व हीरे जड़ित पोशाक पहन रखी थी। अलादीन की बारात को देखकर लोग आश्चर्यचकित रह गए, क्योंकि उन्होंने आज तक ऐसी बारात नहीं देखी थी। लोगों को दांतों तले उंगलियां दबाने को मजबूर होना पड़ा।

बारात दुल्हन के महल के पास जाकर रुकी। बारात को एक सुसज्जित पंडाल में बिठाया गया। पंडाल की सजावट भी देखने लायक थी। सोने की झालरों से पंडाल को सजाया गया था। शहनाइयों की आवाज वातावरण में तैरने लगी। अलादीन तथा शहजादी को एक पंडाल में बिठाया गया। इस पंडाल को बड़ी खूबसूरती के साथ सजाया गया था। लोग पंडाल की सजावट को देखते ही रह गए। उसके बाद नियत समय पर अलादीन और शहजादी का निकाह संपन्न हो गया।

खाना खाने के बाद संगीत का कार्यक्रम होना तय था। बादशाह ने बरातियों के लिए शानदार दावत का प्रबंध किया था। छप्पन पकवानों से परिपूर्ण भोजन को खाने वाले अपनी उंगलियां चाटते रह गए। अलादीन के चिराग का जिन्न इस समय एक-अरब व्यापारी के वेष में था। वह व्यापारी बना बड़ा ही खुश नजर आ रहा था। वह अपने दोनों हाथों से हीरे लुटा रहा था और कहता जा रहा था—"आज मेरे दोस्त की शादी है, आज मैं बहुत खुश हूं, लो धन लूटो और मौज मनाओ।"

खाना खाने के बाद राजनर्तकी ने अपना नृत्य पेश किया। उसने मेहमानों को शानदार गजलें सुनाईं। गजलें सुनकर लोग मंत्रमुग्ध होकर नाचने लगे। अलादीन ने राजनर्तकी को खुश होकर अपने गले का हार इनाम स्वरूप दिया। उस हार में करोड़ों के हीरे लगे थे। उन हीरों की चकाचौंध को देखकर सभा में बैठे लोग दंग रह गए।

उधर अलादीन को अचानक एक चिंता सताने लगी। वह सोच रहा था कि कल सवेरे जब वह शहजादी को विदा करके ले जाएगा तो कहां ले जाएगा?

उसके पास तो सिर्फ एक झोपड़ी है। राजमहल में पली-बढ़ी शहजादी को भला वह एक झोंपड़ी में कैसे ले जा सकता है?

उसने अरब व्यापारी बने जिन्न को एकांत में बुलाया तथा बोला—"एक चिंता है दोस्त।"

"वो क्या मेरे आका?" जिन्न ने पूछा।

"यही कि कल हम शहजादी को विदा कराके कहां ले जाएंगे? हमारे पास तो मात्र एक झोंपड़ी हैं; उस झोंपड़ी में तो हम शहजादी को नहीं ले जा सकते।"

"आपका कहना सही है आका।" जिन्न बोला—"आप मुझे बताएं कि अब मुझे क्या करना चाहिए?"

अलादीन ने कुछ क्षण सोचा। फिर बोला—"तुम एक काम करो, नदी के किनारे जो जमीन खाली पड़ी है, वहां पर रातोंरात एक शानदार महल तैयार करो। महल ऐसा हो कि उसके जैसा महल दुनिया में कहीं और न हो यानि उसका कोई तोड़ न हो। उस महल के दरवाजों पर शानदार हीरे जड़वाना और महल की गगनचुंबी अट्टालिकाओं में हीरों का बुर्ज बनवाना। महल के सामने एक शानदार बाग बनवाना, जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के फलों के वृक्ष लगे हों। बाग में ऐसे-ऐसे फूल लगवाना, जो संसार में अनोखे हों। उस बाग के बीचों-बीच एक शानदार फव्वारा लगवाना, जिसमें से रंगीन पानी निकलता हो। महल के सामने वाले दरवाजों को हीरे-जवाहरातों से जड़वा देना। उस महल का एक दरवाजा सादा छोड़ देना, उस दरवाजे पर कुछ मत लगवाना। महल के अंदर नौकर-चाकर, दाई, बांदी आदि सबका प्रबंध हो। उसमें कपड़ा, बर्तन, बासन, राशन सब उपलब्ध हों यानि उस महल में किसी भी चीज की कमी न हो। बस चारों चरफ शाही ठाट-बाट ही बिखरा नजर आए।"

"आप फिक्र न करें मेरे आका।" सुनकर जिन्न बोला—"ऐसा महल बनाऊंगा कि देखने वाले देखते रह जाएंगे।"

यह कहकर जिन्न बादशाह के पास पहुंचा तथा बोला—"बादशाह सलामत, मैं एक व्यापारी आदमी हूं और व्यापार का एक बहुत जरूरी काम है। मुझे तुरंत बगदाद के लिए रवाना होना पड़ेगा, क्योंकि बगदाद में मेरे एक अजीज दोस्त की शादी है, जिसमें मुझे शिरकत करनी जरूरी है। यदि मैं उस शादी में शामिल न हुआ तो मेरा दोस्त मुझसे नाराज हो जाएगा और शायद

फिर कभी वह मुझसे बात भी न करेगा, अतः अब मैं आपसे अनुमति चाहूंगा। आपने जिस प्रकार से मुझे सम्मानित किया तथा इस बारात की आवभगत की, वह काबिले तारीफ है मैं और सभी बाराती आपके आभारी हैं।"

"यह कहकर आप मुझे शर्मिंदा कर रहे हैं।" बादशाह बोले—"धन्यवाद तो हमें आपको देना चाहिए, जो आप बारात को इस तरह सजाकर लाए हैं और आपने हमारी इज्जत बढ़ाई, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं।"

यह सुनकर जिन्न ने अपनी जेब से एक डिबिया निकालकर बादशाह की तरफ बढ़ाते हुए कहा—"शहजादी की शादी पर मैं एक तुच्छ-सी भेंट शहजादी को देना चाहता हूं, आप इसे स्वीकार कर शहजादी को दे दें।"

बादशाह ने डिबिया लेकर ज्यों ही उसे खोला, वातावरण एक रंगीन प्रकाश से सराबोर हो गया। डिबिया मे एक जोड़ी झुमके थे। उन्हीं झुमकों में से वह प्रकाश निकल रहा था। जिन्न खास-तौर से ये झुमके शहजादी के लिए ईरान से लाया था। झुमके देखकर पूरी महफिल दंग रह गई। उसके बाद अरब व्यापारी बने जिन्न ने सबको अपना आखिरी सलाम बोला और महफिल से विदा हो गया। लोग उसे जाता देखते रहे। महफिल उसी तरह सजी रही। नृत्य व गजलों का दौर चलता रहा। झुमके अभी भी अपने अद्वितीय प्रकाश से सबका मन मोह रहे थे।

अलादीन और शहजादी का मिलन

अगले दिन सुबह बादशाह ने सभी बारातियों को शानदार नाश्ता कराया। फिर बारात की विदाई का समय हो आया। बादशाह ने अपनी बेटी को विदाई में ढेर सारे तोहफे दिए। उन उपहारों की तादाद इतनी थी कि कोई बड़ा-सा घर भी उन उपहारों से भर सकता था। अलादीन को बादशाह ने 'युवराज' की पदवी से विभूषित किया। उसके बाद शहजादी की डोली के साथ-साथ सभी बाराती रवाना हो गए। जिन्न के साथी अपने दोनों हाथों से अशर्फियां लुटाते हुए चले जा रहे थे।

बारात डोली सहित अलादीन के उस महल के बाहर जा पहुंची, जिसे चिराग के जिन्न ने रातोंरात बना डाला था। संपूर्ण महल सफेद व रंगीन संगमरमर के पत्थरों का बना था। उसमें हीरे-जवाहरातों की पच्चीकारी भी की हुई थी। दरवाजों पर सुंदर हीरों की नक्काशी बड़ी लुभावनी थी। महल को देखकर ऐसा लगता था कि उस महल को मानो स्वयं खुदा ने बनाया हो। अलादीन महल को देखकर अति प्रसन्न हुआ। उसने खुदा का तथा जिन्न का शुक्रिया अदा किया तथा अपने कमरे में आराम करने चला गया।

अलादीन की मां ने बड़े प्यार के साथ अपनी बहू को पालकी से उतारा। वह ऐसी सुंदर चांद से मुखड़े वाली बहू देखकर उस पर न्योछावर हो रही थी। आज वह गरीब दर्जी मुस्तफा की बीवी के नाम से नहीं, बल्कि युवराज अलादीन की मां के नाम से पहचानी जा रही थी। आज वह बेहद प्रसन्न थी तथा अपनी किस्मत पर गर्व महसूस कर रही थी। गर्व भी इतना कि शायद कोई कल्पना भी न कर सके।

रात होने पर अलादीन शहजादी के कमरे में गया। शहजादी लाज-शर्म से सिकुड़-सिमटकर बैठी थी। दोनों के मिलन का समय आ चुका था। दोनों को कई दिनों से इस घड़ी की प्रतीक्षा थी।

अलादीन ने प्यार से शहजादी का कोमल मुखड़ा हाथों में लेकर ऊपर उठाया और बोला—"आखिर आज मैंने तुम्हें पा ही लिया, मेरी प्यारी शहजादी।"

"खुदा ने हमें एक-दूसरे के लिए ही बनाया था, मेरे सरताज।" शहजादी

के शब्दों में अटूट प्यार छुपा था—"हमें मिलने से कौन रोक सकता था। हमारा मिलन तो होना ही था।"

शहजादी अलादीन की बाहों में समा गई और बोली—"मेरे सरताज, इस मिलन के लिए मैं कब से तरस रही थी।"

अलादीन ने शहजादी को अपने अंक में समेट लिया और उसने शहजादी के गालों पर चुम्बनों की झड़ी लगा दी। दोनों की प्रसन्नता का कोई ठिकाना न था। उनकी तमन्नाओं का संसार सज चुका था। बस अब एक-दूसरे की बाहों में खो जाना ही बाकी रह गया था।

आधी रात के समय जब चांद की चांदनी अपने पूरे यौवन पर थी। आकाश में पूर्णिमा का चांद अपनी दूधिया रोशनी में संपूर्ण विश्व को जगमगा रहा था। आकाश में टिमटिमाते तारे भी मानो महल के बाहर वाले बाग में बैठे अलादीन तथा शहजादी के मिलन पर प्रसन्नता के साथ चमक रहे थे। वातावरण में एक अजीब-सी मस्ती, अजीब-सा नशा व्याप्त था।

अलादीन की बांहें शहजादी की पतली कमर के इर्द-गिर्द लिपटी थीं। शहजादी ने अपना सिर अलादीन के चौड़े सीने पर रखा हुआ था। अलादीन ने शहजादी के होठों पर एक मद-भरा चुंबन अंकित किया तथा शहजादी की कमर में अपनी बांहों का घेरा तंग करता हुआ बोला—"शहजादी?"

"हूं।"

प्यार में खोई शहजादी ने प्यार से हुंकारा।

"काश कि सुबह न हो, हम दोनों यूं ही एक-दूसरे की बांहों में बांहें डाले सदियों तक प्यार में खोए रहें। हमें कोई भी एक-दूसरे से जुदा करने वाला न हो।"

"मेरी भी यही मनोकामना है मेरे सरताज।"

कहकर शहजादी ने अपने सरताज के चौड़े सीने में अपना चेहरा छुपा लिया।

"प्यारी नूरमहल, चांद की दूधिया चांदनी भी तेरी खूबसूरती के सामने फीकी नजर आ रही है।"

अलादीन के शब्दों में भी एक नशा था—"ऐसा लग रहा है जैसे समूची चांदनी ही सिमटकर मेरी बांहों में आ गई हो।"

शहजादी का चेहरा शर्म से लाल था। वह बोली—"मुझे इतना सुंदर कहकर शर्मिंदा न कीजिए मेरे सरताज।"

"इसमें शर्मिदा होने जैसी कोई बात नहीं है नूरमहल, वाकई तुम इतनी सुंदर हो कि शायद चांद भी तुम्हें देखकर शरमा रहा होगा।"

बाग में अनेक प्रकार के पक्षी इधर-उधर घूम रहे थे, जो बाग की सुंदरता में चार-चांद लगा रहे थे। हीरों और जवाहरातों से निकलती रंग-बिरंगी रोशनी बाग में चारों ओर फैली थी। इस मादकता भरे वातावरण में दोनों प्रेमी एक-दूजे के हो गए।

सुबह होने के बाद अलादीन ने एक शानदार दावत का प्रबंध किया। दावत में बादशाह, उनके वजीर और मंत्री इत्यादि को भी आमंत्रित किया गया। अलादीन ने खाना बनाने वाले लखनऊ से तथा खाने का स्वाद बनाने वाले चीन से बुलाए थे। इन सभी को जिन्न ने बुलाया था।

शाम तक सभी आमंत्रित लोग अलादीन के महल में इकट्ठा हो गए। बावर्ची खाना बनाने में जुट गए। शहर के तमाम रईस लोगों को आमंत्रित किया गया था। सभी आए। बादशाह की सवारी शाम के वक्त महल के द्वार पर पहुंची। अलादीन के दोस्त बने जिन्न ने बादशाह को 21 तोपों की सलामी दी। बादशाह और अन्य मंत्रिगण अलादीन के ठाट-बाट देखकर अति प्रसन्न तथा अत्यधिक प्रभावित हुए। ऐसा शानदार महल बादशाह या किसी अन्य ने कभी नहीं देखा था। प्रत्यक्ष की तो बात अलग, सपनों मे भी किसी ने ऐसे महल की कल्पना तक नहीं की थी। जो महल को देखता, हतप्रभ रह जाता। महल की सुंदरता का बखान जुबान खुद-ब-खुद करने लगती थी। लोगों की प्रशंसा पर अलादीन बहुत प्रसन्न था।

रात के समय भोजन का समय हुआ। जिस वक्त भोजन परोसा गया, तो लोग पुनः आश्चर्यचकित रह गए, क्योंकि अलादीन ने 82 तरह के पकवान लोगों को दावत में परोसे थे और भोजन भी इतना स्वादिष्ट था कि लोगों को अपनी उंगलियां चाटने से फुर्सत नहीं मिल रही थी। स्वाद का ऐसा कमाल था कि लोग आवश्यकता से भी अधिक खाना खा गए। खाना खाते जाते और 'वाह-वाह' करते जाते।

अगले दिन सुबह अलादीन ने बादशाह से अनुरोध किया कि वे उसका महल भी देख लें कि महल कैसा बना है?

बादशाह ने अलादीन का अनुरोध स्वीकार किया तथा अपने मंत्रीगण को साथ लेकर महल के एक-एक कमरे की सुंदरता देखने लगे। मंत्रिगण तथा स्वयं बादशाह भी महल के कमरों की सुंदरता देखकर हतप्रभ थे। सभी ने

महल की सुंदरता की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इसी प्रकार घूमते-घूमते सभी एक-एक कमरे को देखते हुए बाहर वाले बरामदे में पहुंचे। बरामदे की सुंदरता भी अद्भुत थी। बरामदे की सुंदरता व सजावट देख सभी दंग रह गए। बरामदे में अनेक दरवाजे थे और उन दरवाजों पर हीरे-जवाहरातों की ऐसी सजावट थी कि कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। अचानक बादशाह की नजर एक दरवाजे पर पड़ी। वह दरवाजा साधारण था। उस पर हीरे-जवाहरातों की सजावट नहीं थी। बादशाह ने आश्चर्य-भरे स्वर में अलादीन से कहा—"कमाल है, सभी दरवाजों की सजावट अनोखी है, परंतु इस एक दरवाजे को खाली क्यों छोड़ दिया गया? मैं कुछ समझा नहीं।"

"बादशाह सलामत, मेरा दोस्त दरअसल इस पर हीरे-जवाहरात जड़वाना भूल गया था।" अलादीन ने जवाब दिया—"फिर मैंने सोचा, चलो कोई बात नहीं, मैं इसे बादशाह सलामत से ही जड़वा लूंगा।"

सुनकर बादशाह ने अपने वजीर को आदेश दिया—"वजीर जी, शाम तक यह दरवाजा पूरा हो जाना चाहिए। इसके लिए जितने भी हीरे-जवाहरातों की आवश्यकता पड़े, हमारे शाही खजाने से निकलवा लें। शाम को मैं यह दरवाजा दोबारा देखूं तो तब तक यह दरवाजा बाकी दरवाजों के समान सुंदर बन जाना चाहिए।"

वजीर ने सिर झुकाकर बादशाह का आदेश माना।

इसके बाद बादशाह अपने महल चले गए। वजीर कारीगरों को एवं सामान लेकर वापस अलादीन के महल पहुंचा। कारीगरों को उसने दरवाजा पूरा करने का आदेश दिया। कारीगर अपने काम में जुट गए, परंतु बादशाह के खजाने के सभी हीरे-जवाहरात लग जाने के बाद भी वह दरवाजा पूरा नहीं हुआ। वजीर बहुत चिंतित हो गया।

यह देखकर अलादीन ने वजीर से कहा—"आप अपना सभी सामान हीरे-जवाहरात ले जाएं। कल आकर आप इस दरवाजे को पुनः देखें। मैं रात-भर में इसे पूरा करा दूंगा।"

यह सुनकर ईर्ष्या के मारे वजीर जल-भुनकर कोयला हो गया, परंतु वह कुछ कर नहीं सकता था। अपमानित-सा वह वापस बादशाह के पास लौट गया। बादशाह को उसने सारी बात बताई। वजीर सोच रहा था कि शायद बादशाह अलादीन के कथन पर नाराज होंगे, परंतु ऐसा नहीं हुआ, बल्कि बादशाह ने हंसकर कहा—"कोई बात नहीं, हमें उम्मीद है कि वह सुबह तक

दरवाजा पूरा अवश्य करा लेगा। हम सुबह ही वह दरवाजा देखने जाएंगे।"

बादशाह के मुख से अलादीन की प्रशंसा सुनकर वजीर के तन-बदन में आग लग गई। मन-ही-मन वह अलादीन को कोसता हुआ वहां से चला गया।

उधर वजीर के जाने के बाद अलादीन ने चिराग घिसकर जिन्न को बुलाकर कहा—"सुबह तक इस दरवाजे को भी बाकी दरवाजों की तरह हीरे-जवाहरातों से जड़ दो, परंतु इस दरवाजे में दुनिया के बेशकीमती हीरे लगाना।"

जिन्न ने अपना काम कर दिया।

सुबह बादशाह पुनः अलादीन के महल में पहुंचे। अलादीन ने उनका स्वागत किया। बादशाह ने सबसे पहले वह खाली दरवाजा देखने की इच्छा जाहिर की। अलादीन की अगुआई में बादशाह बरामदे में पहुंचे और उस दरवाजे को देखकर हत्प्रभ रह गए। वह दरवाजा जो कल तक एकदम खाली था। आज उस पर बेशकीमती हीरे-जवाहरातों की सजावट शोभायमान थी। बादशाह अलादीन तथा शहजादी को दुआएं देता हुआ चला गया।

अब अलादीन तथा शहजादी की जिंदगी बड़े मजे के साथ कटने लगी। किसी भी चीज की कमी नहीं थी उनके पास। इसी प्रकार समय बीतने लगा।

दूसरा भाग
जादूगर का खतरनाक खेल

उधर वह जादूगर जो अलादीन का नकली चाचा बना था तथा अलादीन को गुफा में बंद करके भाग गया था। दरअसल अफ्रीका का खतरनाक जादूगर था। वह यह सोचकर चुपचाप बैठा था कि अलादीन तो अब तक गुफा में दफन होकर मर-खप गया होगा, क्योंकि वह कभी भी उस गुफा से बाहर नहीं निकल सकता। अलादीन की वजह से उसकी योजना सफल न हो सकी थी, परंतु उसने अलादीन को गुफा में कैद कर दिया था। वह इसी बात से संतुष्ट था, अतः उसने कभी उस ओर ध्यान नहीं दिया।

एक दिन उस जादूगर ने यूं ही सोचा कि देखूं भला अब अलादीन का गुफा में बंद रहकर क्या हाल है? जिंदा भी है या वहीं मर-खप गया है?

जादूगर ने अपने जादू से अलादीन को देखा। अलादीन इस समय शहजादी नूरमहल के साथ अपने महल में मौज-मस्ती कर रहा था। अलादीन के ठाट-बाट देखकर जादूगर जल-भुनकर कोयला हो गया। वह तो सोच रहा था कि अलादीन अभी तक उसी गुफा में बंद होगा और गुफा में ही मर चुका होगा, परंतु यहां तो मामला ही उल्टा है। अलादीन तो एक शहजादी के साथ महल में बैठा मौज-मस्ती कर रहा है। जादूगर जानता था कि अलादीन आवारा और फटेहाल लड़का था। उसकी योजना असफल करके अलादीन खुद किसी बादशाह की तरह मौज-मस्ती करे, यह बात जादूगर को गवारा न थी। उसने उसी पल अलादीन से बदला लेने का निर्णय लिया और अपने जादुई घोड़े पर सवार होकर हवाई मार्ग से अलादीन से बदला लेने निकल पड़ा। उसके जादुई घोड़े की गति बहुत तेज थी।

जादुई घोड़े की गति इतनी तेज थी कि जादूगर कुछ ही घंटों में अफगानिस्तान पहुंच गया। वहां उसने एक सराय दस दिन के लिए किराए पर ली तथा वहीं रहकर अलादीन से बदला लेने के लिए नई-नई तरकीबें बनाने लगा। उसे अपने ऊपर पूरा भरोसा था कि दस दिनों में वह अपना काम पूरा कर लेगा। अलादीन की ख्याति चारों ओर थी। जादूगर को

अलादीन का इतना धनी तथा रुतबेदार होना एक आंख नहीं सुहा रहा था।

उधर अलादीन अपनी दयालुता के कारण काफी प्रसिद्ध हो चुका था। उसकी दिनचर्या थी कि वह रोज सुबह अपने शानदार रथ पर सवार होकर शहर के लिए निकलता तथा जो भी व्यक्ति उसे मिलता, वह दिल खोलकर उसे दान-दक्षिणा में अशर्फियां ही अशर्फियां लुटा देता। पूरे दिन वह इसी तरह दोनों हाथों से धन लुटाता और गरीबों की मदद करता। अलादीन ने शहर में अनेक स्थानों पर सराय, वैद्यखानें इत्यादि बनवा दिए थे, जिससे कि गरीब लोग उनसे फायदा उठा सकें। अनेक स्थानों पर उसने कुएं भी खुदवाए। जो भी व्यक्ति परेशान हाल अपनी परेशानी लेकर अलादीन के पास जाता, अलादीन उसी क्षण उसकी परेशानी दूर कर देता था। अपनी इसी आदत के कारण अलादीन पूरे अफगानिस्तान में प्रसिद्ध हो चुका था तथा आम जनता का चहेता भी बन चुका था।

चूंकि अलादीन को अब किसी भी प्रकार की चिंता नहीं थी, अतः वह पूरी मौज-मस्ती में रहता। दिन भर गरीबों की मदद करता था। कभी-कभी वह शिकार खेलने तथा दूसरे देशो की सैर करने भी चला जाता था।

एक दिन अलादीन की इच्छा शिकार खेलने की हुई। उसने शहजादी को बुलाया और कहा—"मेरी प्यारी शहजादी, आज मेरी इच्छा हो रही है कि मैं शिकार खेलने जाऊं। अगर तुम अनुमति दो तो मैं चला जाऊं। नहीं दोगी तो मैं तुम्हारी जुल्फों में कैद होकर यहीं पड़ा रहूंगा।

शहजादी ने शोखी भरी मुस्कान के साथ कहा—"यदि आपकी इच्छा शिकार खेलने की हो रही है, तो आप जाइए। आपको भला कौन रोक सकता है, परंतु मेरी एक प्रार्थना है कि शिकार खेलकर आप जल्दी लौट आइएगा। वर्ना इस महल में आपके बिना मेरा एक पल के लिए भी दिल नहीं लगेगा।"

आगे बढ़कर अलादीन ने शहजादी नूरमहल के गोरे एवं कोमल गालों पर एक चुंबन अंकित किया और बोला—"घबराओ मत प्यारी शहजादी, मैं तो खुद भी तुम्हारे बिना नहीं रह सकता, अतः मैं जल्द-से-जल्द लौटने की कोशिश करूंगा और लौटकर तुम्हारी कोमल बाहों में कैद होकर सो जाऊंगा।"

थोड़ी देर बाद अलादीन अपने घोड़े पर सवार होकर सभी साजो-सामान सहित शिकार के लिए रवाना हो गया। इधर अलादीन शिकार के लिए रवाना हुआ, उधर जादूगर ने जादू के बल पर जान लिया कि इस समय अलादीन शिकार पर जा रहा है। महल में शहजादी अकेली ही होगी। जादूगर को तो

इसी समय की प्रतीक्षा थी। जादू के बल पर उसने यह भी पता लगा लिया कि जादुई चिराग इस वक्त महल के कमरे में रखी एक अलमारी मे बंद है। चिराग की स्थिति जानने के बाद जादूगर उसे प्राप्त करने के विषय में सोचने लगा। काफी देर सोचने के बाद उसे एक तरकीब सूझी। वह तुरंत बाजार पहुचा और बाजार मे भिन्न-भिन्न प्रकार के रंग-बिरंगे चिराग खरीद लाया। उसके बाद उसने फेरी वाले का भेष बनाया और उन चिरागों को एक टोकरी में रखकर सीधे अलादीन के महल के दरवाजे पर पहुंचा। वहां पहुचकर उसने आवाज लगाई—"चिराग ले लो चिराग। पुराने चिराग से नया चिराग बदल लो, घर का पुराना चिराग लाओ और नया चमचमाता चिराग ले जाओ।"

वह बार-बार यही आवाज लगाता रहा। वह चाहता था कि शहजादी उसकी आवाज सुने तथा बाहर आए।

शहजादी नूरमहल तक तो उसकी आवाज न पहुंच सकी, परतु महल की एक नौकरानी ने उसकी आवाज सुन ली। वह तुरंत शहजादी के पास पहुचकर बोली—"शहजादी आप कहती थीं कि इस दुनिया मे अब सभी बुद्धिमान ही हैं, परंतु मै कहती हूं कि दुनिया में अब भी मूर्खों की कोई कमी नहीं है।"

"यह तुम कैसे कह सकती हो?" शहजादी ने पूछा।

"बाहर एक मूर्ख फेरी वाला चिल्ला रहा है।" नौकरानी बोली—"कह रहा है कि पुराने चिराग के बदले में एकदम नया चिराग लो। आप ही बताइए, क्या वह फेरी वाला मूर्ख नहीं है?"

"ऐसा कैसे हो सकता है? मै विश्वास नहीं करती।" शहजादी भी हैरान थी।

"अगर आप मेरी बात का विश्वास न करें तो न सही, परतु एक बार उसकी आवाज को ध्यान से सुने।"

उसी समय बाहर से जादूगर चिल्लाया—"पुराना चिराग दो और नया चिराग लो।"

शहजादी आश्चर्यचकित रह गई। वह बोली—"तेरी बात तो सच निकली। एक काम करते हैं। इस फेरी वाले की परीक्षा लेते हैं।"

"परीक्षा? वह कैसे?" नौकरानी ने पूछा।

"उस अलमारी के अंदर एक पुराना चिराग पड़ा है।" शहजादी बोली—"तू उसे ले जा और बदले में नया चिराग ले आ।"

नौकरानी ने तुरंत अलमारी से चिराग निकाला और फेरी वाले के पास पहुंच गई। फेरी वाला बना जादूगर तो इसी ताक में था। नौकरानी के हाथ



में चिराग देखकर उसकी आंखें चमकने लगीं। वह इस चिराग को लाखों पहचान सकता था। उसने तुरंत नौकरानी के हाथ से जादुई चिराग लिया औ उसे एक नया चिराग दे दिया।

नौकरानी चिराग लेकर खुशी से झूमती हुई शहजादी के पास पहुंची औ बोली—"ये देखिए शहजादी, उस मूर्ख फेरी वाले ने उस पुराने चिराग बदले मुझे नया चिराग खुशी-खुशी दे दिया।"

शहजादी भी नए चिराग को देखकर प्रसन्न थी। वह भी उस फेरी वाले व मूर्खता पर हंसने लगी। फिर शहजादी ने वह नया चिराग उसी अलमारी रख दिया, जिसमें अलादीन ने जादुई चिराग रखा हुआ था।

उधर वह जादूगर जादुई चिराग पाकर बहुत प्रसन्न था। वह चिराग लेक सीधा सराय पहुंचा। सराय पहुंचते ही उसने चिराग घिसा। चिराग घिसते तत्काल चिराग का जिन्न प्रकट हुआ और बोला—"क्या हुक्म है मे आका?"

"क्या तुम मेरा हुक्म मानोगे? क्या तुम मेरे गुलाम हो?"

"हां मेरे आका, जिसके पास यह चिराग रहता है, मैं उसका गुलाम हो हूं। पहले यह अलादीन के पास था तो मैं अलादीन का गुलाम था। अब य चिराग आपके पास है तो मैं आपका गुलाम हूं। आप मुझे कोई भी हुक्म मैं उसे पूरा करूंगा।"

यह सुनकर जादूगर बड़ा प्रसन्न हुआ। वह जिन्न से बोला—"ठीक फिर तुम अलादीन का महल उठाकर अभी और इसी समय मेरे घर अफ्रीव ले चलो।"

जादूगर तुरंत अलादीन के महल में पहुंचा और अंदर जाकर फाटक प कर गया। जिन्न जमीन के अंदर घुसा और अलादीन के महल को अपने कं पर उठाकर अफ्रीका की ओर उड़ चला। अफ्रीका पहुंचने में जिन्न को कु ही समय लगा। यह सब इतनी जल्दी हुआ कि शहजादी को इसका आभा तक न लगा। वह नहीं जानती थी कि अब वह अफगानिस्तान से हजारों मी दूर अफ्रीका पहुंच गई है। शहजादी तो अपने कमरे में पलंग पर बैठी खामो के साथ अलादीन की तस्वीर को निहार रही थी। वह अलादीन के लौटने व बड़ी बेचैनी से प्रतीक्षा कर रही थी। बाहर का दरवाजा भी उसने खुला छो रखा था, क्योंकि इस महल में किसी बाहरी व्यक्ति के घुसने की सख्त मना थी।

अचानक एक भयानक शक्ल का व्यक्ति कमरे के अंदर आया। शहजादी ने आहट सुनकर उधर देखा, उसने सोचा शायद उसका हमदम अलादीन शिकार से लौट आया है, परंतु दरवाजे पर एक भयानक शक्ल के व्यक्ति को देखकर वह क्रोधित हो उठी और क्रोध से उस व्यक्ति को डपटकर कहा—"कौन गुस्ताख है तू, जो बिना हमारी आज्ञा के हमारे कमरे में चला आया है?"

जादूगर बेशर्मी के साथ ठहाके लगाता हुआ बोला—"मैं तुम्हारा बहुत पुराना आशिक हूं शहजादी।"

"बदतमीज?" क्रोध से फुंफकारती शहजादी ने 'तड़ाक' से एक तमाचा जादूगर के भद्दे गाल पर दे मारा। जादूगर के बेबाक वाक्य ने उसे क्रोधित कर दिया था।

परंतु तमाचा लगने के बाद भी जादूगर पर कोई असर न हुआ। वह उसी प्रकार बेशर्मी से हंसता हुआ बोला—"आपने मुझे तमाचा मारा, परंतु मुझे ऐसा लगा जैसे किसी ने फूल मारा हो।"

शहजादी जादूगर की इस बदतमीजी पर हतप्रभ थी। वह सोच भी नहीं सकती थी कि कोई बदसूरत व बदतमीज व्यक्ति उसके कमरे में घुसकर उसके साथ बदतमीजी भी कर सकता है? शहजादी ने क्रोध से फुंफकारते हुए कहा—"निकल जा इस कमरे से, वर्ना मेरा पति आ गया तो वह तुझे जान से मार डालेगा। तेरी भलाई इसी में है कि तुरंत यहां से भाग जा।"

यह सुनकर जादूगर ने पुनः अट्टहास लगाया और बोला—"तेरा पति, वह अलादीन! उस उल्लू के पट्ठे को भूल जा शहजादी। अलादीन तो बेचारा अफगानिस्तान के जंगलों में अभी तक अपना सिर टकराता फिर रहा होगा। शायद तुम्हें मालूम नहीं है शहजादी कि तुम इस समय अफगानिस्तान में नहीं, बल्कि अफ्रीका में हो। अलादीन कभी भी यहां तक नहीं पहुंच सकता, क्योंकि अलादीन को तो क्या, उसके फरिश्तों को भी मालूम नहीं होगा कि उसका महल तथा उसकी खूबसूरत बीवी इस समय अफ्रीका में हैं।"

"क्या? मैं इस समय अफ्रीका में हूं? क्या बकते हो?"

"मैं बक नहीं रहा हूं शहजादी, बल्कि सच्चाई बयान कर रहा हूं।" जादूगर क्रूरता के साथ बोला—"तुम इस वक्त मेरे कब्जे में हो। अगर तुमने यहां से भागने की कोशिश की तो मारी जाओगी।"

शहजादी ने झटके से खिड़की खोली और यह देखकर हैरान रह गई कि

सचमुच बाहर का दृश्य बदला हुआ था। शहजादी आश्चर्यचकित हो दूर-दूर तक फैले अथाह रेत के ढेर को देख रही थी। चारों तरफ रेत-ही-रेत फैला हुआ था। सूरज की गर्मी में तपता रेत।

शहजादी की तरफ देखकर जादूगर क्रूर मुस्कान के साथ बोला—"क्या अब भी तुम्हें यकीन नहीं आ रहा कि तुम अफगानिस्तान में नहीं, बल्कि अफ्रीका में हो?"

"या अल्लाह, अब क्या होगा?" शहजादी का दिमाग अंधकार में डूबने लगा और वह बेहोश होकर वहीं गिर पडी।

अलादीन का वियोग

उधर अफगानिस्तान में हाहाकार मचा हुआ था। चारो ओर एक ही शोर मच रहा था कि अलादीन का विशाल महल गायब हो गया है। पूरा शहर हत्प्रभ था कि भला अलादीन का महल अचानक कहां गायब हो गया। हर किसी की जुबान पर एक ही प्रश्न था कि अलादीन का महल गया तो गया कहां, परंतु जवाब नदारद था।

कल तक जहां विशाल महल खड़ा था, इस समय वहां गाय-भैंस चर रही थीं। पूरा मैदान सपाट हो गया था। बादशाह के दरबार में भी तुरंत यह बात पहुंच गई। वे भी हत्प्रभ रह गए। सभी सोच रहे थे कि महल अचानक गायब कैसे हो गया? बादशाह का बुरा हाल था। वह शहजादी नूरमहल को याद करके आंसू बहा रहा था। दुष्ट वजीर ने सोचा कि यही समय है, बादशाह को अलादीन के खिलाफ भड़का दिया जाए। उसे अलादीन से चिढ़ थी। अब उसे अलादीन से बदला लेने का एक सुनहरा मौका मिल गया था। वजीर बादशाह से अलादीन की बुराई करते हुए बोला—"मुझे तो अलादीन पर पहले से ही शक था बादशाह सलामत। वर्ना अचानक इतनी संपत्ति भला किसे मिलती है। यह सब अलादीन ने जादू के बल पर प्राप्त किया होगा। ज़ब उसका जादू खत्म हो गया तो महल भी गायब हो गया। हमारी शहजादी की जान तो अब गई समझिए, क्योंकि वह महल और शहजादी अब कभी वापस नहीं आ सकेंगे।"

"अलादीन से अपनी मासूम शहजादी की शादी करके तो मैं भी पछता रहा हूं।" बादशाह ने आंसू पोंछते हुए कहा—"अगर हमें वह धोखेबाज अलादीन मिल जाए तो हम उसे छोड़ेंगे नहीं। उसे बंदी बनाकर कारागार में डाल देंगे।"

"अगर आप हुक्म दें तो मैं अलादीन को तलाश कराने की कोशिश करूं?"

"तलाश की कोशिश नहीं, बल्कि उसे कहीं से भी तलाश करके हमारे सामने पेश करो।" बादशाह क्रोधित होकर बोले—"फौज के हर सिपाही को आदेश दे दिया जाए कि वे अलादीन को कहीं से भी तलाश करके लाएं। चाहे अलादीन पाताल में ही क्यों न छुपा हो, उसे जल्द-से-जल्द हमारे सामने पेश करो।"

बादशाह का आदेश पाते ही चारों तरफ अलादीन की तलाश की जाने लगी। चारो दिशाओं में सैनिक फैल गए। सभी का एक ही काम था, अलादीन की तलाश करना।

उधर अलादीन शहजादी के ख्यालों में खोया, शिकार से वापस लौट रहा था। इस समय वह बहुत प्रसन्न था और उसे शहजादी से मिलने की बहुत ही उत्सुकता थी।

अचानक रास्ते में बादशाह के सिपाहियों ने अलादीन को चारों तरफ से घेर लिया।

जब सिपाही उसे गिरफ्तार करने लगे तो वह हैरान रह गया और सिपाहियो से बोला—"अरे-अरे, यह क्या कह रहे हो? क्या तुम जानते नहीं कि मै अलादीन हूं? यहां का होने वाला बादशाह।"

"जादू के बल पर कोई बादशाह नही बन सकता श्रीमान।" एक सिपाही ने हंसकर कहा—"आपका जादू समाप्त हो चुका है। आपका वह शानदार महल शहजादी सहित वहां से गायब हो चुका है। अब वहां पर गाय-भैंसे चर रही हैं। बादशाह शहजादी के गम में रो-रोकर पागल से हो चुके हैं। चारों दिशाओ में आपकी ही तलाश की जा रही है।"

सिपाही की बात सुनकर अलादीन सन्न रह गया। सिपाही की बात पर उसे तनिक भी विश्वास नहीं हो रहा था। वह बेहद अचम्भित था।

स्वतः ही उसके मुख से निकल गया—"य...यह कैसे हो सकता है?"

"ऐसा ही हुआ है श्रीमान।" सिपाही बोला—"ये कोई कहानी नहीं, बल्कि सच्चाई है। बादशाह ने हमें आदेश दिया है कि अलादीन को कहीं से भी तलाश करके लाओ और फांसी पर लटका दो।"

"ठीक है, दरबार में जाकर सब पता लग जाएगा।"

फिर सिपाहियों ने अलादीन को गिरफ्तार कर लिया और बांधकर बादशाह के पास चल दिए।

अलादीन को दरबार में पेश किया गया। उसे रस्सियों से बांधा हुआ था। दरबार खचाखच भरा हुआ था। अलादीन की हालत पतली थी। सरेआम बेइज्जती तथा शहजादी से वियोग के गम में वह आंसू बहा रहा था। वह यह सोच-सोचकर परेशान था कि न जाने शहजादी इस समय किस हाल में और कहां होगी?

अलादीन को देखकर बादशाह ने क्रोध से उबलते हुए कहा—"अगर



अपनी जान की सलामती चाहते हो तो हमे बता दो कि तुम्हारा वह महल और शहजादी कहां गायब हो गए हैं? अगर नहीं बताओगे तो हम तुम्हारी जान ले लेंगे।"

"मैं कुछ नहीं जानता।" अलादीन मायूसी भरे स्वर में बोला—"मैं तो उस समय शिकार पर गया हुआ था। मुझे स्वयं नहीं मालूम कि मेरे पीछे मेरा महल और शहजादी अचानक कहां गायब हो गए? मैं तो स्वयं शहजादी के गम में पागल-सा हो चुका हूं।"

बादशाह ने जब यह सुना तो उसका पारा सातवें आसमान पर पहुंच गया। क्रोध से फुंफकारते हुए उन्होंने फैसला दिया—"मेरी मासूम बेटी की जान इसी कमबख्त की वजह से गई है, अतः मैं इसे मौत की सजा का हुक्म देता हूं। कल सुबह इसकी गर्दन इसके धड़ से अलग कर दी जाए।"

आदेश देकर बादशाह क्रोध से पैर पटकता हुआ वहां से चला गया। अलादीन बेचारा कुछ कह भी न सका। वह तो बस अपनी किस्मत पर आंसू बहाए जा रहा था।

'उफ्फ! मेरी शहजादी न जाने किस हाल में होगी? काश मैं मरने से पूर्व उसकी एक झलक देख सकता।' उसने दिल-ही-दिल मे खुदा को याद किया—'या खुदा, प्यार करने वालो का तू यह कैसा इम्तिहान ले रहा है? प्यार करने वालो को इस तरह जुदा करके क्यों मारता है तू? यदि यह सब करना ही था तो हमारे दिलों को मिलाया ही क्यों? हमारे दिलों को एक न करता तो अच्छा होता। यूं तड़प-तड़पकर तो नहीं मरना पड़ता। हाय! मेरी शहजादी न जाने किस हाल में होगी।'

अलादीन को पूरी रात शहजादी की याद सताती रही। वह रात-भर आंसू बहाता रहा।

सुबह होने लगी तो अलादीन ने सोचा—'जब मरना ही है तो यूं रो-रोकर मरने से क्या फायदा? खुशी-खुशी अल्लाह को याद करके क्यों न मरूं। कुदरत के खेल तो निराले होते हैं। पहले कुदरत ने मुझे आवारा बनाया। फिर धन-दौलत और एक खूबसूरत बीवी दी और अब कुदरत ही ने मुझे रुलाया है। शायद यह भी कुदरत का कोई निराला खेल हो।'

अंत में अलादीन ने निर्णय किया कि वह हसते-हंसते फांसी पर झूल जाएगा। दुनिया के मोहपाश से निकलकर अब उसे शांति से मरना चाहिए। शायद किस्मत में यही होना लिखा था। यह सोचकर अलादीन ने संतोष की

सांस ली और खुदा को याद करने लगा। उसने दुआ की कि या अल्लाह मरने के बाद मेरी आत्मा को शांति देना।

उधर अलादीन को फांसी की सजा देने की खबर सारे शहर में जंगल में आग की तरह फैल गई। लोगों को बादशाह के निर्णय पर अत्यधिक आश्चर्य हुआ। धन पानी की तरह बहाने वाला अलादीन सारे शहर में प्रसिद्ध था। शहर की आम जनता की भांति, नेताओं की भी हमदर्दी अलादीन के साथ थी। कोई नहीं चाहता था कि उनका चहेता अलादीन फांसी पर झूले। बादशाह का फैसला किसी को भी पसन्द नहीं था। शहर के सभी प्रमुख व्यक्तियों ने रातोंरात निर्णय किया कि अलादीन को फांसी नहीं दी जानी चाहिए। बेवजह एक अच्छे आदमी की जान लेना कोई इंसाफ वाला काम नहीं है। बादशाह को अलादीन के साथ नरमी से पेश आना चाहिए, फिर सभी ने यह प्रस्ताव पारित किया कि सुबह होते ही महल के सामने एक बड़ा प्रदर्शन किया जाए। यदि बादशाह ने अलादीन को नहीं छोड़ा तो शहर की ईट से ईट बजा दी जाएगी।

सुबह होने से पहले ही प्रदर्शनकारी महल के सामने वाले मैदान में जमा हो गए। उनकी संख्या हजारों में थी। सभी ने एक ही स्वर में नारा लगाना आरंभ किया—"यह न्याय नहीं, अन्याय है।"

"अलादीन को छोड़ दो।"

"यदि उसे नहीं छोड़ा गया तो हम जग लड़ेगे।"

"बादशाह न्याय करो।"

"हम अन्याय नहीं सह सकते।"

"बादशाह का निर्णय गलत है।"

"बादशाह अपना निर्णय बदलो।"

प्रदर्शनकारियो की संख्या बढ़ती ही जा रही थी। उनके नारों से आकाश गूंजने लगा। प्रदर्शनकारियों की संख्या को देखकर लगता था मानो सारा शहर यहीं आ गया हो। नारों की आवाजें बुलंद होती जा रहीं थीं।

"अलादीन को छोड़ दो, नहीं तो हम महल जला डालेंगे।"

"अलादीन को छोड़ दो, नहीं तो हम शहर जला डालेंगे।"

प्रदर्शनकारियों का जमघट देखकर बादशाह के माथे पर चिंता की लकीरे उभर आई। वह प्रदर्शनकारियों के उग्र व्यवहार को देख रहे थे। उन्हें लगा कि यदि अलादीन को छोड़ा नहीं गया तो ये लोग सचमुच वह कर डालेंगे, जो कह रहे हैं, शायद शहर में बगावत भी फैल जाए।

यह सोचकर बादशाह ने उन प्रदर्शनकारियों के सामने ऐलान कराया—"मैं आप सभी लोगों के कहने पर अलादीन को रिहा कर देता हूं, परंतु ये भी आदेश देता हूं कि अलादीन रिहा होने के तुरंत बाद यह देश छोड़कर चला जाए। अगर वह हमारी बेटी की तलाश करके ले आएगा। तो उसे यहां रहने की इजाजत मिल सकती है। अगर वह हमारी बेटी को न ला सका और पुनः इस देश में नजर आया तो उसका सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा।"

बादशाह के निर्णय का सभी प्रदर्शनकारियों ने स्वागत किया। सभी अपने-अपने घरो की तरफ चल दिए। अलादीन को रिहा कर दिया गया। साथ ही बादशाह का यह आदेश भी सुना दिया गया कि वह तुरंत यह देश छोड़कर चला जाए, यदि वह दोबारा कहीं नजर आया तो उसे मार दिया जाएगा।

शहजादी के गम में अलादीन की हालत पागलों जैसी हो गई थी। महीनों का बीमार नजर आने लगा था वह। वह पागलों की भांति शहजादी का नाम पुकारता हुआ जंगलों में भटकने लगा। उसकी दशा पागलों की भांति हो चुकी थी। अंजान लोग उसे पागल ही समझते थे।

अलादीन की जीत

अलादीन शहजादी के गम में पागल हो चुका था। उसके बदन के कपड़े जगह-जगह से फट चुके थे। बाल, दाढ़ी सब बढ़ चुके थे। सारा शरीर धूल-मिट्टी से अटा पड़ा था। यहां तक कि वह सूखकर कांटा हो चुका था, क्योंकि खाने-पीने की उसे कोई सुध नहीं थी। बस रात-दिन शहजादी का नाम ले-लेकर जंगलों में भटकता रहता।

उसकी हालत दयनीय हो चुकी थी। अब उसे कोई भी पहचान नहीं सकता था कि यह वही अलादीन है, जो दोनों हाथों से धन लुटाया करता था। जिसके कदमों तले कभी धन पड़ा रहता था। आज वह भिखारी जैसा लगता था। उसकी शक्ल देखकर बच्चे डरकर भाग जाते थे तथा 'पागल-पागल' कहकर उस पर पत्थर फैंका करते थे।

एक दिन अलादीन एक कुएं की मुंडेर पर बैठा सोच रहा था कि वह क्या था और क्या हो गया है। इस जिंदगी से बेहतर तो मौत है। अगर मैं मर जाऊं तो इस जिल्लत भरी जिंदगी से तो छुटकारा मिल जाएगा।

यह सोचकर उसने कुएं में छलांग लगा दी। उसी क्षण जादूगर की दी हुई वह अंगूठी, जो उसे जादूगर ने गुफा में जाते वक्त दी थी, कुएं के पत्थर से टकरा गई। अंगूठी के पत्थर से टकराते ही एक धमाका हुआ और वहां एक जिन्न प्रकट हुआ। जिन्न गरजती आवाज में बोला—"क्या हुक्म है मेरे आका? आपका गुलाम आपकी सेवा में हाजिर है।"

आत्महत्या करना आसान नहीं है। ये अलादीन को तुरंत मालूम हो गया। जिन्न को देखकर उसे एक नई आशा की किरण-सी मिली। डूबते हुए वह तेज स्वर में बोला—"मैं मरना नहीं चाहता, मुझे तुरंत इस कुएं से बाहर निकालो।"

जिन्न ने तुरंत अलादीन को कुंए से बाहर खींच लिया। अब अलादीन कुएं की मुंडेर पर खड़ा था। अंगूठी का जिन्न बोला—"आत्महत्या करना तो पाप है मालिक, फिर आप ऐसा क्यों कर रहे थे?"

"आत्महत्या पाप है, यह तो मैं भी जानता हूं सेवक, परंतु क्या करूं, मेरे पास मरने के अलावा और कोई चारा भी तो नहीं है।" अलादीन ने निराशा भरे स्वर

में जिन्न को बताया—"जब किसी की जिंदगी में कोई सहारा नहीं होता तो वह ऐसा ही करता है जैसा कि मैंने किया, मेरा भी कोई सहारा नहीं है, अतः मैंने भी आत्महत्या करने की सोची।"

"आपको क्या गम है मेरे आका? आप मुझे बताएं, मैं आपका गम दूर करने के लिए अपनी जान भी दे सकता हूं।"

जिन्न की बात ने अलादीन को बहुत सांत्वना दी, उसने पूछा—"क्या तुम मुझे बता सकते हो कि मेरा महल कौन ले गया है?"

"जी हां।" जिन्न बोला—"आपका महल अफ्रीका का एक खतरनाक जादूगर ले गया है।"

"क्या तुम मुझे वहां पहुंचा सकते हो?"

"क्यों नहीं आका? अवश्य पहुंचा सकता हूं, आप मेरे कंधे पर बैठ जाइए। मैं अभी आपको वहां पहुंचा दूगा।"

"ठीक है।"

"तो फिर आइए, मेरे कंधे पर बैठ जाइए।"

अलादीन जिन्न के कंधे पर बैठ गया और जिन्न अलादीन को लेकर आकाश में उड़ चला। जिन्न काफी ऊंचाई पर उड़ रहा था।

रास्ते मे जिन्न से अलादीन ने पूछा—"क्या तुम मेरे महल को वापस मेरे देश नहीं ला सकते?"

"नहीं मालिक, यह कार्य मेरे वश का नहीं है।" जिन्न स्पष्ट बोला—"यह कार्य सिर्फ चिराग का जिन्न ही कर सकता है। मैं आपको सिर्फ आपके महल की छत पर ही उतार सकता हूं।"

"ठीक है भाई।" अलादीन बोला—"तुम मुझे मेरे महल की छत पर उतार देना। बाकी काम मै स्वयं कर लूगा।"

उधर अफ्रीका में स्थित अलादीन के महल मे वह शैतान जादूगर शहजादी के सामने खड़ा था और शहजादी की बेबसी पर ठहाके लगा-लगाकर हंस रहा था। ठहाका लगाते हुए जादूगर बोला—"तुम वाकई दुनिया में सबसे खूबसूरत हो शहजादी। तुम्हारे रूप-रंग का मैं दीवाना हो चुका हूं। मैं तुम्हें अपना बनाना चाहता हूं और बनाकर ही रहूंगा। तुम्हारे बिना अब मैं जी नहीं सकता, लेकिन तुम मेरी बात समझती ही नहीं। हर समय उस मूर्ख अलादीन को याद करके रोती रहती हो। मुझमें अलादीन से अधिक शक्ति है। मैं चाहूं तो इसी समय तुम्हें अपना बना सकता हूं, मगर नहीं। मैं तुम्हारे साथ कोई



जोर-जबरदस्ती नहीं करना चाहता। मैं चाहता हूं कि तुम अपनी मर्जी से मेरी दुल्हन बन जाओ। मैं नहीं चाहता कि तुम्हें कोई कष्ट हो और न ही यह चाहता हूं कि मुझे तुम्हारे साथ जोर-जबरदस्ती करनी पड़े।"

"लेकिन मैं तुझ जैसे दुष्ट के साथ कभी शादी नहीं करूंगी।" शहजादी ने क्रोध से बिफरते हुए कहा।

"तो तू भी कान खोलकर सुन ले।" जादूगर भड़ककर बोला—"मेरे धैर्य का बांध टूट चुका है। अब मैं तेरे बिना नहीं रह सकता। यदि आज शाम तक तूने मेरी दुल्हन बनना स्वीकार नहीं किया तो फिर तेरे साथ जबरदस्ती करने से मुझे कोई नहीं रोक सकता। मैं जैसा चाहूंगा, तेरे साथ वैसा ही बर्ताव करूंगा। कान खोलकर अच्छी तरह सुन ले, यह मेरी आखिरी चेतावनी है।"

इतना कहकर जादूगर क्रोध में पांव पटकता हुआ महल से बाहर चला गया।

शहजादी की हालत दयनीय हो चुकी थी। जादूगर ने जिस तरीके से उसे चेतावनी दी थी। उसे सुनकर शहजादी को लगा कि अब जादूगर उसे छोड़ेगा नहीं, किंतु वह नहीं चाहती थी कि वह दुष्ट जादूगर उसके शरीर को स्पर्श करे, परंतु अब शायद वह जादूगर को रोक नहीं सकती थी, अतः शहजादी ने सोचा कि अगर जादूगर के कहर से बचना है तो उसे अपनी जान देनी पड़ेगी। अगर वह मर जाती है, तभी अपनी पवित्रता को बचा सकती है। अन्यथा वह दुष्ट जादूगर उसे अपवित्र किए बिना नहीं मानेगा।

यह सोचकर शहजादी ने अंगूठी का हीरा चाटकर मर जाने का निश्चय किया। अभी वह इसी उधेड़बुन में खोई हुई थी कि छत पर आहट उभरी। आहट सुनते ही न जाने क्यों शहजादी का दिल बोल पड़ा कि उसका पति अलादीन आ गया है। वह तुरंत पागलों की भांति दौड़ती हुई छत पर जा पहुंची।

उधर अलादीन छत पर उतरने के बाद अंगूठी के जिन्न की सहायता से एक भयानक शक्ल के व्यक्ति का रूप धारण कर चुका था। उसने यह रूप जादूगर को धोखा देने के लिए धरा था। छत पर एक भयानक शक्ल के व्यक्ति को देखकर शहजादी के मुख से चीख निकल गई। वह तुरंत पलटकर भागी। तभी पीछे से आवाज आई—"भागो मत नूरमहल, ये मैं हूं, तुम्हारा अलादीन।"

आवाज सुनते ही शहजादी जहां की तहां ठिठक गई। इस आवाज को वह

नहीं है, जब तक मैं यहां हूं, तुम्हारा बाल भी बांका नहीं होने दूंगा। तुम मुझे सिर्फ इतना बताओ कि वह जादूगर चिराग को कहां रखता है?"

"चिराग को वह अपने कुर्ते की जेब में रखता है।"

अलादीन कुछ समय के लिए सोच में डूब गया। फिर थोड़ी देर बाद बोला—"तुम मेरा यहीं पर इंतजार करना। मुझे जादूगर से निबटने के लिए कुछ सामान एकत्रित करना है। मैं अभी बाजार होकर आता हूं। फिर हम दोनों यहां से भाग चलेंगे।"

"ठीक है, लेकिन जरा जल्दी लौटना, वर्ना मेरा दिल घबराएगा।"

"बस यूं गया और यूं आया।"

यह कहकर अलादीन एक ओर को चला गया। एकांत स्थान में जाकर उसने अंगूठी घिसकर अंगूठी के जिन्न को बुलाया, अंगूठी घिसते ही जिन्न प्रकट होकर बोला—"क्या हुक्म है मेरे आका?"

"मुझे तुरंत बाजार ले चलो।" अलादीन ने आदेश दिया।

कुछ ही पलों में जिन्न अलादीन को लेकर बाजार पहुंच गया। चूंकि अलादीन के बाल बहुत बढ़े हुए थे, अतः वह नाई से अपनी हजामत बनवाने बैठ गया। जिन्न अदृश्य रूप में था।

अलादीन ने कहा—"तुम एक काम करो, अफ्रीका के इस शहर में चलने वाले सिक्कों का एक थैला ले आओ। तब तक मैं हजामत बनवाता हूं।"

जिन्न तत्काल रवाना हो गया। उसने एक धनी सेठ के यहां से सिक्कों का थैला उठाया और अलादीन को जा थमाया। तब तक अलादीन भी अपनी हजामत बनवा चुका था। उन सिक्कों से अलादीन ने एक शानदार पोशाक खरीदी तथा नहा-धोकर उसे पहन लिया। अब वह वही अफगानिस्तान का युवराज अलादीन लग रहा था।

यह सब करने के बाद वह जिन्न से बोला—"अब मुझे वापस मेरे महल की छत पर पहुंचा दो।"

अलादीन के मात्र कहने की ही देर थी कि अगले ही क्षण उसने स्वयं को महल की छत पर खड़ा पाया। शहजादी बड़ी बेचैनी के साथ उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह पुनः दौड़कर अलादीन से लिपट गई। अलादीन ने अपनी जेब से एक विष की पुड़िया निकाली, जो उसने बाजार से खरीदी थी और उस पुड़िया को शहजादी को देता हुआ बोला—"यह विष की पुड़िया है शहजादी। इसे अपने पास रख लो, अब तुम्हें एक नाटक करना होगा।"

"नाटक? कैसा नाटक मेरे सरताज?"

"जब शाम को वह शैतान जादूगर तुम्हारे पास आए तो उसके सामने तुम ऐसा जाहिर करना, जैसे तुमने उसका शादी का प्रस्ताव स्वीकर कर लिया है। यह जानकर जादूगर प्रसन्न हो जाएगा। तुम जादूगर से कहना कि मैं तुम्हें अपने हाथों से शराब का जाम बनाकर पिलाना चाहती हूं। वह तुम्हें बिल्कुल भी मना नहीं करेगा, चूंकि उस वक्त मैं वहीं छुपा रहूंगा, अतः तुम्हें उससे घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है। जब वह तुम्हारे हाथ से शराब पीने लगे तो तुम यह विष शराब में मिलाकर उस जादूगर को पिला देना। बस उसका काम तमाम हो जाएगा। वैसे मेरी इच्छा है कि मैं एक बार उस जादूगर से दो-दो हाथ करूं, परंतु इस महल को भी मैं अफगानिस्तान वापस ले जाना चाहता हूं और इसके लिए यह उपाय करना बहुत आवश्यक है।"

शहजादी को अलादीन की योजना पसंद आई, अतः वह खुशी-खुशी यह नाटक करने को तैयार हो गई।

वह बोली—"अगर ऐसा है तो ठीक है मैं यह नाटक करने को तैयार हूं।"

उसके बाद अलादीन और शहजादी ने मिलकर खाना खाया और दोनों कमरे में बिछे पलंग पर लेटकर एक-दूसरे की बाहों में समा गए। दोनों एक अर्से से एक-दूसरे से अलग थे, अतः दोनों ने अपने मिलन का भरपूर फायदा उठाया। काफी देर तक उनका प्रेमालाप चलता रहा। उसके बाद शहजादी बोली—"अब आप उस अलमारी के पीछे छुप जाएं, क्योंकि नाटक करने के लिए मुझे दुल्हन का जोड़ा पहनना पड़ेगा।"

अलादीन ने सहमति से सिर हिलाया और चुपचाप अलमारी के पीछे छुप गया। शहजादी दुल्हन की पोशाक पहनने में जुट गई। कुछ देर बाद वह दुल्हन बनी पलंग पर बैठी थी। दुल्हन की पोशाक में शहजादी का सौंदर्य बेहद खिल रहा था। उसे देखकर अलादीन एक बार तो पलकें झपकाना ही भूल गया। उसके मुख से स्वतः ही निकल गया—"वाह, कितनी सुंदर लगती हो तुम दुल्हन की पोशाक में, कहीं किसी की नजर न लग जाए।"

"इस समय कुछ न कहो मेरे सरताज, जादूगर के आने का समय हो गया है।"

तभी कमरे में एक नौकरानी ने प्रवेश किया और अदब से सिर झुकाकर बोली—"महाराज पधार रहे हैं।"

सुनकर अलादीन ने फुर्ती के साथ स्वयं को अलमारी के पीछे छुपा लिया। शहजादी ने घूंघट निकाला और चुपचाप पलंग पर सिमटकर बैठ गई।

उसी समय नशे में झूमते हुए जादूगर ने कमरे में प्रवेश किया। शहजादी को दुल्हन के रूप में देखकर वह प्रसन्न होता हुआ बोला—"आखिर तुमने मेरी बात मान ही ली, अच्छा है, वर्ना आज मुझे तुम्हारे साथ बदसलूकी करनी पड़ती, जिसका मुझे दुःख होता। खैर, अब जब तुम मेरी दुल्हन बनने को तैयार हो तो मैं तुम्हें अपने दिल की मलिका बना ही लूं।"

यह कहकर जादूगर पलंग पर चढ़ गया। शहजादी तुरंत छिटककर पलंग से उतरकर बोली—"अब तो मैं आपकी हो चुकी हूं स्वामी। आपके चरणों की दासी बन चुकी हूं, इस खुशी में आप मुझे क्या इनाम देंगे?"

"जो तुम मांगोगी, वही मिलेगा।" कहकर जादूगर ने अपने हाथ से हीरे की एक अंगूठी उतारकर शहजादी को दे दी।

आज जादूगर अति प्रसन्न था। नशे में झूमता हुआ वह बोला—"आज बड़ा खुशी का दिन है, क्योंकि आज हमारी सुहागरात है। आओ हम दोनों आज शराब के नशे में डूब जाएं। आज मैं तुम्हारे कोमल और नाजुक हाथों से जाम पीकर हमेशा के लिए नशे की दुनिया में पहुंच जाना चाहता हूं। क्या तुम मुझे अपने गोरे-गोरे हाथों से ज़ाम बनाकर पिलाओगी?"

"क्यों नहीं स्वामी, अवश्य।" मन-मोहक अदा के साथ शहजादी ने शराब की सुराही और गिलास उठाकर जाम तैयार किया और जादूगर को देते हुए नशीले स्वर में बोली—"स्वामी को मेरे गोरे-गोरे हाथों का पहला जाम।"

जादूगर ने बड़े प्यार से गिलास थामा और होठों से लगाकर एक ही सांस में पूरा गिलास खाली कर दिया। शहजादी की आंखों में नफरत थी, परंतु उसने अपनी नफरत को बड़ी सफाई के साथ छुपाया और पुनः जाम तैयार करने लगी। बड़ी सफाई के साथ उसने जादूगर की नजरों से बचाकर पुड़िया का विष गिलास में मिला दिया और जादूगर को देते हुए बोली—"स्वामी के चरणों की दासी के हाथों का दूसरा प्यार भरा जाम।"

जादूगर पर नशा हावी होता जा रहा था। शहजादी की सुंदरता को वह अब तक निहारे जा रहा था। शहजादी की सुंदरता का जादू जादूगर के सिर चढ़कर बोलने लगा—"तुम्हारे रूप-यौवन में वह जादू है मेरी रानी कि बड़े-से-बड़े तपस्वी की भी तपस्या भंग हो जाए। तुम तो अफगानिस्तान की सबसे खूबसूरत गुड़िया हो।"



शहजादी ने उसे दूसरा गिलास देना चाहा तो वह बोला—"बस, अब इस नकली शराब से दिल भर गया है, अब तो मैं तुम्हारी नशीली आंखों की शराब पीना चाहता हूं। अपने यौवन का एक जाम मुझे पिला दो रानी, ताकि मैं हमेशा-हमेशा के लिए तृप्त हो जाऊं।" यह कहकर जादूगर ने शहजादी को अपनी बांहों में भर लिया और बेतहाशा शहजादी को चूमने लगा। शहजादी की नफरत उबाल पर आ गई। उसका जी चाहा कि वह इस दुष्ट का मुंह नोच ले, परंतु उसे नाटक करना अनिवार्य था। वह अपने होंठ काटने लगी, परंतु जादूगर पर उसने अपना प्यार ही जाहिर किया।

"बस, मेरे हाथों से एक जाम और पी लो स्वामी। अगर आपने यह जाम नहीं पिया तो मैं समझूंगी कि आप मुझसे प्यार नहीं करते और मैं मर जाऊंगी।"

शहजादी का वाक्य पूरा होते ही जादूगर ने अपना प्यार दिखाया और उसने शहजादी के हाथों से गिलास लिया और होंठों से लगाकर गटागट सारी शराब पी गया। जादूगर के पेट में जाते ही शराब में मिले विष ने तुरंत अपना प्रभाव दिखाना शुरू किया। जादूगर की सांसें रुकने लगीं। वह 'धड़ाम' से फर्श पर गिरा और तड़पने लगा, मगर विष इतना तेज था कि जादूगर को अधिक तड़पने भी न दिया। चंद पलों में ही उसे ठंडा कर दिया। जहां कुछ देर पहले उस जादूगर की बादशाहत थी, अब उसी स्थान पर जादूगर मृत अवस्था में पड़ा था।

जादूगर के मरते ही अलादीन और शहजादी की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। दोनों दौड़कर एक-दूसरे से लिपट गए। अलादीन ने शहजादी के गालों पर चुंबनों की झड़ी लगा दी। शहजादी खिलखिलाकर हंसने लगी। अलादीन खुशी से झूमता हुआ बोला—"वाह मेरी शहजादी, क्या खूबसूरत अभिनय किया है तुमने। जादूगर जान ही नहीं पाया कि तुम उसकी दुल्हन बनने का अभिनय कर रही हो और मारा गया।"

"यह सब तो तुम्हारी तरकीब का कमाल है मेरे सरताज।" कहकर शहजादी ने अलादीन को प्यार किया और अलादीन ने शहजादी को।

फिर अलादीन ने जादूगर की जेब फाड़कर उसमें से जादुई चिराग निकाल लिया। चिराग को उसने वहीं फर्श पर घिसा। चिराग का जिन्न तत्काल प्रकट होकर बोला—"क्या हुक्म है मेरे आका?"

"इस महल को तुरंत वहीं पहुंचा दो, जहां से तुम इसे उठाकर लाए थे।"

अलादीन का आदेश पाकर जिन्न जमीन के अंदर घुस गया। महल को उठाया और तीव्र गति के साथ अफगानिस्तान की ओर उड़ चला। थोड़ी देर



बाद जिन्न अफगानिस्तान पहुंच गया। उसने महल को पुनः उसी स्थान पर खड़ा कर दिया, जहां वह पहले खड़ा था।

अलादीन के महल के वापस आने की खबर तुरंत जंगल की आग की तरह सारे शहर में फैल गई। बादशाह के कानों तक भी यह खबर पहुंची। बादशाह ने तुरंत रथ मंगाया और उसमें बैठकर अलादीन के महल की ओर चल दिया। बादशाह के महल पहुंचने पर अलादीन ने उनका स्वागत किया। अलादीन तथा शहजादी को सही-सलामत देखकर बादशाह बहुत प्रसन्न हुए। तब अलादीन ने उन्हें सारी आपबीती कह सुनाई। सुनकर बादशाह आश्चर्यचकित रह गए। अलादीन ने बादशाह को मृत जादूगर की लाश भी दिखाई। बादशाह को अलादीन पर बहुत गर्व महसूस हुआ। उन्होंने तुरंत अपने आदमी बुलाकर जादूगर की लाश को जंगल में फेंक देने का आदेश दिया। सिपाही जादूगर की लाश लेकर चले गए। तब बादशाह ने अलादीन से कहा—"मैंने तुम्हारे साथ जो बर्ताव किया था, उसका मुझे बहुत दुःख है, उसके लिए मैं तुमसे माफी मांगता हूं।"

"माफी मांगकर आप मुझे शर्मिंदा कर रहे हैं, मैं तो आपका दास हूं।"

बादशाह ने अलादीन को गले से लगा लिया। शहजादी के सिर पर प्यार से हाथ फेरा और दोनों को आशीर्वाद देकर वहां से चले गए।

अलादीन को अपना ओहदा वापस मिल गया। समूची प्रजा भी अलादीन की वापसी पर प्रसन्न थी। बादशाह ने कई दिनों तक उत्सव मनाने का ऐलान कर दिया। जिसमें सभी प्रजा भाग ले सकेगी। अलादीन तथा शहजादी का जीवन पुनः खुशियों से भर गया। अब उन्हें किसी भी चीज की कमी नहीं थी।

कुछ समय बाद शहजादी ने एक चांद से बेटे को जन्म दिया। जिसका नाम उन्होंने बड़े प्यार से 'अशरफ' रखा। चांद-सा बेटा पाकर अलादीन तथा शहजादी के जीवन में खुशियों की बहार आ गई। उनका जीवन सुखमय गुजर रहा था, अब उन्हें कोई गम नहीं था।

तीसरा भाग
मृत जादूगर और उसका शैतान गुरु बैसूफ

उस भयानक जंगल में ना जाने कब तक शैतान जादूगर की लाश यूं ही पड़ी रही। किसी जानवर ने उसे खाने तक की कोशिश नहीं की। लाश को यूं ही पड़े एक अर्सा बीत गया।

एक रात अचानक जादूगर की लाश से कुछ दूरी पर गड़गड़ाहट के साथ जमीन फटी और जमीन में एक गुफा बन गई। गुफा से खतरनाक शक्लोसूरत का एक बूढ़ा व्यक्ति निकला। बूढ़े के चेहरे पर से हैवानियत साफ टपक रही थी। वह जादूगर की लाश के पास आया और गौर से लाश का निरीक्षण करने लगा, फिर उसने आस-पास देखा। दूर-दूर तक काजल-सा अंधकार व्याप्त था। कभी-कभार दूर कहीं किसी जानवर के बोलने की आवाज आ जाती थी। बूढ़ा व्यक्ति आगे बढ़ा और उसने मृत जादूगर की लाश को किसी रबर के बबुए की भांति उठाकर कंधे पर डाल लिया। जादूगर की लाश को आसानी से उठा लेने पर उस व्यक्ति की बूढ़ी हड्डियों की ताकत का अंदाजा हो जाता था। यकीकन वह बूढ़ा व्यक्ति अब भी शक्तिशाली था।

जादूगर की लाश को कंधे पर डालकर वह चुपचाप उसी गुफा में समा गया, जिस गुफा में से निकला था। उसके गुफा के अंदर जाते ही पुनः गड़गड़ाहट के साथ गुफा का मुंह बंद हो गया और जमीन पहले जैसी समतल हो गई। अब वहां किसी गुफा का निशान तक न था।

वह बूढ़ा व्यक्ति एक जादूगर था। मात्र जादूगर नहीं, बल्कि महाजादूगर। एक अत्यंत खतरनाक महाजादूगर। नाम था—बैसूफ। उसकी उम्र साढ़े तीन सौ वर्ष के लगभग थी।

वह महाजादूगर पाताल में एक शानदार महल बनाकर रहता था। उसने सैकड़ों शिष्य बना रखे थे। जो विश्व के कोने-कोने में फैले हुए थे। वह महाजादूगर पहले पृथ्वी पर ही रहता था। तरह-तरह के अमानवीय कारनामों से भोले-भाले व्यक्तियों को परेशान करता था। उसके कारनामों से तंग आकर लोगों ने उसे जान से मारने की कोशिश की। तब महाजादूगर बैसूफ डरकर

पाताल-लोक में जा छुपा। तब से अब तक वह वहीं पर रह रहा था। पाताल-लोक में रहकर भी बैसूफ पृथ्वी पर अमानवीय कारनामे करने से बाज नहीं आता था। वह तरह-तरह से भूचाल तथा भूकंप जादू के बल पर पृथ्वी पर भेजता रहता था, परंतु लोग यह जान न पाते थे कि ये कारनामा बैसूफ का है। वे सब यही समझते थे कि यह प्राकृतिक आपदा है। महाजादूगर बैसूफ के पास एक जादुई आईना था। जिससे वह पाताल में रहकर भी पृथ्वी का हाल-चाल जान लिया करता था। बैसूफ की अपने शिष्यों पर बड़ी कृपा थी। जब भी उसके किसी शिष्य पर कोई आपदा आती, बैसूफ अपने शिष्य को उस आपदा से बचा लेता।

आज जब महाजादूगर बैसूफ ने अपने जादुई आईने में पृथ्वी का दृश्य देखा तो अपने शिष्य को मृत पाया। अपने शिष्य जादूगर सेनसन को मृत देखकर महाजादूगर हैरान रह गया। साथ ही क्रोधित हो गया। वह यकीन नहीं कर पा रहा था कि उसका शिष्य सेनसन मर चुका है। क्रोध से गरजते हुए उसने कहा—"कौन है वह गुस्ताख? जिसने महाजादूगर बैसूफ के शिष्य सेनसन को मारकर अपनी मौत बुलाई है? किसने किया है मेरे शिष्य का यह हाल? मैं उसका सर्वनाश कर दूंगा।"

गुस्से में भरकर महाजादूगर बैसूफ पाताल स्थित अपने महल से चल पड़ा। जमीन के अंदर-ही-अंदर वह अपने शिष्य की लाश लेकर वापस पाताललोक चला गया।

इस समय वह एक कमरे में पालथी मारे बैठा था। उसके सामने उसके शिष्य सेनसन की लाश पड़ी थी। कमरे का वातावरण बड़ा भयावह था। चारों तरफ दुर्गंध फैली थी। स्थान-स्थान पर मानव खोपड़ियां तथा नर-कंकाल बिखरे पड़े थे। महाजादूगर ने अपने शरीर पर भभूत लगा रखी थी। कटोरे-सी लाल सुर्ख आंखों से वह अपने शिष्य की लाश को देख रहा था। फिर दांत भींचकर बड़बड़ाया—"जिस किसी ने मेरे सबसे प्रिय शिष्य सेनसन की हत्या की है, मैं उसे रसातल में मिला दूंगा। अब लोगों की हिम्मत इतनी बढ़ गई है कि वे महाजादूगर बैसूफ के शिष्यों को भी मारने लगे। कहर बरपा दूंगा मैं जमीन पर, परंतु इससे पहले मैं अपने सबसे प्रिय शिष्य को जीवित करूंगा। तब उसके हत्यारों से इसकी हत्या का बदला लूंगा।"

यह कहकर बैसूफ ने अपनी आंखें बंद कर लीं और धीरे-धीरे मंत्र पढ़ने लगा। कमरे की दुर्गंधता में तेजी आ गई।

तभी एक अप्रत्याशित घटना घटी। कमरे में बिखरी मानव-खोपड़ियां तथा नर-कंकाल आश्चर्यजनक रूप से हवा में उठकर नृत्य करने लगे। उनके नृत्य ने वातावरण की भयानकता को और भी बढ़ा दिया।

"आज्ञा दो शैतान, आज्ञा दो। किसकी शामत आई है? किसकी जान लेनी है? किसे रसातल में मिलाना है?"

एक साथ सारी हड्डियां तथा खोपड़ियां कर्कश आवाज में बोल पड़ीं। उनकी आवाज ऐसी थी कि कोई कठोर दिल का व्यक्ति भी उसे सुनकर बेहोश हो सकता था।

जादूगर ने आखें खोली और लाल-लाल आंखों से हवा में नृत्य करती मानव खोपड़ियों और नर-कंकालों को देखा। फिर एक भीषण ठहाका लगाया और बोला—"नहीं, अभी किसी को नहीं मारना है। किसी को रसातल में नहीं मिलाना है अभी। सुनो, ध्यान से सुनो, यह जो लाश तुम देख रहे हो, यह मेरे सबसे प्रिय शिष्य की लाश है। किसी ने इसकी हत्या की है। इसकी हत्या करने वाले को तो मैं भयानक मौत दूंगा, परंतु फिलहाल मैं इसे पुनः जीवित करना चाहता हूं।"

मानव खोपड़ियां तथा कंकाल पुनः कर्कश आवाज में बोले—"ये कौन-सा मुश्किल काम है शैतान, ये जीवित हो जाएगा। इसकी आत्मा नर्क में भटक रही है।"

"क्या? नर्क में?" महाजादूगर हड़बड़ा गया—"मेरे शिष्य की आत्मा नर्क में? यह कैसे हो सकता है?"

"ऐसा ही हुआ है शैतान, यमराज ने इसकी आत्मा को ले जाकर नर्क में फेंक दिया है। इसकी आत्मा वहीं है।"

"हुम्म...।" एक हुंकारा लेकर महाजादूगर बोला—"परंतु इसकी आत्मा को वापस लाना बहुत आवश्यक है।"

"यह कोई भारी काम नहीं है।" एक नर-कंकाल बोला—"आप आज्ञा दें, हम सभी अभी जाकर इसकी आत्मा को नर्कलोक से निकाल लाते हैं।"

"नहीं, सभी नहीं, इस काम के लिए सिर्फ विश्वंभर जाएगा।"

हवा में तैरता एक कंकाल नीचे उतरा। बैसूफ के सामने सिर झुकाया और बोला—"आप फिक्र न करें शैतान, मैं अभी जाकर आपके शिष्य की आत्मा को नर्कलोक से आजाद कराकर लाता हूं, आप मेरी यहीं प्रतीक्षा करें।"

इतना कहकर नर-कंकाल आकाश की ओर उड़ चला। बैसूफ ने एक

जोरदार ठहाका लगाया और जाते हुए विश्वंभर को पुकारा—"जरा जल्दी लौटना विश्वंभर, मुझे अपने शिष्य को जीवित करके उसके हत्यारों से भयानक बदला लेना है।"

"मैं शीघ्र लौटूंगा शैतान।" और उड़ता हुआ नर-कंकाल हवा में विलीन हो गया।

"सो जाओ, अब तुम सब सो जाओ।"

महाजादूगर ने मंत्र पढ़ा। हवा में नृत्य करते नर-कंकाल एवं मानव खोपड़ियां निर्जीव होकर वापस फर्श पर आ गिरीं। कमरे में पुनः सन्नाटा छा गया। जादूगर उठकर खड़ा हुआ। उसने अपना जादुई आईना निकाल कर खोला और आंखें बंद करके कोई मंत्र बुदबुदाने लगा।

जादुई आईना सक्रिय हो उठा। उसमें दो वर्ष पहले के दृश्य नजर आने लगे। जादूगर सेनसन का अलादीन का नकली चाचा बनना। अलादीन का गुफा में कैद होकर बाहर निकलना तथा चिराग के जिन्न की मदद से अलादीन का अमीर बनकर शहजादी के साथ शादी रचाना। यह सब दृश्य देखकर महाजादूगर की आंखों में खून उतर आया। वह दांत पीसकर बोला—"तो यह है वह कमीना अलादीन, जिसने मेरे शिष्य की योजना सफल नहीं होने दी और स्वयं चिराग की मदद से अफगानिस्तान का युवराज बन बैठा। अगर यह चिराग मेरे शिष्य को मिल जाता तो वह सारे विश्व में तहलका मचा देता। सारे विश्व में महाजादूगर बैसूफ के शिष्य सेनसन का आतंक होता। मगर मैं तुझे चैन से जीने नहीं दूंगा अलादीन। तेरा सर्वनाश करके रहूंगा मैं।"

फिर आईने में वह दृश्य भी आने लगे। जब सेनसन ने अलादीन का महल उठवा लिया था तथा चिराग भी प्राप्त कर लिया। महाजादूगर बैसूफ खूनी निगाहों से सारा दृश्य देख रहा था और जब जादूगर सेनसन के मरने का दृश्य आया तो महाजादूगर की आंखें भट्ठी की तरह सुलगने लगीं। जबड़े भिंच गए। मुट्ठियां कस गईं। क्रोध की अधिकता के कारण उसका शरीर कांपने लगा। मुंह से झाग निकलने लगे। क्रोध से दहाड़ता हुआ वह गरजदार आवाज में बोला—"नहीं छोड़ूंगा, मैं तुझे जिंदा नहीं छोड़ूंगा अलादीन। न ही जिंदा छोड़ूंगा तेरी इस शहजादी को। जिसने मेरे शिष्य के शादी के प्रस्ताव को न केवल ठुकरा दिया, बल्कि उसे विष पिलाकर मार भी डाला। बड़ा भयानक बदला लूंगा मैं तुम दोनों से। अब तुम्हारे सुख-चैन के दिन समाप्त हो गए और तुम्हारी बर्बादी शुरू हो गई।"



यह कहकर एक झटके के साथ महाजादूगर ने जादुई आईना बंदकर दिया। क्रोध के कारण उसका बुरा हाल था। उसका जी चाह रहा था कि अभी जाकर उस अलादीन तथा उसकी बीवी शहजादी नूरमहल के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। क्रोध की अधिकता के कारण उसका झुर्रियोंदार चेहरा काला पड़कर बड़ा भयानक लग रहा था। आंखों में तो मानो खून-ही-खून था। उसने जादुई आईना एक तरफ रखा तथा बेचैनी के साथ विश्वंभर की प्रतीक्षा करने लगा। बेचैनी का यह आलम था कि वह बार-बार आकाश की ओर देख रहा था।

थोड़ी देर के पश्चात् उसे विश्वंभर आता दिखाई पड़ा। उसने बेचैनी से पहलू बदला तथा नीचे उतरते विश्वंभर से उत्सुकता से पूछा—"लौट आए? क्या तुम सफल होकर लौटे हो?"

"विश्वंभर जब कभी किसी कार्य से गया तो उस कार्य को पूरा किए बिना कभी वापस नहीं लौटा शैतान।" विश्वंभर की बातों में ही नहीं स्वर में भी कामयाबी की झलक थी—"मैं आज भी सफल होकर लौटा हूं, आपके शिष्य की आत्मा अपने साथ लाया हूं मैं।"

कहकर विश्वंभर ने अपनी बंद मुट्ठी खोल दी। मुट्ठी खुलते ही एक प्रकाश-पुंज मृत सेनसन के शरीर में समा गया। अगले ही क्षण सेनसन के शरीर में हरकत हुई। उसने पलकें झपकाईं तथा एक झटके के साथ उठ बैठा।

महाजादूगर बैसूफ ने एक जोरदार ठहाका लगाया। उठकर बैठते ही जादूगर सेनसन ने कमरे में नजर दौड़ाई। अपने गुरुदेव महाजादूगर शैतान बैसूफ को सामने देखकर वह आश्चर्य से उछल पड़ा।

"ग...गुरुदेव आप?"

"हां प्यारे शिष्य सेनसन, ये हम ही हैं।" महाजादूगर ने गर्व से कहा।

"गुरुदेव।" चिल्लाता हुआ सेनसन अपने गुरु के कदमों में गिरकर फूट-फूटकर रोने लगा।

"रो मत मेरे बच्चे, रो मत।" महाजादूगर ने सेनसन के कंधों को पकड़कर उसे ऊपर उठाते हुए कहा—"मैं सब जान चुका हूं। मैं जान चुका हूं कि तुझे अफगानिस्तान के निवासी अलादीन ने बहुत सताया है। तू उसकी बीवी को प्राप्त करना चाहता था, परंतु उसने धोखे से तुझे शराब में विष पिलाकर मार डाला, परंतु तू अब घबरा मत। मैं उस अलादीन से तेरी हत्या का बड़ा भयानक बदला लूंगा, इसलिए मैंने तुझे अपनी शक्ति के बल पर पुनः जीवित

किया है। ताकि तू भी अपने हत्यारों का भयानक अंजाम देख सके।"

"हां गुरुदेव, मैं भी उस अलादीन से बदला लेना चाहता हूं। शहजादी नूरमहल ने मेरे साथ धोखा किया था। मैं उसके रूप-यौवन का दीवाना हो गया था, अतः उसकी चाल को न समझ सका और उसने मुझे शराब में विष मिलाकर पिला दिया, परंतु अब मैं आपकी कृपा से दोबारा जीवित हो गया हूं, अतः अब मैं अलादीन से बदला अवश्य लूंगा।"

महाजादूगर ने मुस्कराकर अपना जादुई आईना निकाला और आंखें बंद करके मंत्र बुदबुदाने लगा। नर-कंकाल विश्वंभर पुनः निर्जीव होकर फर्श पर गिर पड़ा था। जादूगर सेनसन चुपचाप खड़ा होकर अपने गुरुदेव की कार्यप्रणाली देखने लगा। मंत्र पूरा होते ही महाजादूगर बैसूफ ने आंखें खोल दीं। सेनसन और बैसूफ की नजरें अब जादुई आईने पर टिक गईं।

जादुई आईने पर एक दृश्य उभरा। वह दृश्य अलादीन के महल के एक कमरे का था। कमरे में अलादीन अपने बेटे अशरफ के साथ खेल रहा था। कुछ दूर बैठी नूरमहल टकटकी लगाकर दोनों को निहार रही थी। जब अलादीन अथवा उसका बेटा अशरफ हंसता तो वह भी मुस्करा देती। दृश्य देखकर जादूगर सेनसन की आंखों में लहू उतर आया। वह दांत किटकिटाने लगा।

"यही हैं न तुम्हारे दोनों दुश्मन।" बैसूफ की आवाज में गर्मी थी।

"हां गुरुदेव, यहीं हैं मेरे दुश्मन।"

"बहुत मौज-मस्ती कर ली इन दोनों ने। अब महाजादूगर बैसूफ इन्हें जिंदा नहीं छोड़ेगा। अपने शिष्य की हत्या का भयानक बदला लेगा।" कहकर बैसूफ ने आईना बंद कर दिया।

जादूगर सेनसन ने पूछा—"आप यहां कब से रहते हैं गुरुदेव?"

हमारे इस महल को बने सौ वर्षों से अधिक का समय बीत चुका है, परंतु हम यहां पर मात्र पचास साल से रह रहे हैं।"

"मैंने आपका यह महल देखा नहीं है गुरुदेव।"

जादूगर बैसूफ अपने शिष्य की बात पर 'हो-हो' करके हंसता हुआ बोला—"कोई बात नहीं सेनसन, आओ, हम आज तुम्हें अपना महल दिखाते हैं।"

यह कहकर महाजादूगर बैसूफ सेनसन को साथ लेकर कमरे से निकल गया। सैकड़ों दास-दासियों ने उन्हें झुक-झुककर सलाम किया। बहुत देर तक

दोनों महल को देखते रहे। जादूगर सेनसन अपने गुरुदेव के महल तथा उसके राजसी ठाट-बाट देखकर चकित था। घूमते-घूमते वे दोनों एक विशाल हालनुमा कमरे में पहुंचे। उस कमरे में सैकड़ों पत्थर की मूर्तियां खड़ीं थीं। उन मूर्तियों को देखकर बैसूफ बोला—"जानते हो सेनसन, ये मूर्तियां किसकी हैं?"

सेनसन ने ना में गर्दन हिला दी।

"ये मूर्तियां उन लोगों की हैं सेनसन, जिन्होंने महाजादूगर बैसूफ से टकराने की हिमाकत की थी।" कमरे में चहल कदमी करता हुआ बैसूफ बोला—"ये लोग मुझे मारने आए थे, परंतु ये बेवकूफ महाजादूगर की शक्तियों से परिचित नहीं थे। अगर जान जाते कि महाजादूगर बैसूफ महान है तो शायद मुझे मारने की सपने में भी नहीं सोचते, परंतु इन्होंने बेवकूफी की और मैंने इन्हें अपनी शक्तियों से पत्थर की मूर्तियों में बदल दिया।"

फिर सेनसन की तरफ घूमकर बैसूफ बोला—"तुम्हारे दुश्मन अलादीन को भी मैं इसी मूर्ति में बदल दूंगा।"

"आप महान हैं गुरुदेव, आपके जैसा महान जादूगर विश्व में न कोई हुआ है और न ही कभी होगा।" सेनसन अपने गुरुदेव की प्रशंसा किए बिना न रहा सका।

अपनी प्रशंसा सुनकर बैसूफ का सीना चार इंच चौड़ा हो गया। वह गर्व के साथ बोला—"हां, हम सचमुच ही महान हैं सेनसन। हमारे जैसा जादूगर विश्व में कोई दूसरा नहीं हो सकता।"

फिर बोला—"आओ, तुम्हें बाकी का महल दिखाऊं।"

उस विशाल कमरे को पार करके दोनों एक अन्य कमरे में पहुंचे। वह कमरा भी बड़ा था और पलंग पर एक अत्यंत सुंदर नवयुवती गहरी निद्रा में डूबी हुई लेटी थी। पलंग के चारों तरफ और भी कई सुंदरियां थीं। जो पलंग पर सोई नवयुवती को हवा कर रही थीं। इतनी सुंदर नवयुवती सेनसन ने पहले कभी नहीं देखी थी। सेनसन सोचने लगा कि गुरुदेव भी एकदम रंगबाज हैं।

तभी बैसूफ ने पुकारा—"क्या सोच रहे हो सेनसन।"

सेनसन हड़बड़ा गया। वह बैसूफ के कदमों में गिरकर बोला—"क्ष...क्षमा कर दीजिए गुरुदेव, मैं फिर कभी ऐसी गलती नहीं करूंगा।" सेनसन गिड़गिड़ाने लगा।

"हां, हम रंगबाज भी हैं सेनसन।" बैसूफ बोला—"हम साढ़े तीन सौ वर्ष



के जरूर हो चुके हैं, परंतु हमें बूढ़ा मत समझो। वह जो नवयुवती पलंग पर सोई है न! वह हमारी नई पत्नी है।"

उसी क्षण वह नवयुवती एक मादक अंगड़ाई लेती हुई उठ बैठी और मुस्कराकर उसने बैसूफ की तरफ देखा।

बैसूफ बोला—"अभी नहीं प्रिय, हमारा सबसे प्यारा शिष्य आज हमारे साथ है। अभी तुम सो जाओ। पहले हम अपने शिष्य की थकान दूर करेंगे।"

वह नवयुवती पुनः लेट गई। बैसूफ ने सेनसन से कहा—"इनमें से जो भी लड़की तुम्हें पसंद आए। उसे लेकर दूसरे कमरे में चले जाओ। यहां तुम पहली बार आए हो, अतः ऐश करो।"

महाजादूगर बैसूफ का अभिनंदन करके सेनसन ने एक लड़की का हाथ पकड़ा और उस कमरे से बाहर चला गया।

रहमान और जादूगर

उधर रहमान शहजादी को तलाक देकर शहर छोड़कर चला गया था और एक घने जंगल में कुटिया बनाकर रहने लगा था। उसने साधू बनकर जीवन-भर यहीं रहने का निश्चय किया और साधू बनकर वहीं रहने लगा। उसकी कुटिया घने जंगल के बीच थी, अतः रहमान को वहां रहने में सुविधा महसूस हुई। रहमान लोगों से बचकर ही रहता था। उसे डर था कि कहीं कोई उसे पहचान न ले कि वह अफगानिस्तान के वजीर का पुत्र है। इसी कारण वह घने जंगल में जाकर बसा था। दरअसल वह लोगों को मुंह दिखाने के काबिल था भी नहीं। उसे अपनी सुहागरात वाली घटना आज तक याद थी। शहजादी का एक देवलोक के प्राणी के साथ उसी के सामने प्रेमालाप करना। जबकि शहजादी उसकी बीवी थी। जब भी कभी रहमान को वह घटना याद आती तो उसके तन-बदन में आग लग जाती थी। बदला लेने की भावना ठाठे मारने लगती, परंतु वह यह सोचकर चुप बैठ जाता कि उसका दुश्मन तो देवलोक का प्राणी है। वह उसका मुकाबला कैसे कर पाएगा?

रहमान का शरीर सूख चुका था। अच्छा खाना न मिल पाने के कारण वह कमजोर हो चुका था। वह कंद-मूल, फल खाकर अपना पेट भरता था। देवलोक के प्राणी से प्रतिशोध लेने की उसकी भावना कभी खत्म नहीं हुई थी। वह उसके दिल-ही-दिल में सदा धधकती रही, परंतु कुछ सहारा न होने के कारण वह अपनी प्रतिशोध की ज्वाला को दबाकर इबादत में व्यस्त रहता था।

एक बार रहमान प्रत्येक दिन की भांति अपनी कुटिया के बाहर बैठा इबादत कर रहा था। तभी सामने जंगल से उसे एक काले रंग की भयानक सूरत का व्यक्ति आता दिखाई दिया। रहमान कुछ घबरा-सा गया। घबराने का कारण यह था कि वह काला-कलूटा व्यक्ति उसकी ओर ही चला आ रहा था।

'यह व्यक्ति कौन हो सकता है? और यह क्यों इधर आ रहा है। क्या ये मुझे जानता है? कहीं यह शहर से न आया हो, अगर ऐसा हुआ तो यह व्यक्ति मुझे पहचान भी सकता है।'

सोचकर रहमान फौरन उठ खड़ा हुआ। वह उस व्यक्ति की नजरों में नहीं आना चाहता था। वह घबराकर कहीं छुपने की सोचने लगा, परंतु वह ऐसा

नहीं कर सका, क्योंकि वह काला-कलूटा व्यक्ति तब तक बहुत निकट आ चुका था। रहमान अभी सोच ही रहा था कि उसे अब क्या करना चाहिए कि वह व्यक्ति पास आकर बोला—"मुझसे डरो नहीं। मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं, बल्कि दोस्त हूं। तुम अफगानिस्तान के वजीर के सुपुत्र रहमान हो न?"

"न...नहीं, क...कौन हो तुम, मेरा नाम कैसे जानते हो?" यह जानकर की आगंतुक उसे जानता है, रहमान घबरा गया। मुंह से बोल न फूटा, हकलाकर बोला—"मैंने तुम्हें पहचाना नहीं!"

"मैं एक जादूगर हूं, जादूगर सेनसन नाम है मेरा। वह व्यक्ति, जो कि वास्तव में जादूगर सेनसन ही था, बोला—"मैं बहुत दूर से तुमसे मिलने आया हूं।"

"मुझसे मिलने?" रहमान अभी तक हैरान था—"म...मगर मैं तुम्हारे क्या काम आ सकता हूं?"

"तुम मेरे बहुत काम आ सकते हो।" मुस्कराकर सेनसन बोला—"आओ, तुम्हारी कुटिया में बैठकर आराम से बातें करते हैं।"

अनमने भाव से रहमान सेनसन को लेकर कुटिया में आया। दोनों आमने-सामने बैठ गए। रहमान प्रश्नवाचक दृष्टि से सेनसन को देख रहा था। रहमान को सेनसन बड़ा अजीब आदमी लगा। वह सोच भी नहीं सकता था कि एक अनजान आदमी उसके पास किसी काम से भी आ सकता है। रहमान को उसका आना अच्छा भी नहीं लगा। वह अभी सोच ही रहा था कि सेनसन ने कहा—"क्या सोच रहे हो?"

"अं...हां।" उसकी तंद्रा भंग हुई, वह बोला—"कुछ नहीं। तुम बताओ, तुम्हें मुझसे क्या काम है?"

"बताऊंगा।" सेनसन गर्दन हिलाकर बोला—"परंतु पहले मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूं।"

"पूछो।" रहमान का संक्षिप्त उत्तर था।

"पहले यह बताओ कि तुमने शहजादी नूरमहल को तलाक क्यों दिया, जबकि वह बहुत सुंदर है?"

सुनकर रहमान ने गर्दन झुका ली और चुप रहा। शायद वह सेनसन के इस प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहता था।

"तुम मुझे बताओ या न बताओ, परंतु मुझे मालूम है कि तुमने शहजादी को तलाक क्यों दिया।" जादूगर सेनसन बोला—"दरअसल तुम्हें अपनी



सुहागरात पर शहजादी का एक गैरमर्द के साथ प्रेमालाप करना बहुत बुरा लगा, इसलिए शर्म के मारे तुमने शहजादी को तलाक दिया और शहर छोड़कर, सबकी नजरों से छुपकर यहां रहने लगे।"

रहमान अब भी चुप रहा, कुछ नहीं बोला।

"क्या तुम उस व्यक्ति से अपना बदला नहीं लेना चाहोगे, जिसने शहजादी के साथ मिलकर तुम्हें जलील किया? क्या तुम उससे बदला नहीं लेना चाहोगे, जिसने तुम्हारे ही सामने तुम्हारी बीवी के साथ सुहागरात मनाई?"

रहमान का चेहरा क्रोध के कारण सुर्ख हो गया। आंखों में चिंगारियां सुलग उठीं। मुट्ठी भींचकर वह विवशता के साथ बोला—"मैं उस कमीने से बदला अवश्य लेना चाहता हूं। अगर मेरा वश चले तो मैं उसके टुकड़े-टुकडे करके चील-कौवों को खिला दूं, परंतु मैं उसका मुकाबला कैसे कर सकता हूं? वह देवलोक का एक शक्तिशाली प्राणी है और मैं एक शक्तिहीन मानव।"

"यहीं पर तुम भूल कर रहे हो रहमान।" सेनसन अपनी बात पर जोर देते हुए बोला—"वह व्यक्ति देवलोक का प्राणी नहीं है, बल्कि तुम्हारे ही नगर का फटीचर लड़का अलादीन है। वही तुम्हारी इस हालत का जिम्मेदार है। तुम उसे देवलोक का प्राणी समझकर मूर्ख बन गए और वह शहजादी नूरमहल के साथ शादी करके ऐश कर रहा है। वह अफगानिस्तान का होने वाला बादशाह लिखा जा चुका है। जिसके हकदार तुम थे। अब भी समय है। अक्ल से काम लो। अपनी हिम्मत जुटाओ और अफगानिस्तान का राज्य अपने कब्जे में कर लो।"

रहमान की आंखें खुली-की-खुली रह गई। दिमाग मानो जाम हो चुका था उसका। वह सोच भी नहीं सकता था कि जिसे वह आज तक देवलोक का प्राणी समझता रहा, वह उसके ही नगर का कोई व्यक्ति निकलेगा।

रहमान की हिम्मत बंधने लगी। उसका भय समाप्त होने लगा। जादूगर सेनसन बेहद गौर से रहमान के चेहरे का निरीक्षण कर रहा था। उसे लगा कि उसकी बातों का असर रहमान पर होने लगा है, अतः उसने गर्म लोहे पर पुनः एक चोट और करने की सोची। उसने अपनी जेब से अपने गुरुदेव का जादुई आईना निकाला और बोला—"अगर तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं हो रहा है तो मैं तुम्हें कुछ दिखाना चाहूंगा। फिर तुम्हें मालूम हो जाएगा कि मेरी बात सच है या झूठ?"

रहमान ने प्रश्नवाचक दृष्टि से आईने को देखा फिर बोला—"क्या दिखाना चाहते हो?"

"अभी मालूम हो जाएगा।" यह कहकर जादूगर सेनसन ने अपनी आंखें बंद की और मंत्र बुदबुदाने लगा। मंत्र पूरा होते ही आईने पर एक दृश्य उभरा। रहमान ने ऐसा करतब कभी नहीं देखा था। वह आश्चर्यचकित रह गया।

आंखें खोलकर जादूगर बोला—"लो देखो।"

जादुई आईने में अलादीन के महल के उस कमरे का दृश्य उभरा, जिसमें अलादीन तथा शहजादी शतरंज खेल रहे थे। पास ही रखे पालने में उनका बेटा अशरफ गहरी नींद में सो रहा था। अलादीन तथा शहजादी हंस-हंसकर बातें भी करते जा रहे थे। यह दृश्य देखकर रहमान को पूरा विश्वास हो गया कि वह आज तक धोखे में ही रहा था।

रहमान सोच में डूब गया। सेनसन बोला—"क्या सोच रहे हो?"

"मुझे अचंभा हो रहा है कि जिसे आज तक मैं देवलोक का प्राणी समझता रहा, वह एक साधारण व्यक्ति है। आपने मुझे यह सब बताकर मुझ पर बड़ी कृपा की है। मैं आपका अहसान कभी नहीं भूल सकता। अब मैं अलादीन से अपना हक हासिल करके रहूंगा, परंतु मैं सोच रहा हूं कि वह तो बादशाह लिखा ही जा चुका है। मैं उसे पराजित कैसे करूंगा? मेरे पास तो सेना, अस्त्र-शस्त्र कुछ भी नहीं है।"

"इस नेक काम में मैं तुम्हारी पूरी मदद करूंगा।"

"त...तुम?" रहमान आश्चर्यचकित रह गया।

"प...परंतु क्यों? इससे तुम्हें क्या लाभ होगा?"

"मैं तुम्हारी मदद इसलिए करूंगा।" सेनसन क्रोध से दांत पीसता हुआ बोला—"क्योंकि जो तुम्हारा दुश्मन है। वह मेरा भी दुश्मन है। मुझे भी उस अलादीन से अपना इंतकाम लेना है। उसने मेरे साथ भी धोखा करके मेरे वर्षो के सपने को बेकार कर दिया था।"

अब रहमान की समझ में कुछ-कुछ आने लगा था। वह समझ चुका था कि सेनसन अलादीन से अपना इंतकाम लेने की खातिर उससे (रहमान से) हाथ मिलाना चाहता है, परंतु रहमान सचमुच में सेनसन का अहसानमंद हो चुका था, क्योंकि उसी ने उसकी आंखों पर पड़ा पर्दा उठाया था। अलादीन की सच्चाई बताई थी, वर्ना वह तो आजीवन साधु के वेष में यहीं रहने का

पक्का इरादा बना चुका था। रहमान को सोच में डूबा देखकर सेनसन बोला—"तुम भी अलादीन के दुश्मन हो और मैं भी। अगर हम दोनों आपस में मिल जाएं तो हम अलादीन को पराजित कर सकते हैं।"

"ठीक है।" रहमान ने मन-ही-मन निर्णय लिया—"मैं तुम्हारे साथ हूं। बोलो, अब हमें क्या करना चाहिए?"

"सबसे पहले मैं तुम्हें अपने गुरुदेव महाजादूगर बैसूफ के पास ले चलूंगा। इस अभियान में वे भी हमारे साथ हैं। फिर वहीं बैठकर सोचेंगे कि आगे हमें क्या करना है, क्या तुम तैयार हो?"

"अवश्य।" रहमान ने दृढ़ स्वर में कहा—"चलो, कहां चलना है?"

सेनसन कुछ न बोला। चुपचाप कुटिया से बाहर आया। रहमान ने भी उसका अनुसरण किया। आंखें बंद करके सेनसन कोई मंत्र बुदबुदाने लगा। मंत्र पूरा होते ही उनके सामने की जमीन एक गड़गड़ाहट के साथ दो भागों में विभक्त हो गई। अब वहां एक सुरंग नजर आ रही थी।

रहमान हतप्रभ-सा खड़ा सेनसन का कारनामा देख रहा था। आंखें खोलकर सेनसन बोला—"यह सुरंग मेरे गुरुदेव के महल तक जाती है। आगे का सफर हमें इसी सुरंग से तय करना होगा, अतः आंखें बंद करके मेरे साथ इस सुरंग में कूद जाओ।"

रहमान तैयार हो गया। उसने आंखें बंद कीं और सेनसन के साथ सुरंग में कूद गया, फिर अगले ही पल वे पाताललोक में थे।

आंखें खोलकर जब रहमान ने आसपास देखा तो उसने स्वयं को एक अनोखी दुनिया में पाया। एक नए ढंग का रहस्यमयी वातावरण उसके सामने था। शानदार इमारतें, नौकर-चाकर, शाही ठाट-बाट देखकर रहमान चकित रह गया। पाताललोक की सुंदरता भी देखने योग्य थी।

सेनसन रहमान को लेकर एक महल के मुख्य द्वार पर पहुंचा। दो कद्दावर जिस्म के भयानक काले चेहरे वाले पहरेदारों ने उन्हें सिर झुकाकर सलाम किया। दोनों महल में प्रवेश कर गए। चलते-चलते सेनसन बोला—"यह महल मेरे गुरुदेव महाजादूगर बैसूफ का है। वे यहीं रहते हैं। अब हम उन्हीं के पास जा रहे हैं।"

रहमान कुछ न बोला। चुपचाप साथ में चलता रहा। वे एक विशाल कमरे में पहुंचे, जहां महाजादूगर बैसूफ एक तख्त पर बैठा, आंखें बंद किए, हुक्के में कश लगा रहा था। उसके दोनों तरफ कई सुंदर लड़कियां मोर्छल हिला रहीं थीं।

सेनसन ने आदर के साथ कहा—"गुरुदेव, अफगानिस्तान के वजीर का पुत्र रहमान हाजिर है।"

बैसूफ ने आंखें खोलकर रहमान को देखा। रहमान कुछ घबरा रहा था। उसे यहां का वातावरण तथा बैसूफ दोनों ही भयानक लगे।

रहमान को देखकर बैसूफ ने मुस्कराकर कहा—"आओ-आओ, हम अपने अतिथि का स्वागत करते हैं।"

रहमान ने आगे बढ़कर बैसूफ का अभिवादन किया। बैसूफ बोला—"तुम अफगानिस्तान के होने वाले बादशाह हो, अतः हम तुम्हें अपने पास ही बिठाएंगे। आओ, हमारे बराबर में बैठ जाओ।"

रहमान निःसंकोच, निःशब्द बैसूफ के बराबर में तख्त पर जाकर बैठ गया। बैसूफ ने प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा—"अलादीन ने तुम्हारे साथ धोखा करके तुम्हारे हाथ से अफगानिस्तान का राज्य तथा तुम्हारी बीवी तुमसे छीन ली। मेरे सबसे प्रिय शिष्य सेनसन को भी उसने धोखे से मार डाला था, परंतु मैंने अपनी शक्तियों के बल पर उसे पुनः जीवित कर दिया। हमारे दिल में भी अलादीन से प्रतिशोध लेने की ज्वाला भड़क रही है, अतः हम अलादीन को पराजित कर तुम्हें अफगानिस्तान का बादशाह बनाएंगे।"

बैसूफ ने रहमान को बोलने का मौका दिए बगैर दो बार ताली बजाई। ताली बजते ही कमरे की एक दीवार एक गड़गड़ाहट के साथ दो भागों में बंट गई और उसमें से दो भयानक शक्ल के देवों ने निकलकर कमरे में प्रवेश किया। रहमान उन्हें देखकर भयभीत हो गया। डर के मारे उसने अपनी आंखें बंद कर लीं, फिर रहमान के कानों में उन देवों की कड़ाकेदार आवाज गूंजी।

"हमें क्यों बुलाया है महाराज?" देवों ने बैसूफ के सामने हाथ जोड़कर कहा।

"तुम्हें एक काम करना है।" बैसूफ ने कहा—"अफगानिस्तान के बादशाह के दामाद अलादीन को तबाह करना है और उसे तथा उसकी पत्नी को बादशाह सहित बंदी बनाकर यहां लाना है। तुम आज ही अपनी पाताल-लोक की सेना लेकर जाओ और उसे पराजित करो। हमारे अतिथि रहमान भी तुम्हारे साथ जाएंगे। इन्हीं को अफगानिस्तान का नया बादशाह बनाना है।"

"यह न हो सकेगा महाराज।" काला देव पुनः हाथ जोड़कर बोला—"अलादीन के पास जादुई चिराग है और जादुई चिराग का जिन्न बहुत शक्तिशाली है। उसकी कोहकाफ की देवसेना भी हमारी पाताल-लोक

की देवसेना से अधिक शक्तिशाली है। जब तक अलादीन के पास वह जादुई चिराग है। तब तक उसे युद्ध में पराजित करना संभव नहीं है। अगर किसी तरह अलादीन से वह चिराग हथिया लिया जाए तो उसे पराजित करना कोई मुश्किल काम नहीं होगा।"

"तुम ठीक कहते हो।" बैसूफ सोचता हुआ बोला—"जब तब अलादीन के पास वह जादुई चिराग है, तब तक उसे पराजित नहीं किया जा सकता। हमें सोचने दो कि अलादीन से वह चिराग किस प्रकार हथियाया जा सकता है?"

तभी रहमान बीच में बोल पड़ा—"अगर यह काम मुझे सौंपा जाए तो यह काम मैं बखूबी कर सकता हूं।"

"बहुत अच्छे।" बैसूफ बोला—"परंतु तुम यह काम किस प्रकार करोगे?"

"आप मुझे अपने जादू के बल पर हिजड़ा बना दें।" रहमान बोला—"तथा अफगानिस्तान स्थित अलादीन के महल तक पहुंचा दें, फिर देखिए, मैं कैसे अलादीन से चिराग हथियाकर लाता हूं।"

"बहुत अच्छा।" बैसूफ बोला—"आदमी तुम बुद्धिमान जान पड़ते हो।" फिर देव की तरफ उन्मुख होकर कहा—"देव, तुम जाओ। जब हमें तुम्हारी आवश्यकता पड़ेगी। तब बुला लेंगे।"

देव बैसूफ का अभिवादन करके जिधर से आए थे, उधर ही चले गए। उनके जाते ही वह दीवार पुनः सपाट हो गई। फिर बैसूफ ने आंखें बंद की और मंत्र बुदबुदाने लगा। मंत्र पूरा होते ही रहमान एक सुंदर हिजड़े में परिवर्तित हो गया। स्वयं पर लजा गया था वह। एक नजर देखने पर वह एक सुंदर युवती नजर आता था। बैसूफ ने सेनसन से कहा—"इसे अलादीन के महल के पास पहुंचा दो।"

सेनसन ने तुरंत मंत्र पढ़ना शुरू कर दिया और रहमान की आंखें बंद होने लगीं। जब उसकी आंखें खुली तो उसने स्वयं को अपने शहर की नदी के पास खड़ा पाया। सामने ही अलादीन का शानदार महल सीना ताने खड़ा था। वहीं से रहमान को बादशाह का महल तथा अपना घर भी नजर आ रहा था। अपना घर देखकर रहमान का गला भर आया। उसका जी चाहा कि वह दौड़कर अपने घर जाए तथा अपने वियोग में रोते-तड़पते अपने माता-पिता से लिपटकर खूब रोए, परंतु वह ऐसा नहीं कर सकता था, क्योंकि उसका लक्ष्य मात्र अपने घर जाना नहीं था, बल्कि उसे पूरा अफगानिस्तान प्राप्त



करना था, अफगानिस्तान का बादशाह बनना था, अलादीन से तथा शहजादी नूरमहल से अपना बदला लेना था, अतः वह भावनाओं के सागर से बाहर निकला और अपने घर की तरफ से मुंह फेर लिया। अब उसके सामने अलादीन का शानदार महल था। अलादीन से बदला लेने की उसकी भावना जोर पकड़ने लगी। उसकी मुट्ठियां भिंच गई।

रहमान मन-ही-मन बुदबुदाया—'अलादीन-शहजादी नूरमहल, अब तुम्हारे सुख-चैन के दिन समाप्त हो गए हैं। अब तुम्हारे भाग्य में सिर्फ बरबादी लिखी है, सिर्फ और सिर्फ बरबादी। जैसे मैंने खून के आंसू रोए हैं, वैसे ही तुम्हें भी न रुलाऊं तो मेरा नाम रहमान नहीं। दर-दर का भिखारी बना दूंगा मैं तुम दोनों को, दर-दर का।'

रहमान ने महसूस किया कि वह कुछ अधिक ही आवेशित होता जा रहा है। उसने स्वयं को संयत किया और एक फरेबी मुस्कान अपने होठों पर सजाई और कूल्हे मटकाता हुआ अलादीन के महल की ओर चल दिया।

ख्वाजा सरा

उधर अलादीन का जीवन सुखों की धूप-छांव में व्यतीत हो रहा था। उसे जमाने भर की दौलत प्राप्त थी। कोई गम उसके पास तक न फटक रहा था। अलादीन तथा शहजादी नूरमहल का जीवन अपने बेटे अशरफ के साथ सुख-चैन से व्यतीत हो रहा था, परंतु उसकी किस्मत में और भी दुःख देखने लिखे थे, क्योंकि उनकी किस्मत पलटने वाली थी।

अलादीन की आदत थी कि चाहे किसी भी हाल में हो, यदि उसके द्वार पर कोई सवाली आ जाए तो वह उससे तुरंत मिलने का प्रयत्न करता था। सवाली को जो भी परेशानी होती, वह तुरंत दूर कर देता। इसी आदत ने अलादीन की प्रसिद्धी में चार-चांद लगा दिए थे। वह किसी रईस दौलतमंद की तरह अभिमानी नहीं था कि उसे दौलत का नशा चढ़ता।

अलादीन अपने कमरे में शहजादी नूरमहल के साथ बैठा था। उनका बेटा अशरफ पालने में सो रहा था। दोनों के बीच प्यार-मोहब्बत की बातें चल रही थीं। तभी एक नौकरानी ने कमरे में प्रवेश किया और अदब से सिर झुकाकर बोली—"एक ख्वाजा सरा (हिजड़ा) सरकार से मिलना चाहती है।"

"ठीक है।" अलादीन ने कहा—"उसे इज्जत के साथ दीवानखाने में बैठाओ, हम अभी आते हैं।"

नौकरानी सिर झुकाकर चली गई। अलादीन उठा, सिर पर पगड़ी रखी और दीवान खाने में आ गया। तब तक ख्वाजा सरा नहीं आई थी। उसी समय एक नौकर एक ख्वाजा सरा को लेकर कमरे में आया तथा सिर झुकाकर अलादीन का अभिवादन किया। ख्वाजा सरा बना रहमान भी अलादीन के सामने अदब से झुक गया।

नौकर चला गया तो अलादीन ने ख्वाजा सरा से कहा—"कौन हो तुम? यहां पर कैसे आना हुआ?"

ख्वाजा सरा की आंखों में आंसू आ गए। भर्राई आवाज में वह बोली—"सरकार, मैं किस्मत की मारी रूस की रहने वाली हूं। पहले रूस के बादशाह के महल में काम करती थी, परंतु बादशाह ने मुझे बिना कारण अपने महल से निकाल दिया। तब से मैं दर-दर भटक रही हूं। यहां पहुंची

तो आपका वडा नाम सुना। सोचा आपसे भी एक बार मिल लूं, शायद आपके यहां मुझे कोई नौकरी मिल जाए।"

"ठीक है, मैं तुम्हें काम पर रख लेता हूं।" अलादीन बोला—"परंतु जो काम दिया जाए, पूरा करना पड़ेगा।"

"बिल्कुल सरकार।" ख्वाजा सरा ने सिर नवाकर कहा।

अलादीन ने उसी समय उस ख्वाजा सरा को काम पर रख लिया। हिजड़ा बना रहमान अलादीन की प्रशंसा करता हुआ महल में दाखिल हुआ। महल में दाखिल होते वक्त वह मन-ही-मन सोच रहा था—'बेटा अलादीन, अब तेरी और उस बेवफा शहजादी नूरमहल की जिंदगी तबाह होनी शुरू हो चुकी है, क्योंकि तुम सबकी मौत अब तुम्हारे महल में प्रवेश कर चुकी है।'

रहमान उसी समय से काम पर लग गया। उसकी विशेषता यह थी कि जो भी काम उसे बताया जाता, वह बड़ी चपलता के साथ उस काम को पूरा कर देता। रहमान धीरे-धीरे वहां पर मेहनती ख्वाजा के नाम से जाना जाने लगा। उसकी कार्यशीलता तथा संघर्षशीलता को देखकर अलादीन तथा शहजादी भी उसे चाहने लगे थे। अलादीन तथा शहजादी को कभी उसकी शिकायत सुनने को नहीं मिली। काम के प्रति वह वफादार ही रहता था।

रहमान अपने सिर के बाल इस तरह बांधा करता था कि महल की सभी सुंदरियां उसके बालों को देखकर ईर्ष्या करने लगीं थीं। एक बार शहजादी नूरमहल ने पूछा—"बिजली, तुमने इतने सुंदर बाल बनाने कहां से सीखे?"

बिजली सिर झुकाकर अदब से बोली—"आप हजार बरस सलामत रहें बीवीजी। इस बांदी के देश में तो बाल ऐसे ही गूंथे जाते हैं।"

"हमारे बाल भी संवार दिया करो बिजली।"

"ये कनीज आप पर कुर्बान जाए बीवीजी, इस सेवा का अवसर मेरा सौभाग्य होगा।"

"तो फिर ठीक है।" शहजादी बोली—"आज तुम मेरे बाल बनाओगी।"

शहजादी रहमान उर्फ बिजली को लेकर अपने कमरे में आ गई और बाल बनवाने लगी। अब रहमान शहजादी के कोमल मुलायम बालों से खेल रहा था। अनायास ही उसकी सांसें तेज हो गईं। दिल की धड़कन बढ़ गई और वह मन-ही-मन सोचने लगा—'उफ! ये बाल, ये चांदी-सा बदन मेरा था। गुलाब की तरह महकता हुआ सौंदर्य भी मेरा था। ये दूध-सा गोरा रंग भी मेरा था।

बड़ी-बड़ी हिरनी-सी आंखें भी मेरी ही थीं। शहजादी के जिस्म का रोयां-रोयां मेरा ही था।'

रहमान ने ठंडी आह भरकर सोचा—'खैर, आज नहीं तो कल, ये बदन, ये शहजादी पुनः मेरी होगी।'

रहमान ने दिल पर पत्थर रखकर शहजादी के बाल बनाए। अपने बालों को देखकर शहजादी बेहद खुश हुई, क्योंकि रहमान ने उसके बाल बड़ी सुंदरता के साथ गूंथे थे।

"आज से तुम रोजाना मेरे बाल बनाया करोगी बिजली।"

"आपकी मेहरबानी बीवीजी।" रहमान ने सिर नवाकर कहा।

उसके बाद रहमान शहजादी का खास खिदमतगार बन गया। वह रोज शहजादी के बाल बनाने लगा। पूरे महल में उसकी खास छवि बन गई थी। तमाम नौकरानियां तथा दासियां रहमान को अपनी सखी-सहेली की तरह मानती थीं।

एक रात की बात है। रहमान अपने कमरे में बिस्तर पर लेटा सोचों में डूबा था। उसे नींद नहीं आ रही थी। नींद आए भी कैसे? जिस काम के लिए वह ख्वाजा सरा बनकर यहां आया था। वह काम अभी अधूरा जो पड़ा था। रहमान समझ नहीं पा रहा था कि वह चिराग कैसे प्राप्त करे? क्योंकि वह इतने दिनों में यह भी नहीं जान पाया था कि अलादीन चिराग को रखता कहां है? चिराग प्राप्त करने की बात तो दूर रही। उसे डर सताने लगा था कि कहीं वह अपने लक्ष्य में असफल ही न हो जाए। बैसूफ से उसने कह तो दिया था कि वह चिराग आसानी से हथिया लेगा, परंतु अभी उसे चिराग के दर्शन तक नहीं हुए थे। उल्टा यहां आकर दिल और भी जलने लगा था। जब वह शहजादी तथा अलादीन को प्यार भरी बातें करते देखता तो उसके तन-बदन में आग लग जाती। उसका जी चाहता था कि वह अलादीन को अभी खत्म कर डाले, परंतु वह विवश था। ऐसा नहीं कर सकता था। हमेशा मन मसोस कर रह जाता, परंतु सोचता कि जिस दिन मेरा दांव लगेगा। सब सूद सहित वसूल कर लूंगा और एक दिन तो उसके क्रोध की सीमा ही न रही। हुआ यूं कि एक बार रहमान ने शहजादी के हुस्न का दीदार करने के लिए चुपके से शहजादी के कमरे में झांका और अंदर का दृश्य देखते ही वह सन्न रह गया। दृश्य ही कुछ ऐसा था। अंदर अलादीन तथा शहजादी प्रेमालाप में मग्न थे। यह देखकर रहमान के सब्र का बांध टूटने लगा। बड़ी मुश्किल से उसने स्वयं

को संभाला तथा वहां से हट गया। तबसे उसकी प्रतिशोध की ज्वाला और भी भयंकर रूप धारण कर चुकी थी। उसे महल में रहते हुए बहुत दिन बीत चुके थे, परंतु वह अपने लक्ष्य को न पा सका था। उसे अब यह चिंता सताने लगी कि अगर वह अपने लक्ष्य में सफल नहीं हुआ तो क्या होगा? शहजादी की खिदमत में रहते-रहते रहमान इतना तो जान चुका था कि अलादीन चिराग की हिफाजत अपनी जान से भी ज्यादा करता है। वह चिराग ऐसी जगह पर रखता है, जहां परिंदा भी पर न मार सके, परंतु कहां? यह रहमान आज तक नहीं जान पाया था। कारण यह कि अलादीन ने शहजादी को भी नहीं बता रखा था कि वह चिराग कहां रखता है। जादूगर वाले मामले के बाद तो वह इतना चौकन्ना हो गया था कि अपनी बीवी पर भी उसे विश्वास नहीं था। चिराग कहां है? किस स्थिति में है? यह अलादीन के अलावा कोई दूसरा नहीं जानता था।

यह बात रहमान को सता रही थी। वह दिन-रात यही सोचता कि चिराग कहां है? उसे कैसे हासिल करूं। चिराग प्राप्त करने की वह नई-नई तरकीबें निकालता, परंतु सब व्यर्थ। उसे आज तक चिराग की गंध तक नहीं मिली थी। ऐसे ही विचारों में गुम वह अपने बिस्तर पर पड़ा था।

तभी किसी ने द्वार खोलकर कमरे में प्रवेश किया। रहमान चौंक पड़ा। चौंककर उसने द्वार की तरफ देखा, वहां सलीमा खड़ी थी। सलीमा अलादीन के महल की इंचार्ज थी। रहमान ने अपने सिर का पल्लू दुरुस्त किया और पलंग से उठते हुए बोला—"आपने यहां आने की क्यों तकलीफ की? मुझे ही बुलवा लिया होता।"

सलीमा एक गदराए बदन की युवती थी। उसके जिस्म का एक-एक अंग बेजोड़ था। गोरा रंग ऐसा, जैसे माखन में चुटकी-भर सिंदूर मिला दिया हो। बड़ी-बड़ी गहरी आंखे, गुलाब की मदमस्त पंखुड़ियों से सुर्ख होंठ, चांदी-सी दंत पक्तियां। कुल मिलाकर सलीमा लाजवाब थी। यौवन से मालामाल। उसके जिस्म से मानो मधुरस टपकता रहता था।

खाली पड़ी एक कुर्सी पर बैठती हुई सलीमा बोली—"नींद नहीं आ रही थी। सोचा कि तुम्हारे पास हो आऊं, इसलिए चली आई। कुछ बातें करेंगे तो रात आराम से कट जाएगी।"

आगे बढ़कर रहमान ने लैम्प की लौ बढ़ा दी। कमरे में दोगुना प्रकाश हो गया। मुस्कराकर रहमान ने सलीमा की तरफ देखा और देखता ही रह गया।

लैंप के प्रकाश में सलीमा का जिस्म सोने की तरह चमक रहा था। उसके गदराए जिस्म की खुशबू रहमान के सीने में उतरती चली गई। वह अपलक सलीमा को देख रहा था। एक पल के लिए वह भूल गया कि वह यहां किस वेश में है। उसे सिर्फ अपना पुरुष होना ही याद था। उसके मुख से स्वतः ही निकल गया—"त...तुम कितनी सुंदर हो सलीमा?"

"हूं।" सलीमा आह-सी भरकर बोली—"जानती हूं, परंतु ये जवानी, ये यौवन सब व्यर्थ है। यहां कौन है इस यौवन की कद्र करने वाला?"

रहमान ने उसकी बात सुनी या नहीं, मालूम नहीं, परंतु वह अभी तक सलीमा के जिस्म को अपलक निहार रहा था और इधर सलीमा कह रही थी—"यही तो उम्र होती है बिजली, जब हर युवती अपने सपनों का संसार सजाती है। किसी सशक्त पुरुष की बाहों में कैद होकर अपने यौवन का सुख भोगती है, परंतु हम दासियों का तो कोई संसार नहीं होता। हमारा यौवन यूं ही हमें सदा चुभता रहता है।"

रहमान की नजरें सलीमा के उभारों पर टिकी थीं। सलीमा के उभार उसे पहाड़ की चोटियों से ऊंचे लगे। उसकी सांसें अनियंत्रित होने लगीं। यौवन की दहक से सलीमा के उभार फूल-पिचक रहे थे। अब रहमान से रहा नहीं गया। उसने लपककर सलीमा को अपनी भुजाओं में भर लिया। सलीमा पर भी मस्ती सवार हो चुकी थी। उसने भी रहमान के गले में बाहें डालकर उसे अपने सीने से चिपका लिया। अब सलीमा की सांसें धौकनी की भांति चलने लगीं। रहमान को उसने भींचकर अपने सीने से लगा रखा था। रहमान के बदन में बिजली दौड़ने लगी। कंपकंपाते स्वर में सलीमा कह उठी—"काश कि तुम मर्द होती बिजली।"

अचानक रहमान के दिमाग को एक झटका-सा लगा। उसकी आंखों में चमक आ गई, न जाने उसे क्या खुराफात सूझी और बोला—"अगर खुदा के करम से मैं मर्द बन जाऊं और तुम्हें अपनी पत्नी बना लूं तो क्या तुम वही करोगी, जो मैं कहूंगा?"

सलीमा रहमान के शब्दों का अर्थ समझ न सकी, परंतु वह समझे या न समझे। उसे तो सिर्फ एक मर्द की तलाश थी, अतः वह बिना सोचे-समझे बोली—"अगर ऐसा हो जाए तो मैं अपनी जान भी तुम पर कुर्बान कर दूंगी बिजली।"

सलीमा

रहमान ने सलीमा को अपने विषय में सब कुछ बता दिया कि वह असल में कौन है तथा यहां किस उद्देश्य से हिजड़ा बनकर रह रहा है? यह सब जानकर सलीमा आश्चर्यचकित रह गई, परंतु वह कुछ कह न सकी, क्योंकि रहमान ने उसे वह दौलत दे दी थी, जिसके लिए सलीमा तड़प रही थी। सलीमा की वासना की आग बुझाकर रहमान ने उसे अपने वश में कर लिया था। रहमान ने सलीमा पर अपना शिकंजा कस लिया। उसने सलीमा को सब्जबाग दिखाए—"यदि तुम मेरा साथ दोगी सलीमा तो मैं अलादीन को पराजित कर यहां का बादशाह बन जाऊंगा और तुमसे शादी कर लूंगा। फिर तुम अफगानिस्तान की महारानी कहलाई जाओगी।"

रहमान की बातों का असर सलीमा पर जादू की तरह हुआ। अफगानिस्तान की महारानी बनने की बात उसने स्वप्न में भी नहीं सोची थी। दासी से महारानी बनने की बात ने उसका दिमाग जाम कर दिया। रहमान ने उसे लोभ ही ऐसा दिया था कि वह न नहीं कर सकी। रहमान ने उसके बदन की प्यास बुझाई थी। उसे अद्वितीय सुख दिया था। जिसके लिए वह रातों को तड़पा करती थी। रहमान से वह जुदा नहीं होना चाहती थी। रहमान का वादा उसे सच्चा लगा। वह रहमान का साथ देने के लिए तैयार हो गई। रहमान को अपनी योजना सफल होती दिखाई दी, चूंकि उसकी योजना में सलीमा की अहम भूमिका थी, अतः रहमान ने सलीमा का विशेष ख्याल रखना शुरू कर दिया।

अब सलीमा रात को रहमान के कमरे में ही रहती। दूसरी दासियां यही समझती थीं कि बिजली से सलीमा की बहुत गाढ़ी छनने लगी है। दोनों का लगाव हो गया है, चूंकि यह बात किसी को भी मालूम नहीं थी कि रहमान उर्फ बिजली असल में हिजड़ा नहीं, बल्कि बांका जवां मर्द है, अतः किसी के मन में कोई संदेह उत्पन्न नहीं हुआ।

बिजली तथा सलीमा एक कमरे में बंद रहते तथा एक-दूसरे के जिस्मों की प्यास बुझाते। सलीमा रहमान से अत्यंत प्रसन्न थी और रहमान सलीमा से। रहमान सलीमा का उपयोग अलादीन के चंगुल से जादुई चिराग निकालने के

लिए करना चाहता था। सलीमा की पहुंच अलादीन के कमरे तक थी, अतः रहमान सलीमा के जरिए चिराग हासिल करना चाहता था। सलीमा उसके वश में थी। वह जो भी काम कहे। सलीमा न नहीं कह सकती थी, क्योंकि सलीमा को अपना स्वार्थ भो नजर आने लगा था। वह स्वार्थ था, अफगानिस्तान की महारानी बनना। सलीमा की नजरों में दिन-रात महारानी बनने का सपना सजने लगा। महारानी बनने की लालसा ने उसे पागल बना दिया था। वह भूल चुकी थी कि वह अपने मालिक के साथ दगा करने जा रही है अब उसे मालिक का नहीं, रहमान का ख्याल रहता था।

एक रात रहमान ने सलीमा से कहा—"अलादीन से चिराग हासिल करने की एक तरकीब मेरे दिमाग में आई है। अगर तुम मेरा साथ दो तो हम अलादीन से चिराग हासिल कर सकते हैं।"

"मैं तो तुम्हारी हो ही चुकी हूं प्रियतम।" सलीमा प्यार से बोली।

"जो तुम कहोगे, मैं करने के लिए तैयार हूं।"

रहमान खुश हुआ, उसने कहना शुरू किया।

"हर रात को अलादीन दूध पीकर सोता है और वह दूध उसके पलंग के सिरहाने रखा जाता है। अगर तुम उसमें बेहोशी की दवा मिला दो तो हमारा काम बन जाएगा।"

"वह कैसे?"

"सुनो, कल रात को तुम उसके पीने वाले दूध में चुपके से बेहोशी की दवा मिला देना। सोने से पहले अलादीन दूध अवश्य पीएगा और पीकर सो जाएगा। उसके सोने के दो-तीन घंटे बाद तुम चुपके से उसके कमरे में जाओगी और उसके तकिए के नीचे से चाभियों का गुच्छा निकाल लोगी। उसके बाद उसके सिरहाने रखी अलमारी से चिराग निकालने के बाद तुम बेहोश अलादीन के हाथ में से जादुई अंगूठी भी निकाल लेना। बस, इतना-सा काम होने के बाद हमारी योजना सफल हो जाएगी। चिराग के जिन्न के बल पर मैं अलादीन को पराजित करके अफगानिस्तानन का बादशाह बन जाऊंगा और तुम अफगानिस्तान की महारानी।"

सलीमा की आंखें चमकने लगीं। महारानी बनने की लालसा ने उसमें जोश भर दिया था। वह बोली—"काम तो बहुत खतरनाक है, परंतु मैं जरूर करूंगी। अपना जीवन सुधारने के लिए इंसान क्या नहीं कर सकता?"

रहमान ने सलीमा को अपने सीने से लगा लिया और बोला—"अब वह

दिन दूर नहीं सलीमा, जब हम दोनों अफगानिस्तान पर राज करेंगे। लोग हमें बादशाह कहकर पुकारेंगे और तुम्हें महारानी। हमारे बच्चे शहजादे कहलाए जाएंगे। उसके बाद हमारी जिंदगी में कोई गम नहीं होगा। चारों तरफ खुशियां ही खुशियां होंगी।"

अगले दिन शाम को रहमान अपने बिस्तर पर लेटा अपनी योजना के विषय में सोच रहा था। तभी एक बांदी आई और बोली—"शहजादी साहिबा ने आपको तलब़ किया है। कहा है नृत्य करके हमारा मनोरंजन करें।"

बांदी चली गई। रहमान ने श्रृंगार करना आरंभ किया। पोशाक बदली, माथे पर झूमर सजाया। हाथों में खनकदार कंगन तथा पांवों में घुंघरू बांधे। अभी वह श्रृंगार कर ही रहा था कि सलीमा कमरे में आई। रहमान का यह रूप देखकर इठलाती हुई बोली—"हाय, मेरी जान, तुम तो अनारकली जैसी लग रही हो।"

अनारकली का खिताब सुनकर रहमान ने लजाने का शानदार अभिनय किया। नाक पर उंगली रखकर कहा—"हाय, शहजादी सलीमा आज तो अपनी अनारकली को गले से लगा लो।"

सलीमा ने झपटकर रहमान के गले में बांहें डाल दीं और बोली—"आज ही मौका है अपना काम करने का। मैंने अलादीन के दूध में बेहोशी की दवा मिला दी है।"

"क्या?" रहमान खुशी से उछल पड़ा—"तुम सच कह रही हो?"

"हां मेरे सरताज।" सलीमा बोली—"आज मैं किसी भी प्रकार तुम्हें चिराग और अंगूठी ला दूंगी।"

आगे बढ़कर रहमान ने सलीमा के गुलाब की पंखुड़ियों जैसे नाज़ुक होंठों को चूम लिया। सलीमा एक-दम तड़पकर उससे दूर हट गई, क्योंकि कोई उन्हीं की ओर आ रहा था।

एक कमरे में नृत्य की महफिल सजी थी। सभी नौकर, दास-दासियां नृत्य का आनंद ले रहे थे। बिजली ठुमक-ठुमककर नृत्य कर रही थी, चूंकि रहमान उर्फ बिजली आज अत्यंत प्रसन्न थी, अतः उसने बड़ा अच्छा नृत्य पेश किया।

शहजादी उसके नृत्य से इतनी प्रभावित हुई कि उसने अपने गले से मोतियों का हार उतारकर बिजली को इनामस्वरूप दे दिया। हार लेकर

बिजली ने माथे से लगाया तथा सिर नवाकर बोली—"आपका सुहाग बना रहे बीवीजी, दूधो नहाओ, पूतो फलो।"

नृत्य का आयोजन जिस कमरे में हो रहा था, वहां पर सभी नौकर-नौकरानियां तथा दास-दासियां जमा थे और सभी नृत्य का भरपूर आनंद ले रहे थे। अलादीन अपने कमरे में बिस्तर पर पड़ा था। एक नींद वह ले चुका था और अभी तक सो रहा था। अचानक तेज प्यास लग जाने के कारण उसकी नींद उचट गई। उसने उठकर इधर-उधर नजरें दौड़ाईं। सिरहाने रखा दूध का गिलास उसे नजर आया। उसने दूध का गिलास उठाया और होंठों से लगाकर गटागट सारा दूध पी गया। दूध पीते ही दूध में मिली बेहोशी की दवा ने तुरंत असर दिखाया। अलादीन को चक्कर आया और वह पुनः बिस्तर पर लेट गया। धीरे-धीरे उसका दिमाग अंधकार में डूबता चला गया।

सलीमा चोरी से छुपकर सारा दृश्य देख रही थी। अलादीन को दूध पीकर लेटते देख वह संतुष्ट हो गई। यह उसका सौभाग्य था कि शहजादी नूरमहल अपने बेटे अशरफ के साथ नृत्य देखने में व्यस्त थीं। वर्ना शायद वह अपने काम को अंजाम न दे पाती। जब उसे महसूस हुआ कि अलादीन पर दवा का असर हो चुका है तो वह चुपके से कमरे में दाखिल हुई। इस समय उसका दिल जोर-जोर से धड़क रहा था। माथे पर पसीने की बूंदें चुहचुहा आई थीं। निःशब्द उसने दरवाजा पार किया और कमरे में आ गई। कंपकंपाती टांगों से अलादीन के सिरहाने पहुंची। हालांकि उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो रही थी। उसे भय सता रहा था कि अगर अलादीन बेहोश न हुआ होगा तो वह मुसीबत में फंस जाएगी। उस पर घबराहट हावी होने लगी। तभी उसके दिमाग में कौंध गया कि अगर इस समय कोई किसी काम से इधर आ निकले तो क्या होगा? उसकी चोरी पकड़ी जाएगी। फिर शायद अलादीन उसकी गर्दन धड़ से अलग कर देगा। यह सोचकर उसके दिल पर घबराहट हावी हो गई। टांगें बुरी तरह कांपने लगीं। उसका जी चाहा कि वह तुरंत यहां से भाग जाए, परंतु तभी रहमान के शब्द उसके कानों में गूंज उठे।

'उसके बाद मैं अफगानिस्तान का बादशाह कहलाऊंगा और तुम महारानी।'

'महारानी...महारानी...महारानी...।'

उपरोक्त शब्द हथौड़े की तरह सलीमा के दिमाग में टकराने लगे। इस सोच

ने सलीमा के जिस्म को नए जोश से भर दिया। भय दूर हटने लगा। उसने स्वयं को संभाला। अलादीन का तकिया हौले से हटाकर देखा। चाभियों का गुच्छा वहीं था। झपटने के अंदाज से सलीमा ने वह गुच्छा उठा लिया और तुरंत अलमारी के पास पहुंची। इधर-उधर देखा और एक चाबी ताले में डाली। सौभाग्य से ताला खुल गया। ताला खोलने के बाद उसने आराम से अलमारी के दरवाजों को खोला। उसने देखा अलमारी के अंदर एक खाने में रखा चिराग जगमगा रहा था। सलीमा का चेहरा दमक उठा। झपटकर उसने चिराग उठाया और अपने आंचल में छुपा लिया। अलमारी पुनः बंद कर दी। इतना काम करते-करते सलीमा ने महसूस किया कि उसकी सांसें धौकनी की भांति चल रही हैं। उसने फुर्ती के साथ बेहोश अलादीन के हाथ से जादुई अंगूठी निकाली और हवा के झौंके की भांति कमरे से बाहर निकल गई। उसका काम पूरा हो चुका था, लेकिन चेहरा सफेद पड़ा हुआ था। अपने कमरे में पहुंचकर वह 'धम्म' से अपने बिस्तर पर गिर पड़ी। हाथ अभी तक कांप रहे थे उसके, परंतु दिल खुशी से उछल रहा था, उधर बिजली का नृत्य जोरों पर था।

काफी रात बीत जाने पर बिजली का नृत्य समाप्त हुआ। शहजादी उठकर अपने कमरे मे आ गई। उसने देखा अलादीन गहरी नींद में है। अशरफ को उसने पालने में लिटाया और अपना लिबास बदलकर अलादीन की बगल में लेट गई।

रहमान बहुत थकावट महसूस कर रहा था। नृत्य करते-करते उसके जिस्म का पोर-पोर दर्द करने लगा था। थके-थके कदमों से वह अपने कमरे में पहुंचा और सांसें दुरुस्त करने लगा। फिर उसने अपनी भारी पेंशाबाज उतारी। उसी समय कमरे में सलीमा प्रविष्ट हुई। उसका चेहरा खुशी से दमक रहा था। आते ही उसने रहमान के गले में बांहें डाल दीं। रहमान ने भी उसे अपने अंक में भींच लिया तथा उत्सुकतावश पूछा—"क्या रहा? चिराग हाथ लगा या नहीं?"

"मैं कामयाब होकर लौटी हूं मेरे सरताज।" रहमान के गालों पर एक चुंबन अंकित करते हुए सलीमा बोली—"चिराग और अंगूठी इस समय मेरे पास हैं।"

"क...क्या? सचमुच!" रहमान खुशी से उछल पड़ा और उतावलेपन से बोला—"कहां हैं? मुझे दिखाओ।"



सलीमा ने चिराग तथा अंगूठी निकालकर रहमान के सामने रख दीं। रहमान की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने सलीमा को लपककर सीने से लगाया और उसके गालों पर चुंबनों की झड़ी लगा दी। सलीमा हंसने लगी। फिर अलग हटकर गंभीरता के साथ बोली—"मुझे डर लग रहा है कि कहीं हम पकड़े न जाएं। अगर हम पकड़े गए तो हमारा बचना मुश्किल होगा।"

"अब तुम फिक्र मत करो।" रहमान फुर्ती के साथ पोशाक बदलता हुआ बोला—"जब तक चिराग हमारे पास है। हमारा यहां कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता।"

पोशाक बदलकर रहमान ने चिराग एक थैले में डाला तथा अंगूठी पहनकर सलीमा को साथ ले महल से बाहर आ गया।

पहरेदार ने पूछा—"कौन है?"

"मैं हूं मुए।" रहमान बिजली के स्वर में बोला—"जरा बाहर हवा खाने जा रही हूं।"

हंसते हुए पहरेदार ने रास्ता छोड़ दिया। सलीमा को लेकर रहमान बाहर आया और कुछ दूर चलकर सलीमा से बोला—"अब तुम कुछ दिनों के लिए अपने गांव चली जाओ, क्योंकि यहां पर बहुत उथल-पुथल होने वाली है। जब सब काम सही हो जाएगा तो मैं तुम्हें लेने आ जाऊंगा।"

"तुम कहते हो तो ठीक है।" सलीमा उदास मन से बोली—"परंतु तुम्हारे बिना मेरा दिल कैसे लगेगा?"

उसके होंठों को चूमकर रहमान बोला—"कुछ दिनों की ही तो बात है प्रिय, फिर तो तुम्हें यहीं अफगानिस्तान की महारानी बनकर रहना है। पंद्रह-बीस दिनों में सब ठीक हो जाएगा।"

फिर बोला—"चलो, मैं तुम्हारे गांव तक तुम्हारे साथ चलता हूं।"

यह कहकर रहमान ने जादुई अंगूठी घिसी। एक धमाके के साथ तत्काल अंगूठी का जिन्न प्रकट हुआ और बोला—"क्या हुक्म है मेरे आका? आपका गुलाम आपकी सेवा में हाजिर है।" सलीमा जिन्न का भयानक चेहरा देखकर घबरा गई। वह डरकर रहमान से लिपट गई।

रहमान ने जिन्न को आदेश दिया—"हमें तुरंत मिस्र देश के अलहलर नामक गांव में ले चलो।"

जिन्न ने कहा—"जो हुक्म मेरे आका।" इतना कहकर जिन्न दोनों को लेकर मिस्र देश के अलहलर नामक गांव की तरफ उड़ चला।

सलीमा मिस्र की रहने वाली थी। उसका जीवन गरीबी में व्यतीत हुआ था। अत्यधिक गरीब होने के कारण उसके पिता ने उसे एक व्यापारी के हाथों बेच दिया था, फिर सलीमा किसी तरह शहजादी नूरमहल की सेवा में आ गई और तब से ही शहजादी नूरमहल की सेवा कर रही थी। शहजादी नूरमहल जब विदा होकर अलादीन के घर आई तो वह शहजादी के साथ वहीं आ गई थी।

थोड़ी ही देर में जिन्न ने दोनों को उनकी मंजिल पर पहुंचा दिया। सामने ही सलीमा का घर था।

"अब तुम अपने घर जाओ।" रहमान सलीमा से बोला—"पंद्रह-बीस दिनों बाद मैं तुम्हें लेने आ जाऊंगा!"

सलीमा की आंखों में आंसू आ गए। वह भर्राए गले से बोली—"मुझे भूल न जाना मेरे सरताज।"

सलीमा भारी कदमों से अपने घर की ओर चल दी। रहमान ने एक पल सोचा, फिर जाती सलीमा को पुकारा। सुनकर सलीमा वापस आई। रहमान ने अपने जिस्म के सभी जवाहरात उतारकर सलीमा को दिए और बोला—"ये सब अपने पास रखो, अब मुझे इनकी कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि अब तो मुझे तलवार से खेलना है।"

सलीमा की आंखें पुनः भर आई। वह बोली—"तुम जल्द-से-जल्द कामयाब होकर लौटो मेरे सरताज, मेरी दुआएं कदम-कदम पर तुम्हारे साथ रहेंगी, खुदा हाफिज।"

"खुदा हाफिज।" रहमान ने भी धीरे से कहा।

सलीमा फिर अपने घर की ओर चल दी। रहमान उसे जाता देखता रहा।

फिर अंगूठी के जिन्न से बोला—"मुझे तुरंत पाताल-लोक ले चलो।"

आदेश सुनकर जिन्न ने जमीन पर पैर मारा। एक धमाके के साथ जमीन फट गई। जिन्न रहमान सहित उसमें समा गया।

अलादीन जादूगर की कैद में

अलादीन तथा शहजादी जादूगर सेनसन द्वारा बंदी बनाए जा चुके थे। दोनों पाताल-लोक में एक बंदी गृह में कैद थे। सेनसन उन्हे रोज मारता-पीटता और खाना-पीना भी नहीं देता। उन्हें बड़ी भयानक कैद में रखा गया था। एक दिन सेनसन दोनों को पकड़कर महाजादूगर बैसूफ के सामने ले आया। बैसूफ एक तख्त पर बैठा शान से हुक्के के कश लगा रहा था।

दोनो को देखकर बोला—"तो यह है अलादीन और यह इसकी बेगम।"

"जी हां गुरुदेव।" सिर झुकाकर सेनसन बोला।

"हुम्म।" बैसूफ ने हुंकारा लिया तथा अलादीन से मुखातिब होकर बोला—"हां तो अलादीन साहब। आप यहां से छूटना चाहेंगे या सारी उम्र यहीं कैदखाने में सड़ना चाहेंगे?"

"हमें छोड़ दीजिए।" शहजादी बीच में बोली—"हम बेकसूर है, हमने किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा।"

"ये झूठ बोल रही है गुरुदेव।" सेनसन चीखा—"इसी ने मुझे विष पिलाकर मारा था।"

"तुम चुप रहो सेनसन।" बैसूफ हाथ उठाकर बोला—"अलादीन साहब अगर आप हमें खुदा का अवतार मान लें तो हम तुम्हें छोड़ सकते हैं।"

अलादीन ने जमीन पर थूकते हुए कहा—"तुझ जैसे जलील पापी को मैं खुदा का अवतार मान लूं? जरा अपनी शक्ल तो देख।"

"अदब से बात कर अलादीन।" बैसूफ का लहजा कठोर हो गया—"तू इस समय दुनिया की सबसे महान हस्ती के सामने खड़ा है।"

"मैं सिर्फ इतना जानता हूं कि मैं दुनिया की सबसे नीच हस्ती के सामने खड़ा हूं।" अलादीन ने भी वैसा ही स्वर दिखाया।

"शहजादी।" बैसूफ स्वयं को शांत रखता हुआ बोला—"तुम्हारा पति तो पागल है। तुम मुझे समझदार लगती हो। मैं तुम्हें छोड़ दूंगा, बशर्ते कि तुम अलादीन को उल्लू का पट्ठा और सेनसन को अपना पति कह दो।"

"चुप बदमाश।" शहजादी गरजकर बोली—"उल्लू का पट्ठा तो तू है और ये सेनसन सूअर का बच्चा है।"

"ओह, तो तुम भी उन तमाम व्यक्तियों जैसे निकले, जिन्हें मैं पत्थर की मूर्ति बना चुका हूं।" बैसूफ दांत पीसकर बोला—"अब मैं तुम दोनों को भी उन्हीं में शामिल करने जा रहा हूं।"

सेनसन प्रसन्न हुआ। बैसूफ ने आंखे बंद करके एक मंत्र फूंका। अलादीन तत्काल एक पत्थर की मूर्ति में तब्दील हो गया।

"मेरे सरताज।" शहजादी चीखती हुई मूर्ति से लिपट गई।

बैसूफ और सेनसन ने जोरदार ठहाका लगाया। फिर बैसूफ ने मंत्र फूंककर शहजादी को भी मूर्ति में बदल दिया और जोरदार ठहाका लगाता हुआ बोला—"हम मंहान हैं, दुनिया में कोई हमारा मुकाबला नहीं कर सकता।"

"आप सचमुच महान हैं गुरुदेव।" सेनसन बोला—"खुदा के अवतार हैं आप। आपका कोई मुकाबला नहीं कर सकता।"

"अरे! रेहाना कहां गई?" अचानक बैसूफ ने इधर-उधर देखा। तभी एक सुंदर युवती एक हाथ में गिलास तथा एक हाथ में सुराही लिए बैसूफ के सामने आई।

"आज हम बहुत प्रसन्न हैं।" बैसूफ बोला—"आज हम खूब शराब पीएंगे।"

उस युवती ने जाम बनाकर सेनसन और बैसूफ की तरफ बढ़ाए। बैसूफ ने सेनसन के गिलास से गिलास टकराया और बोला—"आज एक काम, बल्कि बहुत बडा काम तुम्हारी वजह से पूरा हुआ है बेटे।"

"कौन सा काम गुरुदेव?" शराब की चुस्की लेकर सेनसन ने पूछा।

"वह काम परीस्तान की देवसेना को अपने कब्जे में करना है बेटे।" बैसूफ बोला—"हमारे पाताल-लोक की देवसेना परीस्तान की देवसेना का मुकाबला कभी नहीं कर सकती थी, परंतु आज हम तुम्हारे कारण परीस्तान के भी मालिक बन गए हैं न तुम चिराग पाने की लालसा में अलादीन से टकराते और न ही शहजादी के सौंदर्य के दीवाने होते और शहजादी न तुम्हें विष देकर मारती और न ही हमें चिराग प्राप्त होता। अब तक जितने भी महाभारत हुए हैं, अपने जादू से हमें पहले ही पता था। अलादीन पत्थर की मूर्ति बना पड़ा है, अब सारे विश्व पर हमारा राज होगा।"

क़हकहा लगाकर बैसूफ ने शराब का एक और जाम लिया तथा सेनसन से बोला—"हम तुमसे अति प्रसन्न हैं। मांगो क्या मांगते हो, वह तुरंत मिलेगा।"



सेनसन ने ललचाई निगाहों से रेहाना को देखा। रेहाना के अद्वितीय सौंदर्य ने सेनसन को बेहद प्रभावित किया था, वह धीरे से बोला—"गुरुदेव, रेहाना से मेरी शादी करा दो, मैं रेहाना के साथ अपने गांव में रहना चाहता हूं।"

बैसूफ जोर से हंसा और बोला—"अवश्य-अवश्य, हम तुम्हारी शादी रेहाना से आज ही करा देंगे।"

यह कहकर बैसूफ ने एक मंत्र फूंका तथा रेहाना का हाथ सेनसन के हाथ में देता हुआ बोला—"रेहाना आज से तुम्हारी हो गई, जाओ और ऐश करो।"

सेनसन रेहाना को पाकर अति प्रसन्न हुआ।

ईश्वर की अनुपम लीला

शाम होने वाली थी। सूर्य पश्चिम दिशा में डूबने की तैयारी में था। आकाश में लालिमा छाई हुई थी। सलीमा थके-थके कदमों के साथ एक अनजान मंजिल की तरफ बढ़ी जा रही थी। उसके चेहरे पर वेदना एवं पश्चाताप के भाव थे। उसका शरीर दुर्बल हो गया था। कारण था रहमान का उसके साथ दगाबाजी करना।

सलीमा ने अपनी जान पर खेलकर रहमान के लिए जादुई चिराग चुराया था। रहमान उसे अपनी पत्नी तथा अफगानिस्तान की महारानी बनाने का सपना दिखाकर उसके घर छोड़ गया था, परंतु एक अर्सा बीत जाने के उपरांत भी वह नहीं आया। सलीमा को हर समय उसकी प्रतीक्षा रहती थी, परंतु जब रहमान नहीं आया तो उसका दिल टूट गया। वह समझ गई कि रहमान ने उसे धोखा दिया है। उसे पछतावा होने लगा कि उसने क्यों रहमान के बहकावे में आकर अपने मालिक से धोखा किया?

परंतु होनी तो हो चुकी थी। अब क्या किया जा सकता था? सलीमा का दिल टूट चुका था। वह अब जीना नहीं चाहती थी और मौत की तलाश में एक अनजान मंजिल की तरफ बढ़ी चली जा रही थी। वह जंगल में पहुंच चुकी थी और नहीं जानती थी कि उसे कहा जाना है? बस चली जा रही थी।

अचानक वह चौंककर रुक गई, उसने सामने एक खूंखार शेर खड़ा था। सलीमा की पलकें भीग आई और वह हाथ जोड़कर बोली—"दूर क्यों खडे हो? आओ मुझे खा लो, ताकि मेरे गम दूर हो जाएं।"

शेर आगे बढा और उसकी आशा के विपरीत उसका दामन दांतों से पकड़कर उसे एक तरफ खींचकर ले चलने लगा। आश्चर्यचकित सलीमा उसके साथ खिंची चली जा रही थी। वह शेर की इस हरकत का मतलब न समझ सकी थी। शेर उसी तरह खीचता हुआ उसे एक गुफा के पास लेकर पहुंचा। सलीमा यह देखकर हैरान रह गई कि शहजादी का बेटा अशरफ उस गुफा में लेटा अपना अंगूठा चूस रहा था। सलीमा की रुलाई फूट पड़ी। उसने दौड़कर अशरफ को अपनी गोद में उठा लिया और फफक-फफककर रोने लगी।



"मुझे माफ कर देना मेरे लाल, मैं ही वह पापिन हूं। जिसने तुझे अनाथ किया है। मुझे सजा दे मेरे लाल।"

अशरफ सलीमा का दूध पीने लगा। सलीमा की सूखी छातियों से अचानक दूध की फुहार फूट निकली। सलीमा रोए जा रही थी। अशरफ सलीमा का दूध पी रहा था। शेर पास ही खड़ा उनकी ममता व स्नेह देख रहा था।

उसके बाद सलीमा वहीं पर एक कुटिया बनाकर रहने लगी। अशरफ को वह अपना बेटा समझकर पालने लगी। जीने का सहारा मिल चुका था उसे। शेर-शेरनी वहां उनकी रखवाली किया करते थे। इसी प्रकार रहते-रहते उन्हें सत्रह वर्ष बीत गए।

जंगल की जलवायु में पलकर अशरफ जवान हुआ। वह अलादीन से भी ज्यादा सुंदर था। जंगली हाथियों से खेलना उसका रोज का काम था। शेर उसके लिए घोड़े थे। वह शेरों के ऊपर सवारी करके सारा जंगल घूमता था। उसके शरीर में इतनी ताकत थी कि वह बड़े-से-बड़े पेड़ को जड़ से उखाड़कर फेंक देता था। अपनी मां की बहुत सेवा करता था वह। घर का सारा काम भी स्वयं करता था। अक्सर वह अपनी मां (सलीमा) से पूछा करता था कि मां उसका पिता कौन है? परंतु सलीमा हमेशा टाल जाती थी, परंतु एक दिन अशरफ ने जिद पकड़ ली। वह बोला—"आज तुझे बताना होगा मां कि मेरे पिता कौन हैं। वे जिन्दे भी हैं या मर चुके हैं। अगर तुमने मुझे मेरे पिता के विषय में नहीं बताया तो मैं यहां से चला जाऊंगा।"

सलीमा हमेशा अशरफ को टाल देती थी, परंतु आज जब उसने देखा कि बताए बिना कोई चारा नहीं तो उसने सब कुछ अशरफ को बता दिया। उसने बताया कि उसके पिता का नाम अलादीन है। वह अफगानिस्तान के बादशाह के दामाद थे। तुम अफगानिस्तान के शहंशाह की बेटी शहजादी नूरमहल के बेटे हो। वजीर के बेटे रहमान ने धोखे से तुम्हारे माता-पिता को मरवा डाला था। तब से मैं ही तुम्हारी परवरिश कर रही हूं, ताकि तुम अपने माता-पिता की मौत का बदला ले सको।

यह सुनकर अशरफ को बहुत क्रोध आया और वह उसी समय जंगल की ओर चल पड़ा। उसके मुख से अजीब-अजीब किस्म की आवाजें निकल रहीं थीं। थोड़ी ही देर में जंगल के समस्त खूंखार जानवर उसके सामने इकट्ठे हो गए। अशरफ उनकी भाषा में उनसे बातें कर रहा था—"मेरे मित्रो, मैं तुम सबके साए में पलकर बड़ा हुआ हूं, इसलिए मुझे ये अधिकार है कि मैं तुम

सबसे अपने काम के लिए मदद मांगू। मैं अफगानिस्तान के होने वाले वादशाह अलादीन का पुत्र हूं। मेरे पिता को तथा मेरी माता को पिताजी के शत्रुओं ने धोखे से मार डाला था। मैं अपने सिंह चाचा का आभारी हूं। जिन्होंने मुझे नया जीवन दिया। आज मैं अपने माता-पिता की मौत का बदला लेना चाहता हूं और तुम सबसे मदद मांगता हूं।"

इतना सुनते ही सभी जानवर जोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे। अशरफ ने अपनी मां सलीमा को आवाज दी और बोला—"मां, मैं अफगानिस्तान की राजधानी पर हमला करने जा रहा हूं।"

इस हमले में अशरफ के पीछे-पीछे हजारों जानवरों की सेना चल रही थी। सबसे आगे वह मस्त हाथी था, जिस पर अशरफ सवार था, जो अफगानिस्तान की राजधानी की तरफ बढ़ रहा था।

अफगानिस्तान पर विजय

रहमान ने अगूठी के जिन्न की सहायता से अफगानिस्तान की पूरी सेना को हराकर अफगानिस्तान पर अपना अधिकार कर लिया था और अफगानिस्तान का बादशाह बन गया था। बादशाह बनते ही उसने अफगानिस्तान की प्रजा को परेशान करना शुरू कर दिया और नैतिक-अनैतिक सभी तरीको से अपना खजाना भरने लगा। इसके लिए उसने प्रजा को बुरी तरह सताना शुरू कर दिया।

उसके राज मे प्रजा बुरी तरह परेशान थी। प्रजा को भरपेट खाने को रोटी नहीं मिलती थी, तन ढकने के लिए कपड़ा नहीं मिलता था और रहने को एक छत भी मुहैया नहीं थी। अत्याचारों का आलम यह था कि आमदनी का 80 प्रतिशत भाग 'कर' के रूप में बादशाह वसूल लेता था।

अचानक एक दिन जगल के सभी जानवरों को साथ लेकर अशरफ ने अफगानिस्तान पर आक्रमण कर दिया। अशरफ की सेना में शामिल जंगली जानवरो ने रहमान की शाही सेना को चीरना-फाड़ना शुरू कर दिया और कुछ ही देर मे उसकी सेना तितर-बितर हो गई। कुछ सैनिक अपनी जान बचाने की खातिर भाग गए और जो थोड़े-बहुत बचे, उन्हें जंगली जानवरों ने अपना भोजन बना लिया।

दोपहर होते-होते अशरफ की सेना ने रहमान की सेना को तहस-नहस कर उसके महल को घेर लिया।

जब रहमान ने यह खबर सुनी कि जंगली जानवरों की फौज ने उसकी सारी सेना को खत्म कर डाला और अब जानवरों की उसी फौज ने महल को भी चारों ओर से घेर लिया है तो उसके होश उड़ गए। वह अंगूठी वाले करामाती जिन्न की मदद लेना भी भूल गया। मौत के भय ने उसके होशो-हवास उडा दिए।

अशरफ के निर्देश पर जंगली हाथियों ने टक्कर मार-मारकर महल का मुख्य द्वार तोड़ दिया। हिंसक जानवरों की भीड़ को देखकर महल के संतरी-पहरेदार अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर छुप गए।

मुख्य द्वार टूटते ही अशरफ तेजी से उस ओर दौड़ा, जिधर रहमान का

मंत्रणा कक्ष था। कुछ ही पलो में अशरफ खून सनी नंगी तलवार लिए रहमान के सामने था। तभी रहमान को जैसे होश आ गया और अपनी मौत को अपने सिर पर खड़ी देखकर उसने तेजी से करामाती अंगूठी फर्श पर रगड़ी। अंगूठी फर्श पर रगडते ही तुरंत अंगूठी का जिन्न प्रकट हो गया और बोला—"क्या हुक्म है मेरे आका?"

इससे पहले कि रहमान जिन्न को कोई आदेश दे पाता, अशरफ ने फुर्ती से अपनी तलवार चलाई और रहमान का वह हाथ, जिसमें उसने अंगूठी पहनी हुई थी, काट दिया।

हाथ कटते ही रहमान चीखने-चिल्लाने लगा और चीखता-चिल्लाता हुआ ही बेहोश हो गया। अगूठी का जिन्न चुपचाप सारा तमाशा देखता रहा। वह बीच में कुछ नहीं बोला।

अब अशरफ ने रहमान के कटे हुए हाथ से वह जादुई अंगूठी निकाली और जिन्न से बोला—"अब अंगूठी मेरे पास है। क्या अब तुम मेरा हुक्म मानोगे?"

जिन्न बोला—"यह अंगूठी जिसके पास होती है, मैं उसी का गुलाम होता हू। अब यह अंगूठी आपके पास है, अतः अब मैं आपका गुलाम हूं।"

अशरफ बोला—"ठीक है, अब तुम जाओ, जब मुझे तुम्हारी जरूरत पड़ेगी, तब मैं तुम्हें बुला लूंगा।"

यह सुनकर जिन्न गायब हो गया। जिन्न के गायब होते ही अशरफ ने रहमान के मुंह पर पानी के छींटे मारे तो उसे होश आ गया। होश में आते ही वह फिर से दर्द के मारे चीखने-चिल्लाने लगा। अशरफ को उस पर दया आ गई। अशरफ ने उसे कष्ट से मुक्त करने हेतु उसकी गर्दन धड से अलग कर दी। थोड़ी ही देर में रहमान का जिस्म ठंडा पड़ गया।

महाजादूगर बैसूफ का अंत

अफगानिस्तान को अपने कब्जे मे करने के बाद अशरफ ने अंगूठी रगड़कर अंगूठी के जिन्न को बुलाया। जिन्न प्रकट हो गया।

अशरफ ने पूछा—"मेरे माता-पिता कहां हैं?"

"पाताललोक में...महाजादूगर बैसूफ की कैद में...मेरे आका!"

"जादूगर बैसूफ की कैद मे...ओह!" अशरफ बोला—"किस हालत में हैं मेरे माता-पिता?"

जिन्न ने जवाब दिया—"महाजादूगर बैसूफ ने उन्हें पत्थर की मूर्ति बना दिया है और बैसूफ के अतिरिक्त सिर्फ चिराग का जिन्न ही उन्हें पुनः जिंदा इंसान बना सकता है।"

अशरफ ने पूछा—"क्या तुम महाजादूगर बैसूफ को मार सकते हो?"

"नहीं, उन्हें मारना मेरे वश में नहीं है। वे मुझसे ताकतवर हैं। हां, मैं तुम्हें उसके महल की छत पर उतार सकता हूं।"

अशरफ ने हुक्म दिया—"ठीक है। मुझे चुपचाप बैसूफ के महल की छत पर पहुंचा दो।"

अंगूठी के जिन्न ने अशरफ को चुपचाप बैसूफ के महल की छत पर पहुचाने के लिए जोर से अपना पैर जमीन पर मारा, तुरंत जमीन फट गई। ज़िन्न ने अशरफ को अपनी हथेली पर उठा लिया और चुपचाप ले जाकर बैसूफ की छत पर उतार दिया।

इस वक्त रात हो गई थी। अतः बैसूफ अपने शयनकक्ष में गहरी नींद ले रहा था। उसे पता भी नहीं चला और अशरफ सीढ़ियों के रास्ते उसके महल में उतर गया।

अशरफ ने महाजादूगर बैसूफ के शयनकक्ष का धीरे-से दरवाजा खटखटाया। महाजादूगर बैसूफ उस समय रंग-रलियों में डूबा हुआ था। उसने गुस्से से भुनभुनाते हुए दरवाजा खोला। दरवाजा खुलते ही अशरफ ने अपनी खून की प्यासी तलवार को बैसूफ के कंठ से सटा दिया—"दुष्ट जादूगर बैसूफ! अब तुम्हारी जिंदगी के दिन पूरे हो चुके हैं। अपने आखिरी वक्त में...अपने शैतान आका को याद कर ले।"

अशरफ के शब्द सुनकर महाजादूगर बैसूफ तिलमिला उठा और बोला—"तुम्हारी यह हिम्मत, नादान छोकरे कि तुम मुझसे भिड़ने चले आए और वह भी मेरे ही महल में। मैं तुम्हें अभी भस्म कर दूंगा।" यह कहकर महाजादूगर बैसूफ होंठों-ही-होंठो में कोई मत्र बुदबुदाने लगा।

जैसे-जैसे वह मंत्र बुदबुदाता जा रहा था, वैसे-वैसे ही अशरफ को गर्मी लगने लगी। जब अशरफ को गर्मी असह्य होने लगी तो अशरफ ने फुर्ती से अपनी तलवार निकाली और बैसूफ का सिर धड़ से अलग कर दिया।

बैसूफ का सिर दूर जा पड़ा, परंतु यह देखकर अशरफ को अत्यंत आश्चर्य हुआ कि दूर पड़ा हुआ बैसूफ का सिर अभी भी मंत्र बुदबुदा रहा है और गर्मी बदस्तूर बढ़ती जा रही है।

यह देखकर अशरफ ने उसके मुंह में अपनी टोपी को लड्डू-सा बनाकर ठूंस दिया। अब बैसूफ का मुंह मंत्र नहीं बुदबुदा सकता था। उससे संतुष्ट होकर अशरफ ने शयनकक्ष में चिराग ढूढ़ना आरंभ किया, परंतु चिराग नहीं मिला। हारकर अशरफ ने अंगूठी के जिन्न को बुलाया।

जिन्न ने प्रकट होकर कहा—"क्या हुक्म है मेरे आका?"

अशरफ बोला—"क्या तुम बता सकते हो कि चिराग कहां रखा है?"

जिन्न बोला—"चिराग को बैसूफ ने अदृश्य करके अपनी तिजोरी में बंद कर रखा है।"

अशरफ ने तिजोरी को टटोलना शुरू किया तो उसके हाथ किसी कठोर चीज से टकराए, परंतु उसे नजर कुछ नहीं आया। उसने उस कठोर चीज को टटोला तो महसूस किया कि वह चिराग ही था।

अशरफ ने वह अदृश्य चिराग उठा लिया और धरती पर रगड़ा, तुरंत चिराग का जिन्न हाजिर हो गया और बोला—"क्या हुक्म है मेरे आका?"

अशरफ ने कहा—"इस चिराग को दिखाई देने वाला बना दो।"

जिन्न ने कहा—"जो हुक्म मेरे आका।"

तुरंत चिराग दिखाई देने लगा।

फिर अशरफ ने कहा—"मुझे मेरे मां-बाप की मूर्तियों के पास ले चलो।"

चिराग के जिन्न ने उसे तुरंत उसके मां-बाप की मूर्तियों के पास पहुंचा दिया।

अशरफ ने जिन्न को अगला आदेश दिया—"मेरे मां-बाप सहित यहां मौजूद सभी मूर्तियों को, जो पहले आदमी थे, पुनः आदमी बना दो।"

जिन्न ने कहा—"जो हुक्म मेरे आका।"

जिन्न के इतना कहते ही वहा मौजूद सभी आदमी पुन जीवित मनुष्य बन गए।

अशरफ पुन जिन्न से बोला—"इन सभी को इनके घर पहुचा दो।"

जिन्न ने पुन कहा—"जो हुक्म मेरे आका।"

जिन्न के इतना कहते ही वहा मौजूद सभी व्यक्ति गायब हो गए।

अब अशरफ ने जिन्न से पूछा—"बैसूफ की मौत के बाद अब उसके इस महल का मालिक कौन होगा?"

"मेरे आका! अभी बैसूफ मरा नहीं, सिर्फ उसकी गर्दन ही धड से जुदा हुई है। सुबह के सूरज की पहली किरण महल मे पडते ही बैसूफ की गर्दन फिर धड से आ जुड़ेगी।"

"ओह! तो इस दुष्ट की मौत किस तरह हो सकती है?"

जिन्न ने जवाब दिया—"बैसूफ को जिदा जलाने से ही उसकी मौत सभव है। इसके अलावा इसे मारने का और कोई तरीका नहीं है।"

जिन्न का यह जवाब सुनकर अशरफ ने बैसूफ के धड और उसकी कटी हुई गर्दन को तुरत जलाने का निश्चय किया और जिन्न को आदेश दिया—"जल्द-से-जल्द दो चिताएं तैयार करो।"

जिन्न ने तुरत महल मे ही दो चिताए तैयार कर दी।

अशरफ ने अलग-अलग चिताओं पर सिर और धड को रखकर उनमे आग लगा दी। शीघ्र ही दोनो चिताएं जल गई और उन्हीं के साथ अत्याचारी महाजादूगर का भी अंत हो गया।

इसके बाद अशरफ ने जिन्न का आज्ञा दी—"जादूगर सेनसन को यहां लेकर आओ।"

जिन्न तुरत उड़ चला और शीघ्र ही जादूगर सेनसन को बांधकर ले आया।

अशरफ ने उसे भी बैसूफ की चिता पर जिदा जला डाला।

इसके बाद अशरफ ने जिन्न को आदेश दिया—"मुझे मेरे माता-पिता सहित अफगानिस्तान वापस ले चलो और इस महल को भस्म कर दो।"

जिन्न बोला—"जो हुक्म मेरे आका।"

जिन्न ने उन्हे अपनी हथेली पर उठा लिया और अफगानिस्तान की ओर उड़ चला। उसके उड़ते ही बैसूफ का महल धूं-धूं कर जलने लगा।

शीघ्र ही जिन्न ने उन्हें अफगानिस्तान के महल की छत पर उतार दिया।

जगली जानवरो की सेना अभी भी अफगानिस्तान के महल के इर्द-गिर्द फैली हुई थी। अशरफ ने अपनी जगली जानवरो की सेना को धन्यवाद देकर वापस जगल भेज दिया।

अफगानिस्तान की जनता ने अलादीन का हार्दिक स्वागत किया और उसे अपना बादशाह स्वीकार किया। अगले दिन अलादीन की ताजपोशी कर दी गई।

इस प्रकार अलादीन, शहजादी तथा उनके पुत्र अशरफ के कष्ट दूर हुए और वे आजन्म सुख-चैन से रहे। उनके राज मे उनकी प्रजा भी अत्यत सुखी व समृद्ध हुई और अफगानिस्तान फलने-फूलने लगा।